दैनिक

पुष्पांजली टुडे

नई सोच नई पहल

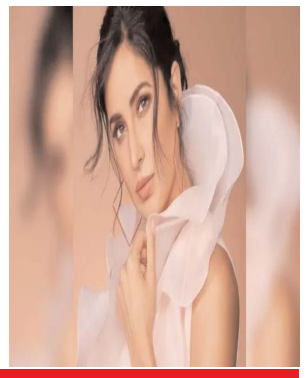

ग्वालियरः वर्षः 3 : अंकः 51 | ग्वालियर शनिवार 19 नवम्बर 2022 | पृष्ठः 8 मूल्यः 2 रुपए

न्यूज ट्रैक

बेटी श्रद्धा की बर्बर हत्या से टूट गए पिता, आरोपी आफताब के लिए मांगी फांसी से भी कठोर सजा

पिता विकास वॉकर बुरी तरह टूट गए हैं. उन्होंने हत्यारोपी आफताब पूनावाला के लिए फांसी से भी बड़ी सजा देने की मांग की है. ज़ी न्यूज के साथ इंटरव्यू में उन्होंने बताया कि इस रिश्ते को न रखने के लिए उन्होंने कई बार श्रद्धा को समझाया था लेकिन वह नहीं मानी.बेटी श्रद्धा की बर्बर हत्या से टूट गए पिता, **आरोपी आफताब के लिए मांगी फांसी से भी कठोर सजा**-अपने लिव इन पार्टनर आफताब पूनावाला के हाथों बर्बर हत्या का शिकार हुई श्रद्धा के पूरे बॉडी पार्ट्स अब भी दिल्ली पुलिस को मिल नहीं पाए हैं. वहीं शातिर अपराधी की तरह आरोपी आफताब पूनावाला अपने अलग-अलग बयानों के जरिए पुलिस को उलझाने की कोशिश कर रहा है. इसी बीच श्रद्धा के पिता ने आरोपी आफताब को हत्यारा बताते हुए उसे फांसी देने की मांग की है. ज़ी न्यूज से बात करते हुए पिता ने कहा कि उन्हें इस मामले में पूरा इंसाफ चाहिए. अगर इस हत्याकांड में फांसी से भी बड़ी कोई सजा बनती है तो आफताब को वह भी मिलनी चाहिए.

मेरी बेटी को मारता-पीटता था आफताब-श्रद्धा के पिता विकास वॉकर ने ज़ी न्यूज से कहा,आफताब पूनावाला मेरी बेटी को मारता-पीटता था, इस बारे में बेटी ने मुझे कभी डायरेक्टली कोई शिकायत नहीं की, लेकिन मेरी बीवी को इसके बारे में बताया था. वर्ष 2020 से पहले की बात है. एक दिन श्रद्धा के मुंह से खून निकल रहा था. बाद में पता चला कि उसे आफताब ने बुरी तरह पीटा था, जिससे उसके मुंह से खून आने लगा था.

हमने बेटी को बहुत समझाया लेकिन-पिता विकास वॉकर ने कहा, जब हमें इस रिश्ते के बारे में पता चला तो हमने बेटी श्रद्धा को काफी समझाया था. हमने कहा था कि हमें आफताब पसंद नहीं हैं क्योंकि वह दूसरे रिलीजन का है, लेकिन श्रद्धा ने हमारी बात नहीं मानी. उसने कहा कि वह अपने डिसीजन खुद ले सकती हैं. उसने यह भी कहा कि उसे आफताब के साथ लिव इन में रहना है.

वर्ष 2021 में आखिरी बार हुई थी बातचीत-पिता ने कहा कि उनकी श्रद्धा से आखिरी बात बातचीत वर्ष 2021 में हुई थी. तब उसने बताया था कि वह बेंगलुरु में है लेकिन बाद में पता चला कि वह मुंबई में ही रह रही थी. जब भी उससे फोन पर बात होती थी तो वह कहती थी कि सब ठीक है और वह आफताब के साथ रह रही है लेकिन वह अपनी लोकेशन कभी नहीं बताती थी. वे उसे घर वापस आने के लिए कहते थे लेकिन वह कोई जवाब नहीं देती थी. उसने कभी भी वापस आने की बात नहीं कही.

हत्यारे आफताब को मिले फांसी से भी बड़ी सजा-पिता विकास वॉकर ने कहा, उसके लापता होने की जानकारी मिलने पर मुंबई के मानिकपुरा में उसकी मिसिंग कंप्लेंट दी थी. उसी कंप्लेंट को मुंबई पुलिस ने दिल्ली पुलिस को फॉरवर्ड किया था. अब पता चल गया है कि उसे आफताब पूनावाला ने बेरहमी के साथ मार डाला है तो मुझे इस बारे में पूरा जस्टिस मिलना चाहिए. अगर इस हत्या में फांसी से भी बड़ी कोई सजा बनती है तो उसे वह भी दी जानी चाहिए.

दुनिया के सबसे लंबे पैर वाली महिला, जूते का साइज इतना कि सुनकर घूम जाएगा सिर

मानव शरीर में कई तरह के अंग हैं. हर अंग का अपना-अपना महत्व है. इसी कड़ी में एक अंग है पैर. पैरों की वजह से हम एक जगह से दूसरी जगह तक आवाजाही करते हैं, लेकिन जितना ध्यान हम शरीर के दूसरे अंगों पर देते हैं, उतना पैरों पर नहीं देते हैं. लेकिन क्या आपने कभी ये सोचा है कि पैर भी किसी का नाम पूरी दुनिया में रोशन करा सकते हैं. शायद आपको ये बातें अजीब लगे, लेकिन ये सच है. अमेरिका के टेक्सास में रहने वाली तान्या हर्बर्ट का नाम उनके पैरों की वजह से गिनीज बुक ऑफ वर्ल्ड रिकॉर्ड में दर्ज हुआ है.

18 नंबर के पहनती हैं जूते-रिपोर्ट की मानें तो हर्बर्ट की लंबाई करीब 6 फीट 9 इंच है. वह जीवित रहने वाली सबसे लंबी महिला तुर्कीये रुमेयसा गेल्गी से सिर्फ तीन इंच कम है. बता दें कि गेल्गी 7 फीट 0.7 इंच की ह

बेड से उठ नहीं सकती, आफताब की दरिंदगी का एक और घिनौना सच आया सामने

श्रद्धा का बेरहमी से किया गया कत्ल और फिर उसकी लाश के साथ की गई दरिंदगी का मामला सुर्खियों में बना हुआ है. श्रद्धा के हत्यारोपी उसके लिव इन पार्टनर आफताब की हकीकत ने सभी को हिला कर रख दिया है. इस घिनौने हत्याकांड में अब नया खुलासा हुआ है. श्रद्धा की एक और चैट सामने आई है जिसमें वह अपने किसी दोस्त से आफताब की दरिंदगी बयां की है.

श्रद्धा ने दोस्त से की थी चैट-श्रद्धा ने 24 नवंबर 2020 को अपने किसी दोस्त से चैट की थी. इस चैट में श्रद्धा की बेबसी और मायूसी साफ झलक रही है. श्रद्धा ने चैट में अपने दोस्त को बताया था कि आफताब जल्द ही उसका घर छोड़ देगा. इस चैट में श्रद्धा ने आफताब की बेरहमी बयां करते हुए लिखा था कि उसने (आफताब) मुझे इस कदर मारा है कि मैं बिस्तर से उठ नहीं सकती.

आफताब की दरिंदगी आई सामने-श्रद्धा ने आगे लिखा कि कल उसके माता-पिता के घर जाने के बाद सबकुछ ठीक हो गया था. वह आज जा रहा है. लेकिन मैं आज नहीं जा रही हूं. क्योंकि उसने मुझे बेरहमी से पीटा था. मेरा ब्लड प्रेशन लो है. मेरी बॉडी पर जख्म के निशान हैं. शरीर में इतनी ताकत नहीं है कि मैं बेड से उठ सकूं. मैं चाहती हूं कि वह यहां से चला जाए. मेरी वजह से जो भी दिक्कत हुई और काम प्रभावित होने के लिए माफी मांगती हूं.

शुरू करेगी जांच-बता दें कि दिल्ली पुलिस ने अभी तक बरामद हड्डियां और लाश के टुक?ो को स्वसुरको नही भेजा है. एफएसएल के अधिकारियों के मुताबिक जब आफताब की रिमांड खत्म हो जाएगी तब जांच अधिकारी इन चीजों को स्वसुर के दफ्तर में फोरेंसिक जांच के लिए जमा कराएंगे. उसके बाद ही स्वसुर अपनी जांच शुरू करेगी.

नार्को टेस्ट को लेकर आई ये खबर-सूत्रों के मुताबिक स्वसुर रोहिणी में भी अब नार्को टेस्ट करने की सुविधा है. लेकिन अभी तक पुलिस की तरफ से आफताब का नार्को कराने के लिए उनसे संपर्क नहीं किया गया है. क्योंकि नार्को टेस्ट करने में करीब 3 ह?तों का समय लगता है इसलिए स्वसुर के अधिकारियों को लगता है कि रिमांड खत्म होने के बाद जब आ?ताब न्यायिक हिरासत में चला जाएगा उसके बाद ही उसका नार्को टेस्ट करवाया जाएगा.

अर्थव्यवस्था को उबारने के लिए ऋषि सुनक सरकार का बड़ा ऐलान, उठाए ये कदम

वित्त मंत्री जेरमी हंट ने सरकार के इमरजेंसी बजट का खुलासा किया है जिसमें टैक्स की दरों में बड़ी बढ़ोतरी की गई है. ब्रिटेन में महंगाई काबू में आने का नाम नहीं ले रही है. यही वजह है कि टैक्स दरों बढ़ाया गया है.आईएएस अंकिता मिश्रा और आईपीएस अक्षत कौशल की लव स्टोरी, जानिए कहां से हुई थी शुरूमें आ गई मंदी? अर्थव्यवस्था को उबारने के लिए ऋषि सुनक सरकार का बड़ा ऐलान, उठाए ये कदमब्रिटेन आर्थिक मोर्चे पर संघर्ष कर रहा है. उसकी अर्थव्यवस्था सिकुड़ती जा रही है. इस बीच प्रधानमंत्री ऋषि सुनक ने आर्थिक मंदी को दूर करने के लिए कई कदम उठाने की घोषणा की है. ब्रिटिश सरकार ने 55000 करोड़ पाउंड का फिस्कल प्लान पेश करने किया है.वित्त मंत्री जेरमी हंट ने सरकार के इमरजेंसी बजट का खुलासा किया है जिसमें टैक्स की दरों में बड़ी बढ़ोतरी की गई है. ब्रिटेन में महंगाई काबू में आने का नाम नहीं ले रही है. यही वजह है कि टैक्स दरों बढ़ाया गया है. वित्त मंत्री हाउस ऑफ कॉमन्स में ऑटम स्टेटमेंट पेश किया, जिसका समर्थन प्रधानमंत्री ने किया.

बजट की प्रमुख घोषणाएं--एनर्जी कंपनियों पर विंडफॉल टैक्स को बढ़ाया गया है. इसे 25त्न से 35त्न कर दिया गया है.-इलेक्ट्रिक जेनरेटर पर 45 फीसदी का अस्थाई टैक्स लगाया गया है.-सवा लाख पाउंड सालाना कमाने वाले लोग भी अब टॉप टैक्स के दायरे में आएंगे.-इलेक्ट्रिक गाड़ियों पर 2025 से एक्साइज ड्यूटी नहीं लगेगी.बजट के साथ पेश की गई स्वतंत्र इकाई ओबीआर (ऑफिस फॉर बजट रिस्पॉनसिबलिटी) की रिपोर्ट बताती है कि एनर्जी की कीमतों में भारी इजाफे के लिए रूस और यूक्रेन की जंग जिम्मदार है. रिपोर्ट के मुताबिक 2024 तक अर्थव्यस्था में सुधार की उम्मीद नहीं दिखती है.

ब्रिटेन में महंगाई ने तोड़ा रिकॉर्ड-बता दें ब्रिटेन में महंगाई ने 41 साल का रिकॉर्ड तोड़ दिया है. ताजा आंकड़ों के मुताबिक अक्टूबर 2022 के दौरान ब्रिटेन में खुदरा महंगाई बढ़कर 11.1 फीसदी हो चुकी है, जो 1981 से अब तक का सबसे ऊंचा स्तर है.

इजरायल की स्पेशल फोर्स से आएगी फिलिस्तीनियों की शामत! रिमोट कंट्रोल से करेंगे दुश्मनों पर हमला

इजरायल और फिलिस्तीन के बीच विवाद काफी पुराना है. इन दोनों देशों के बीच हमेशा तनाव बना रहता है और युद्ध की आशंका भी बनी रहती है. दुश्मनों से निपटने के लिए इजरायल एक से एक आधुनिक हथियार बनाए हैं. साइंस और टेक्नोलॉजी में उसका कद पूरी दुनिया में तेजी से बढ़ रहा है. इसी बीच इजरायल ने एक ऐसा काम किया है जिसके चर्चे हर तरफ हो रहे हैं. दरअसल, इजरायल ने वेस्ट बैंक में नए रोबोटिक हथियार तैनात किए हैं. इन रोबोटिक हथियारों से रिमोट कंट्रोल के जरिये आंसू गैस, स्टन ग्रेनेड और रबर की गोलियां चलाई जा सकती हैं.

लगाए गए हैं स्पेशल निगरानी कैमरे-एसोसिएटेड प्रेस की रिपोर्ट की मानें तो बुधवार को इजरायल ने हेब्रोन शहर और अल-अरब शरणार्थी शिविर में बड़े पैमाने पर ऐसे हथियार तैनात किए हैं. ये हथियार हमले के अलावा निगरानी भी कर सकेंगे. इनमें निगरानी कैमरे लगे हुए हैं. इन्हें स्पेशल गार्ड टावरों पर तैनात किया गया है.

अमेरिकी सांसद ने कह दी ऐसी बात, खुश हो जाएगा हर भारतीय

आईएएस अंकिता मिश्रा और आईपीएस अक्षत कौशल की लव स्टोरी, जानिए कहां से हुई थी शुरूअमेरिकी सांसद ने कह दी ऐसी बात, खुश हो जाएगा हर भारतीय भारत के साथ अमेरिका के मजबूत होते रिश्तों पर खुशी जताते हुए अमेरिकी सांसद जॉन कार्टर ने कहा कि भारत का भविष्य आज 'पहले से कहीं अधिक उज्ज्वल है.' एक दिन पहले प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और अमेरिकी राष्ट्रपति जो बाइडन की इंडोनेशिया के बाली में जी-20 शिखर सम्मेलन के इतर हुई एक बैठक के बाद कार्टर का यह बयान आया है.इस बैठक में दौनों नेताओं ने उभरती प्रौद्योगिकियों एवं आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस सहित अन्य क्षेत्रों में भारत और अमेरिका के बीच रणनीतिक साझेदारी की स्थिति की समीक्षा की थी.

'लोकतंत्र के प्रति भारत की प्रतिबद्धता अटूट रही है'-कार्टर ने प्रतिनिधि सभा में बुधवार को कहा, ''मैं ब्रिटिश साम्राज्य से भारत की स्वतंत्रता की 75वीं वर्षगांठ मनाने के लिए आज (सदन में) खड़ा हुआ हूं.'' उन्होंने कहा कि पिछले दशकों में लोकतंत्र और स्वशासन के प्रति भारत की प्रतिबद्धता अटूट रही है और उसका भविष्य आज 'पहले से कहीं अधिक उज्ज्वल है.कार्टर ने कहा, 'मैं भारत के साथ अमेरिका के संबंधों के अनवरत मजबूत होने से उत्साहित हूं, जैसा कि पिछले 75 साल से जारी है और भारतीयों को हमारा मित्र बताने पर मुझे गर्व है.''15 अगस्त, 1947 को भारतीय स्वतंत्रता अधिनियम पारित हुआ'

मुझे जेल के अंडा सेल में रखा गया, 10 किलो वजन कम हो गया संजय राउत

आधी रात को हद से ज्यादा बोल्ड हुई टीवी की ये संस्कारी बहू पहन ली इतनी टाइट ड्रेस कि सांस लेना भी हुआ मुश्किल

मुझे जेल के अंडा सेल में रखा गया, 10 किलो वजन कम हो गया :- संजय राउत शिवसेना के उद्धव ठाकरे गुट के वरिष्ठ नेता और पूर्व मुख्यमंत्री के सबसे करीबी सहयोगियों में से एक संजय राउत ने शुक्रवार को कहा कि जेल में रहने के दौरान उनका वजन 10 किलो कम हो गया. मनी लॉन्ड्रिंग मामले में एक विशेष अदालत द्वारा जमानत दिए जाने के कुछ दिनों राउत ने कहा कि उन्हें %अंडा सेल% में रखा गया था, जहां उन्हें 15 दिनों तक धूप नहीं दिखाई दी थी. उन्होंने कहा, 'जेल की फ्लडलाइट्स के लंबे समय तक संपर्क में रहने के कारण अब मेरी दृष्टि कमजोर हो गई है.'राउत ने कहा, 'मुझे पढ़ने या देखने में दिक्कत होती है. मुझे सुनने और बात करने में भी दिक्कत होती है. मुझे यह झेलना पड़ा लेकिन कोई बात नहीं .' उन्होंने जोड़ा, 'आपकी याददाश्त भी कम होने लगती है.'

राउत ने खुद को बताया युद्ध बंदी-खुद को युद्ध बंदी कहते हुए, राउत ने दावा किया कि अगर वह उनकेके सामने आत्मसमर्पण कर देते या 'मूक दर्शक बने रहते, तो उन्हें गिरफ्तार नहीं किया जाता.' उन्होंने कहा, 'मैं खुद को युद्ध बंदी कहता हूं, सरकार सोचती है कि हम उनके साथ युद्ध में हैं.'

राउत ने कहा कि उन्होंने महाराष्ट्र के पूर्व गृह मंत्री अनिल देशमुख को जेल में देखा और उनका स्वास्थ्य ठीक नहीं है. बता दें देशमुख एक कथित भ्रष्टाचार और सत्ता के दुरुपयोग के मामले में जेल में हैं. उन्होंने कहा, 'क्या सरकार केवल विपक्ष में रहने वालों को ही गिरफ्तार करेगी?'संजय राउत ने ठाकरे परिवार का आभार जताते हुए कहा, मैं जो कुछ भी हूं, बालासाहेब ठाकरे और ठाकरे परिवार की वजह से हूं.

पार्टी छोड़कर जाने वालों पर कही ये बात-उद्धव ठाकरे को छोड़कर पार्टी के बागी और अब महाराष्ट्र के मुख्यमंत्री एकनाथ शिंदे के साथ जाने वाले नेताओं पर उन्होंने कहा, 'जो लोग पार्टी छोड़ना चाहते हैं, वे जा सकते हैं, यह जीवित रहेगा और बढ़ता रहेगा.' उन्होंने दावा किया कि राज्य के लोग उनकी पार्टी के साथ हैं और केवल विधायक और नेता ही अपने फायदे के लिए जा रहे हैं.राउत ने कहा, %जो लोग चले गए हैं, उन्हें कोई और नियंत्रित कर रहा है...महाराष्ट्र में केवल एक शिवसेना है.% उन्होंने आरोप लगाया कि कुछ लोगों ने शिवसेना को खत्म करने की कोशिश की.

सावरकर पर राहुल गांधी टिप्पणी दी ये प्रतिक्रिया-राहुल गांधी द्वारा हिंदुत्व विचारक वीडी सावरकर पर निशाने साधने को लेकर एक संजय राउत ने चेतावनी दी कि उनकी टिप्पणी महाराष्ट्र में महा विकास अघाड़ी (एमवीए) गठबंधन के भविष्य को नुकसान पहुंचा सकती है. उन्होंने कहा, 'कांग्रेस के कई नेताओं ने मुझसे बात की. महाराष्ट्र कांग्रेस के नेता भी इस तरह की टिप्पणियों से शर्मिंदा होते हैं.'

विभिन्न स्थानों पर मनाई सरदार वल्लभभाई पटैल की जयंती

बनखेड़ी । लौह पुरुष सरदार बल्लभ भाई पटेल की जयंती पर मध्यप्रदेश जन अभियान परिषद् नेहरू युवा केन्द्र खेल विभाग बनखेड़ी ने रन फॉर यूनिटी का कार्यक्रम आयोजित किया। वही बीएसडब्ल्यू एमएसडब्ल्यू के छात्र-छात्राओं ने मध्यप्रदेश स्थापना दिवस की पूर्व संध्या पर रंगोली प्रतियोगिता का आयोजन किया। सीएमसीएलडीपी में कार्यरत परामर्श दाताओं ने अपने-अपने सेक्टरों में सामाजिक क्षेत्र में कार्य करने वाले जनप्रतिनिधियों के साथ सामाजिक कार्यों में सहभागिता की परामर्शदाता मकरंद सिंह कुशवाहा ने ग्राम भ्रमण कर नागरिकों के आयुष्मान कार्ड बनवाएं प्रभु दयाल कुशवाहा ने छात्र-छात्राओं को शपथ दिलाई सुरेंद्र मौर्य द्वारा रैली का आयोजन किया गया वही धर्मेंद्र शर्मा ने शासकीय हाई स्कूल महुआखेड़ा में सरदार वलभ भाई पटेल की जयंती में सहभागिता की छात्रों ने वन विभाग के सामने से मेला ग्राउंड तक दौड़ लगाकर एकता अखंडता का संदेश दिया तथा स्वर्गीय पटैल के दृढ़ निश्चयी व्यक्तित्व को निरूपित करने का प्रयास किया। कार्यक्रम में मध्यप्रदेश जन अभियान परिषद् के बीसी मुकेश कुमार सोलंकी परामर्शदाता प्रभु दयाल कुशवाहा खेल समन्वयक देवेंद्र उरहा नेहरू युवा केन्द्र से आकाश अमोले शासकीय हाई स्कूल में प्राचार्य राजकुमार पाली आर एस खुरासान रामकृष्ण वीके दिनेश पाल बीएल इमने, अन्नपूर्णा शर्मा सुषमा मेहरा प्रियंका राकेश, ओमवती पटेल सुनील बाथरे उपस्थित रहे।

रन फार यूनिटी का किया कार्यक्रम स्वच्छता को लेकर दिलाई शपथ

थानों में ली देश की अखंडता की शपथ, मैराथन में रेनू कुशवाह प्रथम और रनिया द्वितीय

श्योपुर ब्यूरो। श्योपुर में पुलिस स्मृति दिवस पर सोमवार को जिले के 17 थानों में शपथ ग्रहण समारोह हुए। थानों के थाना प्रभारी और अन्य स्टाफ ने एकता की शपथ ली। पुलिस स्मृति दिवस के साथ-साथ पुलिसकर्मियों ने लौह पुरुष सरदार वल्लभभाई पटेल की जयंती भी मनाई गई। विजयपुर में मैराथन दौड़ आयोजित की गई। मैराथन में छात्रा रेनू कुशवाह प्रथम स्थान पर रही। दूसरे स्थान पर छात्रा रनिया कुशवाह रही। उन्हें विजयपुर की महिला सब इंस्पेक्टर आशा मौर्य ने सील्ड और प्रमाण पत्र देकर सम्मानित किया। पुलिस स्मृति दिवस के अवसर पर सभी थाना प्रभारियों ने पुलिस थानों में दर्ज पेंडिंग अपराधों का जल्द से जल्द निराकरण करने और अपने-अपने थाना क्षेत्र की सीमा में नशे के अवैध कारोबार पर पूरी तरह अंकुश लगाकर, लोगों को नशामुक्ति का संदेश देने की शपथ दिलाई।

बिना डिग्री व लाइसेंस के क्लीनिक चलाने पर दो प्राइवेट डाक्टर पर एफआइआर दर्ज

बिना लाइसेंस के क्लीनिक का संचालन करने पर स्वास्थ्य विभाग ने कड़ी कार्रवाई की है। विभाग ने दो झोलाछाप डाक्टर के खिलाफ कराहल थाना पुलिस ने मामला दर्ज किया है। सीएमएचओ डा. बीएल यादव ने कहा कि कई अन्य डाक्टरों के दस्तावेजों की भी जांच की जा रही है। विभाग की कार्रवाई के बाद खलबली मची हुई है।सीएमएचओ डा. बीएल यादव के मुताबिक, कुछ दिन पहले कराहल क्षेत्र में एक शिकायत मिली थी। जिसमें बताया गया था कि कस्बे में बिना लाइसेंस के एक क्लीनिक चलाया जा रहा है। जिसके बाद रविवार को स्वास्थ्य विभाग की टीम ने क्लीनिक पर छापा कार्रवाई की थी। जहां मैन बाजार में गौतम पुत्र गुना सिंधू निवासी एलापाथिक क्लीनिक गौतम विश्वास मैन बाज़ार कराहल में अवैध रूप से बिना डिग्री एवं बिना पंजीयन के एलोपैथिक क्लीनिक का संचालन करते पाया गया। इसी तरह रविंद्र पुत्र पीआर त्यागी निवासी कमलिया के खिलाफ सीएमएचओ डा. बीएल यादव ने कार्रवाई के बाद कराहल थाना पुलिस में मामले के संबंध में शिकायत दर्ज कराई है।

अनियंत्रित होकर ट्रक पलटने से एक की मौत, चालक पर एफआइआर दर्ज

गोरस- मुरैना हाइवे पर सिरोनी हनुमान मंदिर के पास हुई घटना

गोरस- मुरैना हाइवे पर हनुमान मंदिर के पास से एक ट्रक अनियंत्रित होकर पलट गया। हादसे में क्लीनर की मौत हो गई। हादसा बीती शाम को हुआ है। बरगवां थाना पुलिस ने ट्रक चालक के खिलाफ मामला दर्ज कर लिया है। पुलिस से मिली जानकारी के अनुसार ट्रक क्रं. आरजे 11 जीबी 1367 श्योपुर से मुरैना की तरफ जा रहा था, तभी सिरोनी हनुमान मंदिर के पास से श्यामपुर रोड पर ट्रक अनियंत्रित होकर पलट गया। इस हादसे जाटौली थाना टैंटरा जिला मुरैना निवासी 50 वर्षीय हेमराज पुत्र बाबूलाल रावत की मौत हो गई। पुलिस ने फरियादी रामनारायण पुत्र बाबूलाल रावत की शिकायत पर ट्रक चालक वारेलाल रावत निवासी उचेहरा जिला मुरैना की शिकायत पर मामला दर्ज कर जांच शुरू कर दी है।

खेत से निकलने की बात पर महिला को पीटा, मामला दर्ज

श्योपुर ब्यूरो। बड़ौदा थाना क्षेत्र के फखदिया गांव में खेत से निकलने की बात पर एक व्यक्ति ने महिला के साथ मारपीट कर दी, जिससे वह घायल हो गई। पुलिस ने मारपीट का मामला दर्ज कर लिया है। पुलिस से मिली जानकारी के अनुसार रामप्रसादी बाई मीणा व विजय सिंह मीणा के खेत पास-पास हैं। खेत से निकलने की बात पर रामप्रसादी बाई व विजय सिंह मीणा के बीच खेत से निकलने की बात पर विवाद हो गया है। विवाद में विजयसिंह मीणा ने गाली-गलौज करते रामप्रसादी बाई की मारपीट कर दी। पुलिस ने महिला की शिकायत पर आरोपित के खिलाफ मारपीट का मामला दर्ज कर लिया है।

पुलिस ने तीन लोगों से पकड़ी 7200 रुपये की अवैध

। विभिन्न थानों की पुलिस ने अलग-अलग स्थानों पर कार्रवाई करते हुए अवैध शराब के साथ तीन लोगों को गिरफ्तार किया है। पुलिस ने इनके कब्जे से 7200 रुपये की अवैध शराब जब्त की है। पहली कार्रवाई के दौरान मगरदा थाना पुलिस ने श्रीराम पुत्र भूरा आदिवासी निवासी दुबेरा को कारी नदी के पास से शराब ले जाते गिरफ्तार किया है। पुलिस ने उसके कब्जे से 25 बोतल शराब की जब्त की है, जिसकी कीमत 2500 रुपये है। इस तरह बड़ौदा थाना पुलिस ने हेमराज पुत्र भूरालाल बैरवा निवासी बगड़ी को बिच्छू बावड़ी तिराहे से 27 बोतल अवैध शराब के साथ गिरफ्तार किया है, जिसकी कीमत 2700 रुपये है। दूसरी कार्रवाई कनीराम पुत्र श्रीकिशन आदिवासी निवासी इन्द्रपुरा को इंद्रपुरा तिराहे से शराब ले जाते गिरफ्तार किया है। पुलिस ने उसके पास से 2 हजार रुपये कीमत की 20 बोतल शराब जब्त की है। पुलिस ने उक्त आरोपितो के खिलाफ आबकारी एक्ट के तहत मामला दर्ज कर लिया है।

सट्टा खिलाते दो गिरफ्तार

। रघुनाथपुर थाना पुलिस ने सट्टा खिलाते दो लोगों को गिरफ्तार किया है। पुलिस ने इनके कब्जे से 270 रुपये नगदी जब्त किए हैं। पहली कार्रवाई में पुलिस ने सोनू पुत्र मूलचंद बंजारा निवासी किन्नपुरा को रेलवे फाटक के पास से सट्टा खिलाते पकड़ा है। तलाशी के दौरान पुलिस ने उसके पास से सट्टे की पर्ची, पैन, 110 रुपये नगदी जब्त किए हैं। इसी तरह दूसरी कार्रवाई में राजू पुत्र इंद्र बंजारा निवासी दीपचंद का डेरा को आंगनबाड़ी केंद्र के पास से महुआमार पर सट्टा खिलाते पकड़ा। तलाशी के दौरान पुलिस ने उसके सट्टे की पर्ची, पैन व 160 रुपये नगदी जब्त किए हैं। पुलिस ने उक्त आरोपितो के खिलाफ सट्टा एक्ट के तहत मामला दर्ज कर लिया है।

मोदी संविधान को कमजोर कर रहे मगर देश को बचाने राहुल तपस्या पर: त्रिपाठी

शहर से जाटखेड़ा तक भारत जोड़ो अभियान के तहत निकाली पदयात्रा, गांव में गांधी चौपाल आयोजित

अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी के सचिव व संभाग प्रभारी डा सुधांशु त्रिपाठी ने कहा है की भाजपा की नरेंद्र मोदी सरकार ने पिछले वर्षो में बाबा साहब के संविधान सहित लोकतंत्र को कमजोर करने का काम किया है लेकिन कांग्रेस नेता राहुल गांधी देश को जोड़ने और लोकतंत्र व संविधान को बचाने की यात्रा पर निकले है यात्रा को मिल रहा समर्थन बता रहा की उनकी तपस्या में वो सफल होंगे। यह बात त्रिपाठी ने आज जिला कांग्रेस कमेटी के तत्वाधान में श्योपुर से जाटखेड़ा गांव तक निकली पदयात्रा के बाद गांधी चौपाल कार्यक्रम में ग्राम वाशियो के बीच कही त्रिपाठी ने इस दौरान गांव में चौपाल पर आई महिला पुरषों से से सीधा संवाद स्थापित कर उनके द्वारा भाजपा राज में उपजी समस्याओं को सुना कई महिलाओं ने कहा की कांग्रेस राज में अच्छे दिन थे अब तो बुरे दिन है महंगाई सहित अन्य किसानों के मुद्दो पर त्रिपाठी ने संवाद किया ग्रामीणों ने कहा की खाद , बीज , डीजल , पेट्रोल सहित हर वस्तु ने मोदी राज में महंगाई भारी बड़ी है वही संवाद में सीताराम बैरवा ने कहा की भाजपा ई वी एम के जरिए गलत तरीके से चुनाव जीत रही है वोट पुरानी पद्धति से डालने चाहिए इस दौरान जिला कांग्रेस अध्यक्ष ने अपने संबोधन में कहा की आज श्योपुर क्षेत्र में किसानों की कई जगह भाजपा राज में घरेलू बिजली गांव के गांव

बंद कर प्रताड़ना की जा रही है चौहान ने कहा की आज धान सहित सोयाबीन व अन्य फसलों का अतिवृष्टि से नुकसान 15 से 100 तक हुआ है लेकिन शिवराज सरकार ने किसानों को कोई मुआवजा नहीं दिया। इस दौरान वरिष्ठ नेता शौकत उल्ला खान, प्रदेश सचिव रामलखन हिरणीखेड़ा, कुंजबिहारी सर्राफ, वीपी सिंह मीणा, अंशु शुक्ला, सरपंच हरिसिंह मीणा, रामचरण मीणा जैनी, रामशंकर मीणा धीरोली ,मांगीलाल फोजी, संजू कुशवाह, रामभरत मीणा जैनी, ने भी अपने विचार रखे । कार्यक्रम उपरांत डा कमल शर्मा, व अनवर बालापुरी ने गांधी जी का रघुपति राघव राजाराम गीत गाया। इस दौरान पदयात्रा में पूर्व विधायक सत्यभानू चौहान, वरिष्ठ नेता भीमसेन शर्मा, किशन शर्मा, लक्ष्मी नारायण मीणा, देवीराम जाट आवदा, असलम खान बड़ौदा, राजू शर्मा,बजरंग लाल बैरवा ,सीताराम बैरवा ,मांगीलाल सुमन, शिवचरण मीणा जैनी, पार्षद सुमेर जाटव, इमरान खान, श्रीमती लक्ष्मी शिवहरे, महिला नेत्री सुनीता नायक, रूबीना खान, जनपद सदस्य विजय सिंह मीणा सोई,हरिओम मीणा जैनी, सादिक खान ज्वालापुर, रामचरण मीणा बासोंद, प्रदीप जाट, गोलू मीणा चोपना, धर्मेंद्र मीणा चंद्रपुरा, मुकेश मीणा हिरणीखेड़ा, रज्जाक खान अध्यक्ष, सुमेर बैरवा अध्यक्ष, दीपक गुप्ता, रुकमाल मीणा दलारना, ब्रजेश योगी, शंभू मीणा, लोकेंद्र मीणा, रामभरत मीणा गांवड़ी, लेखराज जाटव, मुकेश बैरवा, सोमत आदिवासी, बृजमोहन आदिवासी, जगदीश जागा,ब्रजेश अर्गल, सखावत खान, सकील खान, सहनावाज खान, रहीश खान, राजू वैष्णव, रमेश सुमन, रामदयाल नायक, महावीर सुमन, राजा खान, छोटू मीणा, अजय मीणा, कार्तिक आर्य,हनीफ खान बगवाज, सहित भारी संख्या में कांग्रेस जन व ग्रामवासी उपस्थित थे।

स्वभिमान और परमार्थ के प्रेरक थे स्व.ठा.मुन्नासिंहतोमर: श्री ठाकुर

ग्वालियर को आतंक से भयमुक्त करने वाले स्व मुन्ना सिंह तोमर

जी की 27 वींडुपुण्यतिथि वरिष्ठ समाजसेवी श्यामू ठाकुर के नेतृत्व में सेवड़ा सनकुआ धाम पर श्रद्धांजलि सभा का आयोजन किया गया जिसमें साधु संतों को फल वितरण एवं आत्मा की शांति हेतु भूपेंद्र शास्त्री द्वारा पाठ किया गया इस अवसर पर श्यामू ठाकुर ने कहा की 26 वर्ष पूर्व हमारे स्वाभिमान और सम्मान को दुष्टों के षडयंत्र,धोखे और कुटिलता के शिकार हुए चंबल के स्वाभिमान आदरणीय ठाकुर मुन्ना सिंह तोमर को हजारों गरीबों,वंचितों की और से अश्रुपूर्ण श्रद्धांजलि अर्पित करते हैं स्वर्गीय ठाकुर स्वाभिमान व परामर्श के पेरक थे ।दशकों तक ग्वालियर जहाँ भय और आतंक व्याप्त था लोग अपराधियो के आतंक से त्रस्त थे ,तभी लोगों के एक मसीहा वरदान स्वरूप ठिकाना पुरावस दिमनी में ड़मीदार क्षत्रिय परिवार में जन्म स्व मुन्ना सिंह तोमर का हुआ ।जब ग्वालियर आये तब चारों तरड़ गुंडो और अपराधियों ने अराजकता ,भय फैला रखा था।यह अन्याय अत्याचार एक स्वभिमानी क्षत्रिय को बर्दाश्त नहीं हुआ और अन्यायियों, अत्याचारियों के विरुद्ध झंडा बुलंद किया। माहौल ऐसा हो गया था कि व्यापारी, कर्मचारी, गरीबों को टैक्स देना पड़ता था, किसी ने घर बनाने के लिये जमीन खरीदकर भवन निर्माण करना चाहा क्षेत्रीय गुंडे कब्जा जमा लेते थे, घर किसी का बन रहा हो छत गुंडो द्वारा डाला जाता था। सभी के लिये न्याय का केन्द्र बना तोमर बिल्डिंग जहाँ से कोई खाली हाथ नहीं जाता था। मुन्ना सिंह तोमर न्याय का प्रतीक बन चुके थे। निःस्वार्थ सेवा को अपना जीवन समर्पित करने वाले

मुन्ना सिंह जी के विरुद्ध षडयंत्र रचे जाने लगे सामना करने की किसी की हिम्मत नहीं थी परन्तु वीर, बहादुर मुन्ना सिंह तोमर जी को छल से हमसे छीन लिया। अत्यधिक बहादुरी,दयालुता के प्रतीक स्व ठाकुर मुन्ना सिंह तोमर जी ने किसी को खाली हाथ नहीं लौटाया, उन्होंने लोगों स्वभिमान से जीना सिखाया। श्रद्धांजलि सभा में उपस्थित जन हिमांशु सोनी राहुल चौरसिया विपिन बाथम निर्वेद सविता रौनक सोनी राम सिया जाटव रघुवीर प्रजापति जय दयाल बाथम सुनील राठौर सुनील गुप्ता सहित कई गणमान्य जन एवं समाज सेवी उपस्थित रहे।

प्रदेश में आत्म-निर्भर होते गाँव-सशक्त होती महिलाएँ: महेन्द्र सिंह सिसोदिया

भोपाल। राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी की ग्राम स्वराज की अवधारणा मुख्यमंत्री श्री शिवराज सिंह चौहान के नेतृत्व में मध्यप्रदेश में मूर्त रूप ले रही है। प्रदेश के गाँव आत्म-निर्भर स्वायत्त इकाई के रूप में विकसित हो रहे हैं और सबसे बड़ी बात यह है कि इनमें से अनेक की कमान महिलाओं के हाथ में है। प्रदेश में महिलाओं के 4 लाख से अधिक स्व-सहायता समूह हैं, जिनसे जुड़े 45 लाख से अधिक परिवार विभिन्न गतिविधियों से न केवल अपने परिवारों को आर्थिक रूप से आत्म-निर्भर बना रहे हैं, अपितु महिलाएँ भी सामाजिक रूप से सशक्त हो रही हैं। प्रदेश की 23 हजार 12 ग्राम पंचायत, 313 जनपद पंचायत और 52 जिला पंचायत के लिये हुए निर्वाचन में 630 सरपंच, 157 जनपद सदस्य और एक जिला पंचायत सदस्य निर्विरोध निर्वाचित हुए थे, जिनमें 415 महिला सरपंच हैं। विगत वर्षों में पंचायतों द्वारा स्वयं की आय के कर एवं गैर-कर राजस्व के स्रोतों को प्रभावी रूप से क्रियान्वित करते हुए स्वयं की आय के रूप में लगभग 189 करोड़ रूपये अर्जित किये गये हैं। साथ ही पंचायतें नवाचार में भी आगे हैं। ÷सूर्य शक्ति अभियान'' में पंचायतों की विद्युत खपत को सौर ऊर्जा पर अंतरित किया जा रहा है। इससे पंचायतें अतिरिक्त वित्तीय संसाधन भी जुटा सकेंगी। मुख्यमंत्री श्री चौहान द्वारा प्रदेश के लिये तैयार किये गये आत्म-निर्भरता के रोडमेप पर कार्य करते हुए हमारा विभाग (पंचायत एवं ग्रामीण विकास) ग्रामीण क्षेत्रों को आत्म-निर्भर बनाने की दिशा में तेज गति से काम कर रहा है। ग्रामों में न केवल अधो-संरचना विकास, बुनियादी सुविधाएँ, रोजगार, स्वच्छता के क्षेत्र में निरंतर कार्य हो रहे हैं, अपितु प्रत्येक परिवार को पक्का आवास भी सुनिश्चित किया जा रहा है। प्रधानमंत्री पोषण शक्ति निर्माण योजना में विद्यार्थियों को पौष्टिक आहार दिलाया जा रहा है। प्रधानमंत्री कृषि सिंचाई योजना में इस वित्त वर्ष में 152 करोड़ रूपये की लागत से प्रदेश में 125 अमृत सरोवर बनाये जा रहे हैं। प्रदेश में महात्मा गाँधी नरेगा योजना में इस वित्त वर्ष में 36 लाख से अधिक परिवारों को रोजगार दिलाया गया और 14 करोड़ 93 लाख से अधिक मानव दिवस सृजित हुए। अनुसूचित जनजाति के परिवारों को रोजगार दिलाने में हमारा प्रदेश देश में अग्रणी है। प्रदेश में इस वित्त वर्ष में अनुसूचित जनजाति के 12 लाख से अधिक परिवारों को रोजगार दिलाया गया और 4 करोड़ 79 लाख मानव दिवस सृजित हुए। इसी योजना से कैच द रेन अभियान में ग्रामों में 2 लाख 70 हजार जल-संरचनाओं का निर्माण भी किया गया है। राज्य ग्रामीण आजीविका मिशन में प्रदेश में 52 जिलों के 47 हजार 22 गाँव में कार्य किया जा रहा है। मिशन में अब तक 4 लाख 3 हजार 172 स्व-सहायता समूह का गठन कर 45 लाख 5 हजार परिवार को जोड़ा गया है। इन्हें बैंकों से 4 हजार 408 करोड़ रूपये का ऋण वितरित किया गया है। मिशन के माध्यम से इन परिवारों के 529 करोड़ 43 लाख रूपये के उत्पादों का विक्रय किया गया है। स्व-रोजगार कार्यक्रमों में 73 हजार ग्रामीण युवाओं को विभिन्न व्यवसायों में प्रशिक्षित कर रोजगार मेलों से रोजगार दिलाया जा रहा है। मुख्यमंत्री ग्रामीण पथ-विक्रेता योजना में 3 लाख 81 हजार ग्रामीण लाभान्वित हुए हैं। स्वच्छ भारत मिशन के प्रथम चरण में हमारे गाँवों द्वारा निर्धारित अवधि के एक वर्ष पूर्व 2 अक्टूबर, 2018 को ही खुले में शौच मुक्ति (ओडीएफ) का लक्ष्य प्राप्त कर लिया गया है। मिशन (ग्रामीण) के द्वितीय चरण में ठोस एवं तरल अपशिष्ट प्रबंधन की व्यवस्था की जा रही है। प्रदेश में अब तक 3 लाख 41 हजार व्यक्तिगत शौचालय और 16 हजार 274 स्वच्छता परिसर बनाये गये हैं। साथ ही 15 हजार 164 ग्राम में ठोस अपशिष्ट प्रबंधन और 15 हजार 919 गाँव में तरल अपशिष्ट प्रबंधन किया गया है। प्रदेश के 15 हजार 525 ग्राम को ओडीएफ प्लस बनाया गया है। केन्द्र सरकार द्वारा 2 अक्टूबर, 2022 को हमारे प्रदेश को विभिन्न श्रेणियों में अग्रणी राज्य का पुरस्कार दिया गया है। प्रदेश के ग्रामीण क्षेत्रों में मुख्यमंत्री श्री चौहान के ÷सबके लिये पक्का आवास के संकल्प को पूरा करने के लिये तेज गति से कार्य हो रहा है। प्रतिमाह लगभग एक लाख प्रधानमंत्री आवास बनाये जा रहे हैं। योजना में अब तक प्रदेश में 38 लाख आवास स्वीकृत हुए हैं, जिनमें 29 लाख आवास पूरे कर लिये गये हैं। इन पर 35 हजार करोड़ रूपये से अधिक की लागत आई है। इस वर्ष 6 माह में ही लगभग 4 लाख 51 हजार आवास पूर्ण किये गये और धनतेरस के पवित्र अवसर पर प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी द्वारा हमारे ग्रामीण हितग्राहियों को वर्चुअल माध्यम से गृह-प्रवेश कराया गया। ग्रामीण अधो-संरचना विकास के कार्य भी प्रदेश में निरंतर हो रहे हैं। मुख्यमंत्री ग्राम-सड़क योजना में 8 हजार 942 गाँव को जोड़ने के लिये 20 हजार 89 किलोमीटर लम्बाई की 8 हजार 714 सड़क स्वीकृत की गई हैं, जिनमें अभी तक 19 हजार 135 किलोमीटर की 8 हजार 292 सड़क बनाई जा चुकी हैं। प्रदेश के 8 हजार 456 गाँव को बारहमासी एकल सम्पर्कता से जोड़ा जा चुका है। प्रधानमंत्री ग्राम सड़क योजना के क्रियान्वयन में गत 3 वर्ष में प्रदेश में 9 हजार 127 किलोमीटर सड़क का निर्माण गुणवत्ता के साथ किया जाकर देश में प्रथम स्थान प्राप्त किया गया है।

मुख्यमंत्री श्री चौहान ने स्थापना दिवस कार्यक्रमों के सुचारू संचालन के निर्देश दिए

लाल परेड ग्राउण्ड पर होने वाले कार्यक्रम की तैयारियाँ हुईं पूरी

भोपाल। मुख्यमंत्री श्री शिवराज सिंह चौहान ने कहा है कि मध्यप्रदेश के स्थापना दिवस समारोह पर सभी कार्यक्रमों को सुचारू रूप से किया जाए। मुख्यमंत्री श्री चौहान ने आज भोपाल जिला प्रशासन, संस्कृति और अन्य संबंधित विभागों के वरिष्ठ अधिकारियों को इस संबंध में निर्देश दिए। मुख्यमंत्री श्री चौहान को बताया गया कि मुख्य समारोह सहित अन्य गतिविधियों के लिए आवश्यक तैयारियाँ पूरी हो गई हैं।

मुख्यमंत्री निवास पर हुई आकर्षक विद्युत सज्जा-मध्यप्रदेश के स्थापना दिवस 1 नवंबर की पूर्व संध्या पर मुख्यमंत्री निवास में विशेष विद्युत सज्जा की गई। मुख्यमंत्री निवास के मुख्य भवन सहित अन्य कार्यालय कक्षों को भी सजाया गया। उद्यानों और बाहरी द्वार एवं भवन के भीतरी मार्गों पर भी आकर्षक विद्युत सज्जा की गई।

लाल परेड ग्राउंड पर होगी आकर्षक सांस्कृतिक प्रस्तुतियाँ-प्रदेश के स्थापना दिवस पर मुख्य कार्यक्रम लाल परेड ग्राउंड भोपाल में होगा। मुख्यमंत्री श्री चौहान सहित जन-प्रतिनिधि, अधिकारी-कर्मचारी, नागरिक कार्यक्रम में उपस्थित रहेंगे। सुप्रसिद्ध तीन संगीतकार शंकर, एहसान और लॉय समूह द्वारा बैंड प्रस्तुति और जानीमानी कोरियोग्राफर सुश्री मैत्रेयी पहा?ी का साथी कलाकारों के साथ नृत्य नाटिका ÷शिव महात्म्य÷ का कार्यक्रम देखने का राजधानी के नागरिकों में उत्साह निर्मित हुआ है।

प्राकृतिक चिकित्सा को जीवन में अपनाए : सुनील दुबे

पुष्पांजली टुडे न्यूज

भिण्ड । प्राकृतिक चिकित्सा को लेकर आई एन ओ सूर्या फाउंडेशन के समन्वय से चौधरी रूप नारायण दुबे समाज कल्याण समिति भिंड द्वारा बच्चों को लेकर पेंटिंग के माध्यम से प्रकृति प्रदत्त तत्वों से स्वास्थ्य स्वस्थ रख सकते हैं जैसे हवा, पानी, सूर्य प्रकाश, मिट्टी आदि । हमें प्रतिदिन शुद्ध हवा में बैठ कर लंबे लंबे गहरे श्वांस लेकर छोड़े, सूर्य प्रकाश रोग प्रतिरोधक क्षमता बढ़ाता है, इसके अलावा सुबह खुले बदन सूर्य के प्रकाश में घूमने से जीवन शक्ति, विटामिन डी मिलता है बही योग गुरू सोनाली अग्रवाल ने प्राकृतिक भोजन विशेषकर ताजे फल तथा कच्ची ब हल्की सब्जियां विभिन्न बीमारियों के इलाज में मददगार साबित होती हैं। बाल कल्याण समिति सदस्य श्रीमती सीमा सिंह भदौरिया ने मिट्टी चिकित्सा शरीर को तरोताजा करने में जीवंत रखने में तथा चर्म विकृति ब घावों को ठीक करने का कार्य करती है, साथ ही साथ शरीर से विषैले पदार्थों को दूर करता है । समाजसेवी सुनील दुबे ने कहा कि हवा, पानी, सूर्य प्रकाश , मिट्टी हमे स्वस्थ जीवन देता है।

कमलनाथ के जन्मदिन पर लगाई गांधी चौपाल

पुष्पांजली टुडे न्यूज

भिण्ड । शहर कांग्रेस और नगर कांग्रेस ने मध्य प्रदेश के पूर्व मुख्यमंत्री एवं प्रदेश कांग्रेस के अध्यक्ष कमलनाथ के जन्मदिन पर भिंड नगर पालिका के वार्ड नंबर 2 में गांधी चौपाल लगाकर मनाया गांधी चौपाल के शुभारंभ में राष्ट्रपिता महात्मा गांधी के चित्र पर माल्यार्पण कर पुष्पांजलि अर्पित की गई और राष्ट्रपिता महात्मा गांधी का प्रिय भजन रघुपति राघव राजाराम पतित पावन सीताराम का भी गायन किया गया । इस अवसर पर बोलते हुए नगर कांग्रेस के अध्यक्ष संतोष त्रिपाठी ने कहा कि कमलनाथ जब मध्य प्रदेश के मुख्यमंत्री बने थे किसानों की ऋण माफी योजना शुरू की और विद्युत उपभोक्ताओं के लिए 100 यूनिट तक बिजली 100 रु में दी जा रही थीउन्होंने हर ग्राम पंचायत में गौशाला का निर्माण किया ताकि हमारी गौमाता रोड पर विचरण और किसानों की फसलें बर्बाद ना करें बीजेपी सरकार ने आते ही गौशाला का निर्माण बंद कर दिया कन्यादान योजना को 25000 रु से बढ़ाकर 51000रु किया आंगनबाड़ी कार्यकर्ता और सहायिकाओं के वेतन वृद्धि की उन्होंने महाकाल कॉरिडोर के लिए भी राशि मंजूर की राम वन गमन पथ के निर्माण में सुरुचि ली और आज हम अगर महंगाई बात करें सब्जियों की कीमतों में 35त्न तक वृद्धि हुई है नमक 41त्न महंगा हुआ है दाले 60 से 65त्न तक महंगी हो गई ऐसी कोई भी चीज नहीं है जिसकी कीमत इस सरकार में न बड़ी हो मोदी सरकार महंगाई को नियंत्रित कर नहीं पा रही है उल्टा पहले से परेशान जनता पर टैक्स का बोझ डालकर अपना खजाना भरने में लगी है पूर्व मुख्यमंत्री कमलनाथ के जन्मदिन पर गांधी चौपाल का आयोजन कर मना रहे हैं और आने वाले 2023 के विधानसभा चुनाव में माननीय कमलनाथ जी को मुख्यमंत्री बनाने का संकल्प करते हैं ।कार्यक्रम में बोलते हुए अभिभाषक संघ के पूर्व अध्यक्ष राम दत्त तिवारी ने कहा आज देश में अराजकता का माहौल है चारों तरफ त्राहिमाम मचा है 2014 में भिंड से ग्वालियर किराया ?25 था आज ?100 है गौमाता में लंबी वायरस फैल रहा है सरकार की तरफ से दवाइयों की कोई व्यवस्था नहीं है जगह-जगह गौ माता मरी पड़ी है पेट्रोल डीजल और रसोई गैस पर राज्य और केंद्र का टैक्स लगाकर

जनता को लूटा जा रहा है आज अंतरराष्ट्रीय बाजार में पेट्रोलियम पदार्थों की कीमत काफी कम है फिर भी जनता को महंगे दामों पर पेट्रोलियम पदार्थ बेचे जा रहे हैंकार्यक्रम में मुख्य रूप से नगर कांग्रेस के अध्यक्ष संतोष त्रिपाठी, अभिभाषक संघ के पूर्व अध्यक्ष राम दत्त तिवारी, पूर्व जनपद सदस्य अशोक तोमर, विजय दैपुरिया प्रदीप भदौरिया ,कुंवर सिंह गुर्जर छोटे सिंह नरवरिया, पवन चौरसिया ,आदित्य शर्मा दर्शन सिंह तोमर, संजय शर्मा, कुलदीप भारद्वाज, दुष्यंत सिंघई, गोपाल सविता, विवेक मिश्रा ,विक्की भदौरिया, हेरम्भ अरेले, रोहित सिंह राजावत ,गंगाचरण पटेल पवन दीक्षित, जमुना प्रसाद आदि लोग उपस्थित रहे।

कृतेष कुशवाह के हत्यारों पर कार्यवाही हेतु,कुशवाह महासभा ने सौपा ज्ञापन

पुष्पांजलि टुडे रिपोर्टर
अभिषेक कुशवाह

सिरोंज -कशवाह महासभा के द्वारा शुक्रवार को दोपहर में तहसील कार्यालय पहुंचकर मुख्यमंत्री के नाम नायब तहसीलदार चन्द्रकुमार ताम्रकार को ज्ञापन सौपा गया। इससे पूर्व समाजजन छत्रीनाका तिराहा से वाहन रैली के रूप में नारेबाजी करते हुए नगर के मुख्य बाजार से होते तहसील कार्यालय पहुंचे। जहां पर ज्ञापन सौपा गया। ज्ञापन मे बताया कि दिनांक एक नंवबर को थाना जैसी नगर तहसील जैसीनगर जिला सागर में कृतेश कुश्वाह की हत्या पुलिस कस्टडी में हुई है। उन्होने मांग करते हुए कहा है कि थाना जैसी नगर म घटना क समय पदस्थ टाआइ एव समस्त स्टॉफ को बर्खास्त कर एवं झूठी शिकायत कर्ता पक्ष के सदस्यों के विरूद्ध तत्काल धारा 302,201,120 के तहत मुकदमा दर्ज किया जावे। वहीं बताया गया कि उक्त विराध प्रदशन का राकन क लिए शासन-प्रशासन कुशवाह समाज के लोगों को नाना प्रकार से प्रताड़ित कर रहा है। कुशवाह समाज के लोगों के घर मकान तोड़कर झूठे मुकदमे दर्ज कर रहे है। जिससे कुशवाह समाज मे भारी आक्रोश पनप रहा है। बरना संपूर्ण मध्यप्रदेश कुशवाह समाज के लोग भारी विरोध प्रदर्शन करने के लिए तैयार है। जिसकी जवाबदारी शासन प्रशासन की होगी। इस अवसर पर तहसील अध्यक्ष राकेश कुशवाह, नीलेश कुशवाह, मलखान कुशवाह , कुशवाह,कमलेष कुशवाह , राजाराम कुशवाह सहित बडी संख्या में समाजजन मौजूद रहे।

दो दिवसीय प्रदर्शनी एंव बिक्री का हुआ शुभारंभ

पुष्पाजंली टुडे

बेंगलुरू एलसीए द्वारा वीवी पुरम स्थित त्रिशाला रेसिडेंसी होटल में आयोजित दो दिवसीय प्रदर्शनी एवं बिक्री उमंग का फीता काटकर शुभारंभ करते हुए मुख्य अतिथि महेंद्र मुणोत साथ में रतनी बाई मेहता, मंजू दिनेश लुंकड़, एवं आयोजक टीम मुणोत ने अपने संबोधन में कहा ऐसे आयोजन से प्रतिभागी के हुनर एवं प्रतिभा को पहचान मिलती है एवं हमारे प्रधानमंत्री नरेंद्र दामोदरदास मोदी के आत्मनिर्भर भारत के सपने को साकार करने में हम सहभागी बनते हैं आयोजीकाओ ने मुणोत को सम्मानित किया ।

नवांकुर संस्थाएं और मेंटर्स आयुष्मान कार्ड के लिए करेंगे प्रोत्साहित

सिरोंज /विदिशा । मध्यप्रदेश जन अभियान परिषद अनेक सामाजिक कार्य एवं जन हितेषी कार्य लगातार किए जाते रहे हैं इसी के अंतर्गत गुरुवार को जिला समन्वयक के द्वारा सभी विकासखंड समन्वयक नवांकुर संस्थाओं एवं मेंटर्स को आयुष्मान कार्ड बनाने में प्रोत्साहित करने की बात पत्र के माध्यम से कही जिसमें उन्होंने बताया कि नवाकुर संस्थाओं एवं परामर्शदाताओं को निर्देशित किया जाता हैं कि आप अपने प्रस्फुटन ग्रामों में आयुष्मान कार्ड बनाये जाने हेतु लोगों को प्रोत्साहित करें एवं सूची तैयार कर अपने संबंधित विकासखण्ड समन्वयक को उपलब्ध करावें तथा विकासखण्ड समन्वयक प्रतिदिवस की जानकारी अपने विकासखण्ड के अनुविभागीय अधिकारी एवं जिला कार्यालय जन अभियान परिषद को भी उपलब्ध करावें ताकि प्रभावी कार्ययोजना तैयारकर, 20 नवम्बर से 30 नवम्बर की अवधि में लक्ष्य के अनुरूप प्रगति की जा सके, लेकिन यहां भी एक बड़ा प्रश्न जन्म लेता है की सिरोंज विकासखंड जहां 3 ऐसे मेंटर्स चयनित किए गए हैं जो अन्य संस्थाओं में भी कार्यरत हैं जिनको लेकर पूर्व में अनेकों शिकायतें की जा चुकी है, लेकिन आधिकारिक कार्यवाही शून्य रही है क्या ऐसे मेंटर्स परिषद की मूल भावना पर खरे उतरेंगे या सिर्फ औपचारिकता कर इस अभियान की पूर्ति कर देंगे

आज अंतरराष्ट्रीय व्यस्क दिवस पर फैमिली प्लानिंग एसोसिएशन ऑफ इंडिया ने किया संगोष्ठी का आयोजन

पुष्पांजली टुडे

ग्वालियर । फैमिली प्लानिंग एसोसिएशन ऑफ इंडिया की ग्वालियर शाखा द्वारा आज अंतर्राष्ट्रीय व्यस्क दिवस पर एक संगोष्ठी का आयोजन किया गया।कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में संस्था के मानसेवी सचिव डॉ के. के. दीक्षित जी उपस्थित थे उन्होंने अपने उद्बोधन में सभी को बताया की व्यस्क डे क्या है तथा वयस्क होने पर क्या क्या फायदे मिलते है इस पर विस्तार पूर्वक चर्चा की।कार्यक्रम में कार्यक्रम की अध्यक्षता संस्था की सदस्यता डॉ वीणा प्रधान जी ने की साथ ही उन्होंने सभी को महिला स्वास्थ्य एवं मधुमेह डायबिटिक पखवाड़े के अंतर्गत मधुमेह जैसे घातक बीमारी से बचने एवं उसके हानि बताए।कार्यक्रम में विशेष अतिथि के रुपम्मे संस्था की शाखा प्रबंधक श्रीमती नीलम दीक्षित जी उपस्थित थी।उन्होंने युवाओं को बताया की मतदान क्या है एवं मतदान कैसे करते है। एवं इसके क्या क्या अधिकार है।इस पर चर्चा की।कार्यक्रम में विशेष अतिथि के रूप में संस्था के कार्यक्रम आधिकारी श्री अच्छेंद्र सिंह कुशवाह उपस्थित थे उन्होंने अपने उद्बोधन में सभी को युवा स्वास्थ्य एवं युवा अधिकारों पर विस्तारपूर्वक चर्चा की।कार्यक्रम में कुल 55युवाओं ने भाग लिया ।कार्यक्रम के अंत में संस्था की ओर से श्री पंकज अग्रवाल जी द्वारा सभी का आभार व्यक्त किया गया।

मंत्री के भतीजे की दबंगइ दंदरौआ धाम पर को हडकाते हुए हटाया बेरीगेट्स

हूटर लगी स्कॉर्पियो कार को निकाल कर ले गया

भिंड। मध्य प्रदेश के नगरीय प्रशासन मंत्री ओपीएस भदौरिया के भतीजे रिंकू उर्फ भारत सिंह भदौरिया की दबंगई गुरुवार को दिखी। वे दंदरौआ धाम पर आयोजित सियपिय मिलन समारोह में शामिल होने के लिए गए हुए थे। वे वीआईपी गेट से एंट्री चाहते थे। सुरक्षा ड्यूटी पर तैनात डीएसपी सुरेंद्र यादव ने रोकना चाहा। डीएसपी के रोकने पर मंत्री के भतीजे ने प्रदेश सरकार का रौब दिखाया। जब डीएसपी ने सुरक्षा की बात कही तो सिंधिया समर्थित मंत्री के भतीजे का गुस्सा सातवें आसमान पर पहुंच गया। इस दौरान मंत्री के भतीजे ने डीएसपी को खूब हड़काया और बेरीगेट्स हटाते हुए लग्जरी कार को आयोजन स्थल तक लेकर पहुंचे।ये मामला गुरुवार की दोपहर का है। यहां मौजूद ग्रामीणों ने सिंधिया समर्थित मंत्री के भतीजे रिंकू अपने समर्थकों के साथ दंदरौआ धाम पर आयोजित सियपिय मिलन समारोह में हूटर लगे स्कॉर्पियो लगे वाहन से शामिल होने पहुंचे थे। वे शॉर्ट रास्ते से होते हुए वीआईपी गेट से वाहन समेत प्रवेश करना चाहते थे। यहां मौजूद डीएसपी सुरेंद्र सिंह यादव ने मंत्री के भतीजे के लड़के को बेरीगेट्स हटाने से रोक दिया। इसके बाद मंत्री के भतीजे रिंकू मौके पर आए उन्होंने बेरीगेट्स हटाने की बात कही। इस पर डीएसपी ने कहा कि ये वीआईपी गेट है। यहां से अति महत्वपूर्ण व्यक्ति ही अंदर जा सकता है। इस पर मंत्री के भतीजे ने रौब भरे अंदाज में अपना परिचय दिया और डीएसपी को हड़काते हुए बेरीगेट्स हटाए ।एसपी से बोला- ज्यादा बोलने की जरूरत नहीं । इस दौरान मंत्री के भतीजे ने बद्तमीजी भरे लहजे में पुलिस अफसर से बात की और अपनी कार को निकाल कर ले गए। अब यहां देखने वाली बात यह है कि क्या एक आमजन इस प्रकार एक हूटर लगे वाहन से वीआईपी एरिया में प्रवेश कर सकता है और क्या कानून इसकी परमिशन देता है। ये सब मौके का कहना था कि मंत्री के भतीजे हो तो कुछ भी करोगे जनता मर रही है मंत्री का भतीजा कार से अंदर जा रहा है। जब चुनाव होता है तो जीतने के लिए भीख मांगते हो अब जनता कुचल

पर मौजूद ग्रामीण क्षेत्र के श्रद्धालुओं ने अपने कैमरे में कैद किया। इसके बाद ये वीडियो सोशल मीडिया पर वायरल हुआ।सुरक्षा नियमों को तोड़ते हुए अपनी कार को मंत्री के भतीजे ने निकलवाई। यहां मौजूद ग्रामीणों ने खूब खरी खोटी सुनाई। ग्रामीणों रही है। ऐसे में मंत्री का भतीजा रौब दिखा रहा है। इस पूरे मामले में जब मंत्री के भतीजे से मीडिया ने इस पूरे संदर्भ में बातचीत करनी चाही तो कई जवाब नहीं दिया। मीडिया कर्मियों द्वारा पूछे गए सवालों पर माइक आईडी मंत्री भतीजे द्वारा हटाई गई।

महामाई के दरबार में संकल्प लें कि आने वाले 25 साल राज हमारा रहेगा - मुरलीधर राव

मध्यप्रदेश भाजपा के प्रभारी पी मुरलीधर राव ने किया कार्यकर्ता सम्मेलन को संबोधित

पुष्पांजलि टुडे रिपोर्टर
अभिषेक कुशवाह

सिरोंज लोग कहते हैं, सरकार में बहुत साल हो गए अब थक गए। अरे विदेशी लोग सैकड़ों साल नहीं थके, तो हम क्यों थकें। देश हमारा है, हमारा समाज है, हमारी सरकार है तो हम क्यों थकें। इसलिए आज महामाई के दरबार में संकल्प लें कि आने वाले 25 साल राज हमारा है और रहेगा। यह बात भारतीय जनता पार्टी मध्यप्रदेश के प्रभारी पी. मुरलीधर राव ने सिरोंज के महामाई मंदिर परिसर में अयोजित भाजपा कार्यकर्ता सम्मेलन के दौरान कही।भारतीय जनता पार्टी मध्यप्रदेश के प्रभारी श्री राव का शुक्रवार को सिरोंज आगमन हुआ। सबसे पहले पीडब्लूडी चौराहे पर विधायक उमाकांत शर्मा सहित भाजपा नेताओं और कार्यकर्ताओं ने उनका भव्य स्वागत किया। इसके बाद उन्होंने महामाई दरबार में पहुंचकर माई का पूजन किया। कार्यकर्ता सम्मेलन में विधायक उमाकांत शर्मा ने प्रदेश प्रभारी को गदा और महामाई दरबार की तस्वीर भेंट की। इस दौरान उनके साथ मंच पर भाजपा प्रदेश कार्यकारिणी सदस्य राहुल कोठारी, पूज्य संत कल्याणदास जी महाराज, भाजपा जिला अध्यक्ष राकेश जादौन, महामाई मंदिर के प्रधान पुजारी ज्योतिषाचार्य पं. नलिनीकांत शर्मा भी उपास्थित थे।वहीं नगर पालिका अध्यक्ष, जनपद सदस्यों और

मंडल अध्यक्षों ने भी श्री राव का स्वागत सम्मान किया। इस दौरान मुख्य रूप से नगर पालिक अध्यक्ष मनमोहन साहू, पूर्व नगर पालिका अध्यक्ष रमेश यादव, भाजपा जिला उपाध्यक्ष महेंद्र सिंह दांगी, पूर्व अध्यक्ष मार्केटिंग सोसायटी कैलाश शर्मा, जिला पंचायत उपाध्यक्ष दरियाव सिंह कुर्मी, जिला पंचायत सदस्य श्रीमती मंजू नीलम यादव, सिरोंज जनपद पंचायत अध्यक्ष श्रीमती पुष्पा हमीर सिंह यादव, देवपुर मंडल अध्यक्ष झार सिंह दांगी, अध्यक्ष चितावर मंडल चरण सिंह राजपूत, सचिन शर्मा, शिवकुमार भार्गव सहित बड़ी संख्या में स्थानीय कार्यकर्ता शामिल थे।

भारत माता की जयकार करते हुए भाजपा देश की नंबर वन पार्टी बनी–प्रदेश प्रभारी श्री राव ने कार्यकर्ताओं को संबोधित करते हुए कहा कि क्यों रहे हमारा राज, तो हम देश के लिए सोचते हैं, कोई परिवार, खानदान के लिए नहीं सोचते। भ्रष्टाचार के लिए नहीं सोचते। हम राष्ट्र के लिए भारत माता की जय कहने वाली पार्टी के कार्यकर्ता हैं। देश में ऐसी एक ही पार्टी है जो भारत माता की जयकार लगाती हो, केवल भारतीय जानता पार्टी है। मोदी जी, अटल जी या आडवाणी जी सहित कितने ही ब? नेता हों, पहले सब पहले भारत माता की जयकार लगाते हैं, और भारत माता की जयकारा करते हुए ही भाजपा दुनिया की सबसे बड़ी राजनीतिक पार्टी बनी है।

कांग्रेस एक परिवार की जेब में सिमट गई, सिर्फ भाजपा आम व्यक्ति की पार्टी –देश में केवल भाजपा ही कार्यकर्ता आधरित पार्टी है, दूसरी पार्टीया राजे रजवाड़ों और परिवारों की पार्टी हैं, आजादी के लिए लड़ने वाली कांग्रेस भी एक परिवार की जेब में सिमट गई। लेकिन 70 सालों से अगर कार्यकर्ताओं का कोई दल है तो वह केवल भाजपा है, इस तरह उत्तर से पूर्व तक सबमें एक एक कार्यकर्ता जोड़कर आप लोगों की मेहनत से 18 करोड़ मेंबर की पार्टी बन गई है जि? पर हमें गर्व करना चाहिए।

महामाई की सीढ़ी चढ़ते हैं, ऐसे ही भाजपा की सीढ़ी चढ़ते जाइए–.संगत में, पंगत, संकट में साथ रहने वाली भाजपा है। जिसका कोई नहीं उसका उद्धार करने वाली पार्टी भाजपा है, जैसे कोई महामाई के दरबार में आया उसे सहारा मिल गया, वैसे ही भाजपा में आया उसे सब कुछ मिल गया।कई बार होता है कि लोग सोचते मुझको यह नहीं मिला, मुझको वह चाहिए, तो आप चिंता मत करो। जैसे हम महामाई की सीढ़ी चढ़ते जाते हैं, एक दिन सब मिल जाता है। ऐसे ही भाजपा की और चढ़ते जाइए, एक न एक दिन सीढ़ी जरूर मिलेगी। भाजपा में आज का बूथ कार्यकर्ता मेहनत करने पर कल का राष्ट्रीय अध्यक्ष,प्रधानमंत्री तक बन सकता है।

दंदरौआ हादसा के लिए जिम्मेदार कौनः मा क पा

महेन्द्र शर्मा उपसंपादक पुष्पाजली टुडे

भिंड। राजेश शर्मा, जिला सचिव मंडल सदस्य माकपा भिंड से प्राप्त जानकारी अनुसार दंदरौआ मंदिर पर सिय पिय मिलन समारोह का आयोजन किया जा रहा है। दंदरौआ मंदिर से आस्था रखने वाले श्रद्धालु लाखों की संख्या में पधार रहे हैं। 14 नवंबर से 18 नवंबर तक का यह आयोजन रखा गया है। 15 नवंबर को दंदरौआ मंदिर में हादसा हुआ। मुरैना की एक महिला की मृत्यु हो गई। कुछ लोगों के घायल होने की खबर है। उक्त घटना पर दुख व्यक्त करते हुए माकपा के जिला सचिव मंडल के सदस्य सदस्य राजेश शर्मा ने कहा कि सरकार के पास यदि व्यवस्था नहीं है तो लाखों लोगों की भीड़ के आयोजन करने की अनुमति क्यों दी जाती है। माकपा नेता ने कहा कि दंदरौआ में पहली बार लाखों लोगों की भीड़ इकट्ठी नहीं हो रही। 1 वर्ष में 2 ,3 बड़े आयोजन किए जाते हैं। जिसमें लाखों की संख्या में श्रद्धालु आते हैं। खासकर बुढ़वा मंगल को तो लाखों की भीड़ होती ही है। माकपा नेता ने कहा कि प्रदेश के मुख्यमंत्री श्रीशिवराज सिंह चौहान, केंद्रीय मंत्री श्रीज्योतिरादित्य सिंधिया, श्री नरेंद्र सिंह तोमर सहित प्रदेश सरकार के ज्यादातर मंत्री दंदरौआ मंदिर पर दर्शन करने अनेकों बार पधारे हैं। माकपा नेता ने कहा कि हमने 10 वर्ष पहले सरकार से मांग की थी कि ब्लड बैंक, ट्रामा सेंटर, सहित अत्याधुनिक चिकित्सीय उपकरणों से लैस दंदरौआ में एक भव्य बड़ा अस्पताल बनाया जाए। ताकि लाखों लोगों की भीड़ में कोई हादसा होता है तो श्रद्धालुओं को बेहतरीन चिकित्सीय सहायता उपलब्ध कराई जा सके। लेकिन सरकार ने इस ओर कोई ध्यान नहीं दिया। दूसरा सवाल, ददरौआ मंदिर के लिए जो पहुंच मार्ग हैं। जैसे ग्वालियर से बिलेहटी बाया लहार, गोहद चितौरा मो रोड़, मेहगांव से मौ सिहोडा रोड, इतिआदि। इनमें मेहगांव रोड को छोड़कर सभी सिंगल रोड हैं। इन रोड़ों पर शनिवार मंगलवार को इतने वाहन चलते हैं कि अभी तक अनेक दुर्घटना हुई है। कई लोगों की मृत्यु हुई है, कई गंभीर रूप से घायल हुए हैं। सरकार ने दंदरौआ के लिए पहुंच मार्ग बनाने पर कोई ध्यान नहीं दिया। लाखों श्रद्धालुओं की भीड़ जब रोड़ों पर चलती है। तो सिंगल रोडो पर दुर्घटनाएं होती हैं। सरकार ने तत्काल प्रबंध किए हैं। यह अपर्याप्त हैं। प्यास लगने पर कुआं खोदने जैसी बात है। व्यवस्था के नाम पर सिर्फ पुलिस, एंबुलेंस, फायर ब्रिगेड ही दिखती हैं। इस घटना के लिए पूरी तरह से सरकार में बैठे लोग जिम्मेदार हैं।

सम्पादकीय

सच दिखाने का हक

सुप्रीम कोर्ट ने अपने फैसले में कहा है कि हर पत्रकार राजद्रोह के कानून के तहत सुरक्षा का हकदार है। सुप्रीम कोर्ट की एक पीठ ने पत्रकार विनोद दुआ के खिलाफ पिछले साल शिमला में दर्ज राजद्रोह का मामला खारिज करते हुए यह बात कही। विनोद दुआ के खिलाफ यह मामला हिमाचल प्रदेश में एक भाजपा नेता की शिकायत पर दर्ज हुआ था। सर्वोच्च न्यायालय ने इस मामले में पहले ही उनकी गिरफ्तारी पर रोक लगा रखी थी और पिछले अक्तूबर में सुनवाई पूरी करके फैसला सुरक्षित रख लिया था। सन 1962 का केदारनाथ सिंह केस इस तरह के मामलों में नजीर माना जाता है और सुप्रीम कोर्ट ने इस फैसले में भी इसी को आधार बनाया है। केदारनाथ सिंह केस में सुप्रीम कोर्ट ने राजद्रोह कानून को वैध ठहराया था, लेकिन यह कहा था कि अगर कोई पत्रकार सिर्फ सरकार की आलोचना करे, तो इस आधार पर उसके ऊपर राजद्रोह नहीं कायम किया जा सकता। अगर वह हिंसा के लिए उकसाता है, तभी राजद्रोह का मामला बन सकता है। ऐसे स्पष्ट दिशा-निर्देशों के होते हुए भी पत्रकारों के खिलाफ राजद्रोह के मामले दर्ज होते रहते हैं। राज्य सरकारों की ओर से या उनके प्रोत्साहन से ऐसे मामले बढ़ते जा रहे हैं। ऐसे ज्यादातर मामले अदालत में टिक नहीं पाते, लेकिन इनका उद्देश्य, जो कि पत्रकारों को डराना या प्रताड़ित करना है, पूरा हो जाता है। इस फैसले केदो दिन पहले सुप्रीम कोर्ट की एक और पीठ ने एक अन्य मामले में राजद्रोह कानून के दुरुपयोग पर सवाल उठाते हुए कहा था कि इस कानून के दायरे पर फिर से सोचे जाने की जरूरत है। वह मामला आंध्र प्रदेश का था, जहां एक राजनेता और एक चैनल के दो पत्रकारों पर राजनेता का भाषण दिखाने के लिए राजद्रोह का केस दर्ज किया गया है। सुप्रीम कोर्ट की पीठ ने फिलहाल एफआईआर पर कार्रवाई रोकते हुए काफी तल्ख टिप्पणियां की हैं। सुप्रीम कोर्ट केन्यायाधीश ने व्यंग्य में पूछा कि क्या गंगा नदी में उतराती लाशों की खबर करने वाले चैनलों पर राजद्रोह का मुकदमा दर्ज किया गया है? जाहिर है, सुप्रीम कोर्ट के न्यायाधीश शायद इस बात से वाकिफ हैं कि राजद्रोह के कानून का दुरुपयोग पत्रकारों को अपना नियमित काम करने से रोकने और प्रताड़ित करने के लिए किया जा रहा है। सुप्रीम कोर्ट के सामने दो पत्रकारों किशोरचंद्र वांगखेम और कन्हैयालाल शुक्ल की याचिका मौजूद है, जिसमें उन्होंने ब्रिटिश राज के दौर के इस कानून को चुनौती दी है। अगर किसी को किसी पत्रकार से या किसी खबर से कोई शिकायत है, तो लोकतंत्र की परंपराओं केमुताबिक उस स्थिति में कार्रवाई करने के तरीके हैं, लेकिन इन दिनों कुछ ऐसा माहौल बन गया है कि सरकारें या सत्ताधारी पार्टी के लोग सीधे राजद्रोह का मामला कायम कर देते हैं। इस कानून का इतिहास यही बताता है कि इसका दुरुपयोग ही ज्यादा होता आया है। अक्सर पत्रकारों या सामाजिक कार्यकर्ताओं या फिर शांतिपूर्ण आंदोलनकारियों के खिलाफ मामला दर्ज करके उन्हें परेशान किया जाता है। ताजा मामले यह बता रहे हैं कि सुप्रीम कोर्ट इस मसले की गंभीरता को समझ रहा है। अगर आला अदालत इस कानून की समीक्षा करकेइसके दुरुपयोग को रोकने की पहल करती है, तो यह हमारे लोकतंत्र केलिए बहुत बेहतर होगा।

जूनियर भगवान हड़ताल पर:राकेश अचल

डाक्टर जूनियर हो या सीनियर दुनिया में भगवान का दूसरा रूप माना जाता है ,लेकि सोचिये क्या भगवान भी कभी हड़ताल पर जा सकता है ,या इस्तीफा दे सकता है ?तो जबाब है हाँ कम से कम भारत में तो भगवान का दूसरा रूप मने जाने वाले डाक्टर हड़ताल कर सकते हैं.मध्यप्रदेश में जूनियर भगवान यानि जूनियर डाक्टर हड़ताल पर हैं ,वे हाईकोर्ट के निर्देश को भी मानने के लिए तैयार नहीं पूरे भारत की तरह मध्यप्रदेश भी कोरोना की दूसरी लहर की चपेट में हैं. आधिकारिक रूप से मध्यप्रदेश में कोरोना से 8207 लोग मारे जा चुके हैं,14186 सक्रिय मरीज हैं और अब तक 782945 लोग संक्रमण के शिकार हो चुके हैं लेकिन भगवान बने डाक्टरों ने तमाम आरोपों,प्रत्यारोपों के बीच 760 552 लोगों को कोरोना के चंगुल से बाहर निकालने में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका अदा की है .वरिष्ठ चिकित्स्कों के अलावा इस संक्रमणकाल में प्राणरक्षा के इस अभियान में शामिल प्रदेश के तीन हजार जूनियर डाक्टरों ने भी आपदा को अवसर मानकर हड़ताल शुरू कर दी है .
कोरोना और ब्लैक फंगस के कहर के बीच एमपी में जूनियर डॉक्टर तीन दिन से हड़ताल पर थे। करीब तीन हजार डॉक्टरों ने अपनी मांगों को लेकर काम से किनारा कर लिया था। जूनियर डॉक्टर सरकार से मुख्य तौर पर मानदेय बढ़ाने और कोरोना वायरस से संक्रमित होने पर उन्हें और उनके परिवार के लिए मुफ्त इलाज की मांग कर रहे हैं। प्रदेश सरकार ने जूनियर डॉक्टरों को हड़ताल जारी रखने पर सख्त कार्रवाई करने की चेतावनी दी थी।मध्य प्रदेश हाईकोर्ट ने जूनियर डॉक्टरों की हड़ताल को अवैधानिक करार दिया था। हाईकोर्ट ने जुड़ा को निर्देश दिया था कि वो 24 घंटे के भीतर काम पर शीघ्र लौटे। 24 घंटे के भीतर अगर वो काम पर नहीं लौटे है तो सरकार को जूडा पर सख्त कार्रवाई के निर्देश भी दिए थे । काबिलेगौर ये है कि प्रदेश सरकार जूडा की अधिकांश मांगों को मान चुकी है। जूडा की मांग थी कि जूनियर डॉक्टर्स और उनके परिवार के सदस्य अगर कोरोना पीड़ित होते हैं तो उन्हें निशुल्क इलाज की सुविधा प्रदान की जाए जिसे सरकार ने मान लिया था। सरकार की ओर से महाधिवक्ता ने हाई कोर्ट में बताया कि जूडा की अधिकांश मांगें मान ली गई हैं लेकिन जूनियर डाक्टरों ने हाईकोर्ट की सुनी और सरकार की,अब सरकार के सामने दुविधा है कि वो क्या करे सरकार हड़ताली डाक्टरों को बर्खास्त कर सकती है लेकिन सवाल ये है कि फिर नए डाकटर कहाँ से आएंगे रातों-रात तो डाक्टरों की भर्ती हो नहीं सकती,फिर डाक्टर हैं ही कहाँ पहले से प्रदेश और देश में डाक्टरों की भारी कमी है . जूनियर भगवानों की मांगों से हमारा कोई विरोध नहीं है.हमारा विरोध हड़ताल से भी नहीं है ,हमें यानि आम जनता को तकलीफ इस बात की है कि जूनियर भगवानों ने अपनी मांगें मनवाने के लिए जो समय चुना है वो गलत है. लगता है कि जूनियर डाकटर हड़ताल नहीं बल्कि सरकार को ब्लेकमेल कर रहे हैं .कायदे से डाक्टरी का पेशा ऐसा है जिसमें हड़ताल की कोई सुविधा होना ही नहीं चाहिए.हड़ताल एक मौलिक अधिकार है ,संवैधानिक अधिकार नहीं .कुछ सेवाएं ऐसी हैं जिनमें हड़ताल कर दी जाये तो मनुष्यता खतरे में पड़ सकती है . आपको याद होगा कि हमारे सरकारी अस्पतालों में पहले से कामबाढ़ है,कोरोना और ब्लैक फंगस जैसे असाध्य रोगों ने सरकारी अस्पतालों की कमर तोड़ रखी है .ऊपर से जूनियर डाक्टर हड़ताल पर हैं. इस आपात स्थिति में वरिष्ठ डाक्टर कितने दिन स्थिति को सम्हाल सकते हैं ?मध्यप्रदेश सरकार ने पिछले दिनों ही प्रदेश में किल कोरोना नाम का अभियान चलाय था,इस अभियान की रीढ़ में ये भगवान ही हैं लेकिन ये तो हड़ताल पर चले गए.अब अभियान का दम तोड़ना तय है .विषम परिस्थिति में सब जानते हैं कि सरकार ही झकेगी ,भगवान नहीं. वे तो जहां चाहेंगे वहां जाकर पनि रोजी कमा लेंगे लेकिन सरकार उनका विकल्प रातों-रात खड़ा नहीं कर सकती। मानवता का तकाजा है कि जूनियर भगवान तत्काल अपने काम पर लौटें और सरकार पर दबाव बनाने के लिए जापानी तरिके इस्तेमाल करें ताकि न तो मनुष्यता का नुक्सान हो और न उनके गौरवशाली पेशे पर आंच आये .कोई माने या न माने आज भी देश-दुनिया में डाक्टरों के साथ अभद्रता और मारपीट की कुछ घटनाओं को छोड़कर डाक्टरों को भगवान का दूसरा रूप ही माना जाता है लेकिन भगवान अपने इस रूप-स्वरूप का बेजा फायदा उठाने लगे हैं. निजी क्षेत्र में तो उन्होंने लूट मचा रखी है ,सरकारी क्षेत्र में भी उन्हीं की दादागीरी चलती है. फिर भी वे हड़ताल का अमोघ अस्त्र चलाने से बाज नहीं आते. मध्यप्रदेश सरकार जैसे भी हो इन जूनियर भगवानों को मनाये अन्यथा ये आग प्रदेश से बाहर भी फ़ैल सकती है. क्योंकि आपदा में अवसर सभी को नजर आ रहा है. मेरा सुझाव है कि हालात मामूल होने के बाद ऐसी कोई व्यवस्था अवश्य की जाये जहाँ पहले तो डाक्टरों को हड़ताल की सुविधा ही न दी जाये और अगर ऐसी कोई सूरत बने तो निजी क्षेत्र में काम करने वाले तमाम डाक्टरों को क़ानून के जरिये सरकारी अस्पतालों में काम करने के लिए बाध्य किया जाये .हालाँकि ऐसा कर पाना कठिन है लेकिन कोशिश करने में क्या जाता है ?

-राकेश अचल

कोरोना और ब्लैक फंगस के कहर के बीच एमपी में जूनियर डॉक्टर तीन दिन से हड़ताल पर थे। करीब तीन हजार डॉक्टरों ने अपनी मांगों को लेकर काम से किनारा कर लिया था। जूनियर डॉक्टर सरकार से मुख्य तौर पर मानदेय बढ़ाने और कोरोना वायरस से संक्रमित होने पर उन्हें और उनके परिवार के लिए मुफ्त इलाज की मांग कर रहे हैं। प्रदेश सरकार ने जूनियर डॉक्टरों को हड़ताल जारी रखने पर सख्त कार्रवाई करने की चेतावनी दी थी।मध्य प्रदेश हाईकोर्ट ने जूनियर डॉक्टरों की हड़ताल को अवैधानिक करार दिया था।

बढ़ते भाव और भोजन से नदारद होती दाल: राकेश दुबे

कोरोना दुष्काल और सरसो के तेल की बढ़ी कीमतों की मार झेल रहे आम आदमी को राहत मिलने की उम्मीद नहीं दिखाई दे रही है। देश में दलहन का उत्पादन घटने से दाल की कीमतों में बढ़ोतरी की आशंका है। भारतीय दलहन एवं अनाज संघ (आई पी जी ए) के अनुसार, इस वर्ष दाल का उत्पादन घट सकता है। कोरोना के कारण इस फसल वर्ष में दलहन फसलों की बुआई पर किसानों का जोर कम रहा है। इसके चलते देश में इस साल मसूर, चना और अन्य दालों सहित, दालों की कमी का सामना करना पड़ सकता है। इस साल अरहर के उत्पादन में करीब 10 लाख टन की कमी हो सकती है। कृषि मंत्रालय की वेबसाइट तीसरे अग्रिम अनुमान के जो आंकड़े दिखा रही ई उसके अनुसार, फसल वर्ष 2020-21 के लिए अरहर का उत्पादन लगभग7 लाख टन और उड़द के 5.20 लाख टन कम होने की उम्मीद है। इसके साथ ही खरीफ का कुल उत्पादन 2.12 मिलियन टन कम रहने की उम्मीद है। यानी देश में दाल का उत्पादन घटने वाला है। कमोडिटी विशेषज्ञों का कहना है कि यह दाल की महंगाई को और बढ़ाने का काम करेगा। आने वाले महीनों में दाल की कीमतों में बड़ा उछाल आ सकता है अगर समय रहते कदम नहीं उठाया गया। आई पी जी ए के उपाध्यक्ष बिमल कोठारी ने कहा कि हमने सरकार को आपूर्ति बढ़ाने का सुझाव दे दिया है। उन्होंने बताया कि पिछले कुछ साल से दाल को लेकर लंबी अवधि को ध्यान में रखकर कोई पॉलिसी नहीं है। उन्होंने कहा कि एसोसीएशन ने सरकार से दलहन का आयात का फ्री करने का आग्रह किया है लेकिन इस शर्त पर की आयातित दाल की न्यनूतम लैंडिंग कीमत न्यूनतम समर्थन मूल्य (एमएसपी) से अधिक हो। आई पी जीए के अनुसार, वित्त वर्ष 2015-16 के मध्य से देश में दलहन का उत्पादन बढ़कर 23 मिलियन टन हो गया है। हालांकि, मांग 25-26 मिलियन टन है। इस कमी को पूरा करने के लिए लगभग 2.5 मिलियन टन दलहन का आयात हर साल किया जाता है। साथ ही हमारी मांग हर साल 10 लाख टन बढ़ रही है। इस कमी को पूरा करने के लिए सिर्फ आयात पर निर्भरता करना ठीक नहीं है। देश में दलहन का उत्पादन बढ़ाने की जरूरत है लेकिन ऐसा नहीं हो पा रहा है। आई पी जीए के अनुसार, दाल के खुदरा कीमत और थोक और पूर्व-मिल दरों से औसतन 50 रुपये प्रति किलोग्राम से अधिक का अंतर है। वर्तमान समय में जब अरहर दाल का औसत थोक मूल्य लगभग 95 रुपये प्रति किलो, उड़द दाल का 110 रुपये प्रति किलो और मूंग दाल का 92 रुपये प्रति किलो है। वहीं, खुदरा मूल्य की बात करें तो अरहर की दाल के लिए 130 रुपये प्रति किलो, उड़द की दाल के लिए 160 रुपये प्रति किलो और मूंग की दाल के लिए 115 रुपये प्रति किलो उपभोक्ता को चुकाने पड़ रहे हैं।कम उत्पादन का अनुमान और वास्तविकता में बढ़ रही मांग के कारण देश में नये संकट आते दिख रहे हैं। सरकार को फौरन कुछ करना चाहिए।

हमें जनगणना की जरूरत क्यों है

प्रति व्यक्ति सकल घरेलू उत्पाद (जीडीपी) घटकर 'एक्स' फीसदी हो गया है; 18 से 44 आयु-वर्ग में जोखिम का खतरा 'वाई' फीसदी रहता है; उत्तर प्रदेश में 'जेड' लाख ग्रामीणों को अब तक बिजली की सुविधा नहीं मिल सकी है- इस तरह की सुर्खियां आप रोजाना अखबारों में पढ़ते हैं। मगर क्या कभी आपने यह सोचा है कि भला कैसे कोई लेखक 'एक्स', 'वाई' या 'जेड' जैसे सटीक आंकड़े जान लेता है, जबकि इसके लिए संबंधित इलाके के हर व्यक्ति की गिनती भी नहीं की जाती? दरअसल, संबंधित इलाके, राज्य अथवा देश के कुछ लोगों से जानकारियां इकट्ठा करके यह आकलन किया जाता है, और आबादी के इस छोटे या सैंपल डाटा को दिखाने के लिए जिस बड़े आंकड़े को आधार बनाया जाता है, वह है देश की दशकीय जनगणना। 19वीं सदी के मध्य तक ईस्ट इंडिया कंपनी ने भारत पर करीब-करीब पूरा कब्जा कर लिया था। 1858 में, ब्रिटिश संसद में भारत सरकार अधिनियम, 1858 पारित किया गया, जिसके तहत भारतीय उपनिवेश का नियंत्रण कंपनी से लेकर ब्रिटिश राजशाही को सौंप दिया गया। मगर शासन स्थापित करने के लिए ब्रिटिश सरकार को लोगों और उनकी रिहाइश को लेकर विस्तृत और विश्वसनीय डाटा की जरूरत थी। आखिरकार, वह कैसे तय कर सकती थी कि उनकी महारानी ने भारत पर अपना प्रभुत्व कायम रखने के लिए जो अमानवीय टैक्स लगाया है, वह देश के हर निवासी से वसूला जाए?
औपनिवेशिक सत्ता को पता था कि क्या करना है। वह 1801 से ही इसे अपने यहां कर रही थी। इस कवायद को 'सेन्सस', यानी जनगणना कहा गया, जो लैटिन शब्द 'सेंसेर' से निकला है। रजिस्ट्रार जनरल ऐंड सेन्सस कमिश्नर के कार्यालय बनाए गए और 1881 में भारत में पहली बार जनगणना हुई। बेशक जनगणना का मूल उद्देश्य जबरन वसूली की मंशा को पूरा करना था, लेकिन इसका लाभ कई विभागों को मिला। शिक्षा विभाग ने प्राथमिक शिक्षा की अपनी योजना बनाने में इसका इस्तेमाल किया। लोक-निर्माण विभाग ने इसका उपयोग सड़क नेटवर्क की योजना बनाने में किया। बिजली संयंत्र स्थापित करने और ग्रिड तक ट्रंक लाइन लगाने के लिए इसका इस्तेमाल किया गया। और, रेलवे ने पटरियां बिछाने की योजना बनाने में इसका उपयोग किया। जनगणना के आंकड़ों ने जैसे ही बुनियादी ढांचे को प्रभावित किया, लोगों की बड़े पैमाने पर आवाजाही बढ़ गई। बंबई, कलकत्ता और मद्रास जैसे बंदरगाह वाले शहरों का तेज विकास हुआ, क्योंकि रेल नेटवर्क से उन्हें निकट और सुदूर इलाकों से जोड़ा गया। औपनिवेशिक राज की कई परंपराएं 1947 के बाद भी कायम रहीं। सौभाग्य से जनगणना भी उनमें से एक है। अमूमन पांच या दस साल पर होने वाली जनगणना को राष्ट्रीय संसाधनों के इस्तेमाल के लिए अनिवार्य माना जाता है। अमेरिका दशक के अंत में जनगणना करता है, जो 2020 में कोविड-19 के बावजूद पूरा किया गया, तो चीन ने भी पिछले साल अपनी दशकीय जनगणना पूरी की है। भारत में पिछली बार 2010 में गिनती शुरू हुई थी, जो 2011 में पूरी हुई। अपने यहां इसका बुनियाद परिवार सर्वे है। मगर यह सर्वे पिछले साल जैसे मृतप्राय~ रहा। अब तो हम 2021 के मध्य में आ चुके हैं, लेकिन जनगणना का अब तक कोई संकेत नहीं मिल रहा है। सवाल है, 2021 की जनगणना की परवाह आखिर हमें क्यों नहीं करनी चाहिए? पहली वजह, अब हम यह जानते हैं कि सरकार ने कोविड-19 वैक्सीन का जितना ऑर्डर दिया, वह आबादी के घनत्व को ध्यान में रखकर नहीं दिया जा सका था। जनगणना से न सिर्फ हमें यह पता होता है कि देश में कितने लोग रहते हैं, बल्कि उनकी उम्र, लिंग, मूल निवास, परिवार और शिक्षा का स्तर भी हम जान लेते हैं। वर्ष 2011 की जनगणना में ऐसे सभी विवरण मौजूद हैं, जनगणना होने पर 2021 में भी ये हमारे पास होते। दूसरा कारण, 2026 में अगली परिसीमन प्रक्रिया के खत्म होने पर लोकसभा में राजनीतिक संतुलन बदल जाएगा। यदि प्रतिनिधित्व का आधार जनसंख्या है, तो जिन राज्यों में जनसंख्या प्रबंधन की हालत खस्ता है (विशेष रूप से हिंदी पट्टी में), संसद में उनकी नुमाइंदगी काफी बढ़ जाएगी। दक्षिण व पश्चिम भारत को नुकसान होगा। जाहिर है, परिसीमन के लिए भी हमें जनगणना के तमाम पहलुओं पर गौर करना होगा। तीसरा, संघ और राज्यों के बीच कर राजस्व के बंटवारे की वित्त आयोग निगरानी करता है। वस्तु एवं सेवा कर, यानी जीएसटी इस वितरण को और विवादास्पद बना देता है। राजस्व के निर्धारण में भी जनसंख्या अहम भूमिका निभाती है। चौथा, देश में सांप्रदायिक राजनीति जारी है। कई नेता यह आरोप लगाते हैं कि बहुसंख्यक आबादी घट रही है और अल्पसंख्यकों की जनसंख्या तेजी से बढ़ रही है। जमीनी हकीकत जानने के लिए जनगणना एक अखिल भारतीय प्रक्रिया है। यह न सिर्फ हमें आबादी की संख्या बताती है, बल्कि जन्म व मृत्यु दर, प्रजनन दर, सकल और शुद्ध जन्म दर, नवजात मृत्यु दर और बाल मृत्यु दर जैसे आंकड़े भी हमारे सामने रखती है। ध्रुवीकरण की राजनीति को जनगणना बेपरदा कर सकती है। पांच, आर्थिक गतिविधियों को फिर से शुरू करने के लिए बुनियादी ढांचे में बड़े पैमाने पर निवेश की बात चल रही है। आखिर उन निवेशों का आधार क्या होगा? इससे जुड़े कई सवाल हैं, जैसे- अहमदाबाद से मुंबई के लिए बुलेट ट्रेन क्या एक अच्छी योजना है? किन रेल मार्गों को और मजबूत करने की दरकार है? सड़क, नदी, समुद्री और हवाई परिवहन के बुनियादी ढांचे को किस तरह से सुधारा जाना चाहिए? किसानों को अपनी उपज पर पर्याप्त फायदा कैसे मिलेगा? सबसे अच्छा मॉडल क्या है? जनगणना इन तमाम सवालों का उचित जवाब दे सकती है, जिससे योजनाकारों को यह पता चलेगा कि इन सबसे कौन लाभान्वित होगा, कितना होगा और किस कीमत पर होगा? और आखिरी कारण, सामाजिक जीवन में टीवी जिस तरह से शामिल है, उसे देखते हुए क्या हम यह कह सकते हैं कि बार्क रेटिंग चैनलों या टेलीविजन शो के देखने का असल पैटर्न बताती है? क्या 2021 में ग्रामीण दर्शक वाकई शहरी दर्शकों से ज्यादा हो जाएंगे? व्यूइंग पैनल द्वारा बार्क डाटा जमा करती है, और जनगणना के आधार पर रेटिंग तय करती है। जब जनसंख्या का आंकड़ा ही गलत है, तो रेंटग क्या सही हो सकती है?

जान से ज्यादा कीमती नहीं परीक्षा

बारहवीं कक्षा की बोर्ड परीक्षा (विशेषकर सीबीएसई) को रद्द करने का फैसला इस समय उपलब्ध सभी विकल्पों में सबसे अच्छा माना जाएगा। यह अत्यंत साहसिक निर्णय है, जो देश की संवेदनशीलता को भी दिखाता है। हम सब जानते हैं कि 12वीं के तकरीबन 1.5 करोड़ परीक्षार्थियों में से कई अगले दसेक वर्षों में देश के विभिन्न स्थानों पर ऊंचे पदों पर निर्णय लेने वाली स्थिति में होंगे। इसलिए उनका भविष्य सुरक्षित रहना ही चाहिए। चूंकि अभी हम कोरोना रूपी अदृश्य शत्रु के खिलाफ युद्ध लड़ रहे हैं, जिसका चरित्र अब भी पूरी तरह से सुलझा नहीं है, इसलिए बच्चों की सुरक्षा से बड़ा कोई दूसरा लक्ष्य अभी हो नहीं सकता। हां, बच्चों को यह चिंता जरूर होगी कि अगर उन्होंने सुनिश्चित परंपरागत परीक्षा नहीं दी, तो उन्हें संभवत~ दिक्कतों का सामना करना पड़ेगा। हो सकता है कि विश्वविद्यालयों में प्रवेश में उन्हें कठिनाई हो, या प्रतियोगी परीक्षाओं में उन्हें मुश्किल पेश आए। लेकिन धीरे-धीरे बच्चे समझ जाएंगे कि सुरक्षा के सामने ये सभी कठिनाइयां छोटी हैं, और इस समय का उपयोग करने के लिए कई ऐसे विकल्प उनके पास हैं, जिनके बारे में उन्हें मिल-बैठकर चर्चा करनी चाहिए। पिछले कुछ महीनों में देश किन कठिन परिस्थितियों से गुजरा है, यह हर कोई जानता है। कोरोना के कारण लोग दुखी हुए, परिवार कष्ट में रहे और समाज परेशान हुआ। हमने नकारात्मकता भी देखी, जहां कुछ लोग केवल आलोचक की भूमिका में रहे और सकारात्मकता को भी सराहा, जहां व्यक्तिगत, सामाजिक और संस्थागत रूप में लोगों ने एक-दूसरे की मदद की। इससे सबक लेते हुए बच्चों को अपनी चिंता से बाहर निकलना चाहिए। उन्हें न सिर्फ दूसरों की मदद करनी चाहिए, बल्कि नकारात्मक प्रवृत्तियों से भी बाहर निकलने की कोशिश करनी चाहिए। इस समय का सदुपयोग उन्हें यह सीखने के लिए करना चाहिए कि अचानक सामने आई बड़ी से बड़ी समस्या का किस तरह से सामना किया जाता है? यह 'कॉन्फ्लिक्ट रिजोल्यूशन' के गुर सीखने का समय है। तनाव, दबाव का बखूबी सामना करने का कौशल बच्चों को अभी सीखना चाहिए। उन्हें सरकार के इस फैसले का सार समझना चाहिए। हालांकि, उनके पास यह विकल्प भी है कि हालात सामान्य होने के बाद वे परीक्षा दे सकते हैं, इसलिए अभी ज्यादा तनाव पालने का कोई मतलब नहीं है। अब सवाल यह है कि बच्चों में सकारात्मकता आएगी कैसे? कई बच्चे यह मानते हैं कि अब तक वे पाठ्य-पुस्तक और स्कूली परीक्षाओं के दायरे में ही आगे बढ़े हैं। जीवन में पहली बार वे इस बंधन से बाहर निकल सकते हैं। जैसे, अगले कुछ महीनों का वक्त अलग-अलग विधा की किताबें पढ़ने में लगाया जा सकता है। विज्ञान के विद्यार्थी चाहें, तो समाज विज्ञान की किताबें पढ़ सकते हैं। शैक्षणिक डिग्री बेशक जरूरी हैं, लेकिन इतिहास, विरासत, भूगोल, सामाजिक संबंध आदि की समझ भी जरूरी है। वैसे भी, बंधन मुक्त पढ़ना काफी आनंददायक होता है, और 12वीं के बच्चों के पास संभवत~ जीवन का यह पहला मौका होगा, जब वे बिना किसी बंधन के अलग-अलग विधा की किताबें पढ़कर आनंद का अनुभव कर सकते हैं। बच्चों को 'लाइफ लॉन्ग लर्निंग' का महत्व भी सीखना चाहिए। आज पूरा विश्व मानता है कि इसके बिना कोई दूसरा रास्ता नहीं है। परीक्षाएं हम भले ही पास कर लें, लेकिन जो ज्ञान हम प्राप्त करेंगे, वह अगले दो-चार साल बाद हमारे जीवन में कितना काम आएगा, यह समझ आवश्यक है। जैसे, 40-50 साल पहले यदि कोई टाइप राइटर सीख लेता था, तो वह कौशल कई वर्षों तक उसके काम आता था, लेकिन आज हमें यह नहीं पता कि जो कंप्यूटर हमारे हाथों में है, उसका सॉफ्टवेयर छह महीने तक भी हमारे काम का होगा अथवा नहीं? बच्चों को यह समझना चाहिए कि परिवर्तन की यह गति लगातार बढ़ती जाएगी। उन्हें अपने कौशल को निखारते हुए हमेशा कुछ-न-कुछ नया सीखना होगा, तभी उनका जीवन आगे बढ़ सकेगा। बच्चों के पास अभी यह जानने का मौका है कि इस कौशल-विकास की प्रक्रिया में वे नया क्या और कैसे सीख सकते हैं? बच्चों को इन दिनों यह भी देखा होगा कि समाज कैसे इ्एक-दूसरे की मदद कर रहा है। सहयोग और सेवा की यह भावना अदृश्य जरूर है, लेकिन महत्वपूर्ण है। हम यह साफ-साफ देख सकते हैं कि जो देश अनुशासन की बात करता है, ज्ञान की वकालत करता है, बच्चों के लिए संवेदनशील होता है और उनके विकास के लिए रास्ता तैयार करता है, वही तरक्की करता है। हमें यह सीख जीवनपर्यंत याद रखनी चाहिए। हमें न सिर्फ साथ-साथ रहना सीखना होगा, बल्कि सभी संस्कृतियों और देशों के बारे में भी जानना होगा। बोर्ड परीक्षा रद्द होने के बाद अब आंतरिक मूल्यांकन के आधार पर परिणाम घोषित किए जाएंगे। इसको लेकर भी हमारे बच्चों को बिल्कुल चिंता नहीं करनी चाहिए। सीबीएसई और अन्य सभी बोर्डों के पास ऐसे विशेषज्ञ हैं, जो जानते हैं कि इस विपरीत परिस्थिति में क्या किया जा सकता है? पहले भी कई बार ऐसा हुआ है, जब किसी न किसी कारण से परीक्षा की कॉपियां नष्ट हो गईं। तब, वैज्ञानिक आधार पर बनाए गए तरीकों से बच्चों का मूल्यांकन किया गया। हमारे विशेषज्ञ इस बार भी ऐसा कोई रास्ता मिल-बैठकर निकाल लेंगे। मुमकिन है कि विश्वविद्यालय की प्रवेश परीक्षा के नियमों में भी आवश्यक संशोधन हो। इसलिए सभी प्रकार नकारात्मकता को पीछे छोड़ते हुए बच्चे नए-नए ज्ञान अर्जित करें और सकारात्मक दिशा में आगे बढ़ें। हमें यह भी समझना होगा कि शिक्षा की गतिशीलता ही उसकी उपयोगिता निर्धारित करती है और मानव को उसके लक्ष्यों की ओर ले जाती है। हमारी नई शिक्षा नीति में इस तरह की बातों का ख्याल रखा गया है। अगर यह लागू हो चुकी होती, तो बच्चों का सतत मूल्यांकन हम आसानी से कर पाते। मगर दुर्भाग्य है कि हमारे सभी स्कूलों में ऐसी व्यवस्था नहीं है। अगर पूरे देश में उचित अनुपात में शिक्षक हों, समाज का व्यवस्था पर विश्वास हो और अध्यापकों को पढ़ाने के अलावा किसी दूसरे कामों में न लगाया जाए, तो निश्चय ही अध्यापकों का मूल्यांकन सभी को स्वीकार्य होगा। सिद्धांत यही कहता है कि बच्चे का असल मूल्यांकन वही कर सकता है, जो उसे पढ़ाता हो। उम्मीद है, मौजूदा असामान्य परिस्थितियों से सबक लेते हुए हम भविष्य के ऐसे हालात का सामना करने के लिए तैयार हो सकेंगे।

सेवा के नाम पर जबरन वसूली

भारत में दुनिया के सबसे ज्यादा गरीब हैं और यह दुनिया की सबसे निजीकृत स्वास्थ्य व्यवस्थाओं में से एक है। भारत की राज्य और केंद्र सरकारें मिलकर स्वास्थ्य सेवा पर सकल घरेलू उत्पाद का 1.29 प्रतिशत से अधिक खर्च नहीं करतीं, जो कम आय वाले देशों की तुलना में भी बहुत कम है। यहां अमीर देशों को भूल ही जाइए, जो कम से कम सात प्रतिशत खर्च करते हैं। कोविड जैसी महामारी के दौरान यह उम्मीद थी कि केंद्र सरकार 2022 तक सार्वजनिक स्वास्थ्य व्यय को सकल घरेलू उत्पाद का 2.5 प्रतिशत तक बढ़ाने के लिए अपनी राष्ट्रीय स्वास्थ्य नीति की प्रतिबद्धता को लागू करना शुरू कर देगी, पर यथार्थ इससे कोसों दूर है। यहां तक कि सरकार के आर्थिक प्रोत्साहन पैकेज 2020 में सार्वजनिक स्वास्थ्य (पीपीई, परीक्षण आदि के लिए 15 हजार करोड़ रुपये को छोड़कर) के लिए कुछ भी नहीं था और वित्त वर्ष 2021-22 में स्वास्थ्य बजट और भी कम हो गया (यदि हम टीकों की खरीद-राशि को निकाल लें)। यह सवाल उठता है ~ अगर सरकारें निजी क्षेत्र पर इतनी निर्भर हैं, तो जब निजी क्षेत्र का तौर-तरीका अनैतिक हो जाए, तब क्या सरकारों के पास कोई सहारा है? अधिकांश भारत में न तो केंद्र और न ही राज्य और न नागरिकों के पास इस तरह के लालच के खिलाफ कोई सहारा है। स्वास्थ्य देखभाल संविधान की राज्य सूची में है और भारत के केवल 11 राज्यों व सभी केंद्र शासित प्रदेशों (दिल्ली को छोड़कर) ने क्लिनिकल प्रतिष्ठान (पंजीकरण और विनियमन) अधिनियम, 2010 (सीईए) को अधिनियमित किया है। इस क्लिनिकल प्रतिष्ठान (केंद्र सरकार) नियम 2012 के अनुसार, नैदानिक प्रतिष्ठान दी जाने वाली हर प्रकार की सेवा के लिए प्रभारित दरों और एक विशिष्ट स्थान पर उपलब्ध सुविधाओं को प्रदर्शित करेंगे, पर दिल्ली में ही कोई ऐसा नहीं करता। यदि आप पहले से लैपटॉप की कीमत नहीं जानते हों, तो क्या लैपटॉप खरीदेंगे? नैदानिक प्रतिष्ठान राज्य सरकारों के परामर्श से केंद्र सरकार द्वारा जारी दरों की श्रेणी के अनुसार, हर प्रक्रिया के लिए दर की मांग करेंगे। मानक का अनुपालन सुनिश्चित करेगा कि सेवाओं के अनावश्यक संचालन से बचा जाए। पर सच यह है, ज्यादातर निजी अस्पताल मर्जी से पैसे वसूलते हैं। अधिनियम में यह भी है कि यदि पंजीकरण की शर्तों का पालन नहीं किया जाता, तो पंजीकरण रद्द करना, किसी भी समय संभव है। पर अगर भारत के अधिकांश राज्यों में यह कानून ही नहीं है, तो अस्पतालों/सेवा प्रदाताओं को मान्यता रद्द होने का क्या डर होगा? जब राज्य में सीईए लागू नहीं है, तब मरीजों का क्या होता है? जैसे-जैसे महामारी फैलती गई, भारत सरकार से निजी अस्पतालों में स्वास्थ्य देखभाल की बढ़ती लागत को नियंत्रित करने की मांग की गई। भारत में सार्वजनिक अस्पतालों की तुलना में लगभग दोगुने निजी अस्पताल हैं। देश की ग्रामीण आबादी के लगभग 85.9 प्रतिशत और शहरी आबादी के 80.9 प्रतिशत लोगों को स्वास्थ्य बीमा का लाभ नहीं मिलता। अधिकांश वेंटिलेटर केवल निजी अस्पतालों में उपलब्ध हैं और उसमें भी वे केवल सात राज्यों में केंद्रित हैं। ये सब कमियां हताश रोगियों को निजी स्वास्थ्य सेवा की ओर जाने के लिए मजबूर करती हैं। पश्चिम बंगाल ने घोषणा की कि कोविड-19 मामलों को संभालने वाले सार्वजनिक और निजी अस्पतालों में इलाज पूरी तरह से मुफ्त होना चाहिए, पर अधिकांश बड़े कॉरपोरेट निजी अस्पतालों ने असमर्थता जता दी। नई दिल्ली में निजी अस्पतालों को 60 प्रतिशत बेड रियायती दर पर देने को कहा गया, लेकिन तब भी कई रोगियों को बिना सब्सिडी वाले बिस्तर लेने के लिए मजबूर किया गया। बेंगलुरु, मुंबई और हैदराबाद जैसे शहरों के प्रशासन ने निजी अस्पतालों के खिलाफ सफलतापूर्वक कार्रवाई की है, जो अब उन रोगियों को रिफंड कर रहे हैं, जिनसे कोविड-19 उपचार के लिए अधिक शुल्क लिए गए थे। तेलंगाना ने ज्यादा वसूली की पहचान आसान बनाने के लिए मदबद्ध बिलिंग अनिवार्य कर दी है। महाराष्ट्र ने अपनी एकीकृत राज्य स्वास्थ्य बीमा योजना में निजी अस्पतालों की संख्या को दोगुना कर 1,000 कर दिया है और इसे एक लाख रुपये या उससे कम की वार्षिक आय वाले परिवारों तक बढ़ा दिया है। राज्य ने निजी अस्पतालों में कोविड और गैर-कोविड उपचार की लागत पर एक दर कैप भी लागू की है, यह एक उपाय है, जिसे पूरे देश में आजमाया जा रहा है। निजीकृत स्वास्थ्य देखभाल की कीमतों को विनियमित करना केंद्र सरकार के लिए आसान होना चाहिए। लेकिन सरकार ने अब तक व्यापक स्तर पर कुछ भी करने की कोशिश नहीं की है, हालांकि राज्य सरकारें महामारी में रेट कैपिंग के साथ प्रयोग कर रही हैं। दिल्ली में गृह मंत्रालय के प्रवक्ता ने कहा कि एक समिति ने दिल्ली के 350 निजी अस्पतालों में दरों पर लगाम की सिफारिश की थी ~ कोविड-19 रोगियों के लिए प्रतिदिन 10,000 रुपये, जिन्हें बिस्तर और व्यक्तिगत सुरक्षा उपकरण (पीपीई) की आवश्यकता होती है। गहन देखभाल इकाई (आईसीयू) में भर्ती होने की जरूरत वाले लोगों के लिए 15,000 रुपये; और वेंटिलेटर सपोर्ट की जरूरत वाले लोगों के लिए 18,000 रुपये तय किए गए थे।

ब्रेट ली ने बताया, वर्ल्ड टेस्ट चैंपियनशिप के फाइनल में भारत और न्यूजीलैंड में से किसका पलड़ा रहेगा भारी

नई दिल्ली। वर्ल्ड टेस्ट चैंपियनशिप के फाइनल की उल्टी गिनती शुरू हो चुकी है। भारत और न्यूजीलैंड के बीच फाइनल मैच 18 से 22 जून तक साउथैम्पटन में खेला जाएगा। कई पूर्व दिग्गज खिलाड़ी डब्ल्यूटीसी के फाइनल को लेकर भविष्यवाणी कर चुके हैं। इसी कड़ी में अब ऑस्ट्रेलिया के पूर्व तेज गेंदबाज ब्रेट ली का नाम भी जुड़ गया है। ली का मानना है कि फाइनल मुकाबले में न्यूजीलैंड का पलड़ा भारी रहने वाले हैं। इसके पीछे की वजह बताते हुए ली ने कहा कि कीवी टीम स्विंग गेंदबाजी के अनुकूल परिस्थितियों में खेलने की आदी है और इसका फायदा उनको मिल सकता है। ली ने आईसीसी की आधिकारिक वेबसाइट से कहा, मुझे लगता है कि दोनों टीमें एक जैसी हैं। मैं हालांकि न्यूजीलैंड के स्वदेश में इसी तरह की परिस्थितियों में खेलने के बारे में सोच रहा हूं। परिस्थितियां तेज गेंदबाजों, स्विंग गेंदबाजों के अनुकूल हो सकती है। इसलिए यहां मुझे लगता है कि कीवी टीम को फायदा हो सकता है। जहां तक बल्लेबाजी का सवाल है तो दोनों टीमों के पास ऐसे बल्लेबाज हैं जो स्विंग गेंदबाजी को खेल सकते हैं। लेकिन मुझे लगता है कि गेंदबाजों की भूमिका अहम होगी और जो भी टीम अच्छी गेंदबाजी करेगी वह फाइनल में विजेता बनेगी।

अक्षर पटेल ने बताया साउथम्पटन में

तीन दिन क्या नहीं कर सकेगी टीम इंडिया

इंटरनेशनल क्रिकेट काउंसिल (आईसीसी) वर्ल्ड टेस्ट चैंपियनशिप (डब्ल्यूटीसी) के फाइनल और इंग्लैंड के खिलाफ पांच मैचों की टेस्ट सीरीज खेलने के लिए भारतीय क्रिकेट टीम साउथम्पटन पहुंच चुकी है। भारत को इंग्लैंड दौरे पर न्यूजीलैंड के खिलाफ 18 जून से डब्ल्यूटीसी का फाइनल मैच खेलना है और इसके करीब डेढ़ महीने बाद 4 अगस्त से मेजबान टीम के खिलाफ पांच मैचों की टेस्ट सीरीज खेलनी है। टीम इंडिया 3 जून को साउथम्पटन पहुंची और तीन दिन तक कोई खिलाड़ी आपस में मिल नहीं सकेंगे। टीम इंडिया के स्पिनर अक्षर पटेल ने इस बात का खुलासा किया है। अक्षर पटेल ने कहा कि डब्ल्यूटीसी फाइनल के लिए एजिस बाउल मैदान में प्रैक्टिस करने से पहले टीम इंडिया को तीन दिन के कड़े आइसोलेशन से गुजरना होगा, जिसमें खिलाड़ियों को एक-दूसरे से भी मिलने की इजाजत नहीं होगी। भारतीय टीम रवाना होने से पहले मुंबई में 14 दिन तक आइसोलेशन में रही थी और अभी वह कम ?समय के दूसरे आइसोलेशन में है। भारतीय क्रिकेट कंट्रोल बोर्ड (बीसीसीआई) ने भारतीय टीम की चार्टर्ड फ्लाइट से ट्रैवल के दौरान का एक वीडियो पोस्ट किया है जिसमें खिलाड़ियों से बात की गई है। अक्षर ने इस वीडियो में कहा, मैंने बहुत अच्छी नींद ली। अब हमें आइसोलेशन में रहना है। हमें बताया गया है कि तीन दिन तक एक-दूसरे से भी नहीं मिल सकते हैं, तो हम इतने दिनों तक आइसोलेशन में रहेंगे। भारत की पुरुष और महिला टीमें एक चार्टर्ड फ्लाइट से इंग्लैंड रवाना हुई। लंदन पहुंचने के बाद भारतीय टीम बस से दो घंटे का सफर करके साउथम्पटन पहुंची।भारत को वर्ल्ड टेस्ट चैंपियनशिप का फाइनल खेलने के बाद इंग्लैंड के खिलाफ पांच टेस्ट मैचों की सीरीज खेलनी है। महिला टीम को इंग्लैंड के खिलाफ एक टेस्ट, तीन वनडे और इतने ही टी20 इंटरनेशनल मैच खेलने हैं।

भारत बनाम इंग्लैंड

4-8 अगस्त, पहला टेस्ट मैच, ट्रेंट ब्रिज, नॉटिंघमशर
12-16 अगस्त, दूसरा टेस्ट मैच, लॉर्ड्स, लंदन
25-29 अगस्त, तीसरा टेस्ट मैच, हेडिंग्ले, लीड्स
2-6 सितंबर, चौथा टेस्ट मैच, केनिंग्टन ओवल, लंदन
10-14 सितंबर, पांचवां टेस्ट, एमिरेट्स ओल्ड ट्रैफर्ड, मैनचेस्टर
भारतीय महिला टीम का इंग्लैंड दौरे का शेड्यूल
16-19 जून, इकलौता टेस्ट मैच, काउंटी ग्राउंड, ब्रिस्टल
27 जून, पहला वनडे इंटरनेशनल, काउंटी ग्राउंड, ब्रिस्टल
30 जून, दूसरा वनडे इंटरनेशनल, द कूपर असोसिएट्स काउंटी ग्राउंड, टॉन्टन
3 जुलाई, तीसरा वनडे इंटरनेशनल, न्यू रोड, वर्सेस्टर
9 जुलाई, पहला टी20 इंटरनेशनल, काउंटी ग्राउंड, नॉर्थम्पटन
11 जुलाई, दूसरा टी20 इंटरनेशनल, काउंटी ग्राउंड, होव
15 जुलाई, तीसरा टी20 इंटरनेशनल, काउंटी ग्राउंड, चेल्म्सफोर्ड

नीति आयोग ने निजीकरण के लिए प्रस्तावित बैंकों के नाम सौंपे

नई दिल्ली। नीति आयोग ने विनिवेश संबंधी सचिवों की कोर समिति को उन सरकारी बैंकों के नाम सौंप दिए हैं जिनका विनिवेश प्रक्रिया के तहत मौजूदा वित्तीय वर्ष में निजीकरण किया जाना है। एक वरिष्ठ सरकारी अधिकारी ने यह जानकारी दी। नीति आयोग को निजीकरण के लिए सार्वजनिक क्षेत्र के दो बैंकों और एक बीमा कंपनी का नाम चुनने की जिम्मेदारी सौंपी गयी है। वित्तीय वर्ष 2021-22 के बजट में निजीकरण से जुड़ी घोषणा की गयी थी। अधिकारी ने कहा, हमने सचिवों की विनिवेश संबंधी कोर समिति को (सार्वजनिक क्षेत्र उद्यम बैंकों के) नाम सौंप दिए हैं। उच्च स्तरीय समिति के दूसरे सदस्यों में आर्थिक मामलों के सचिव, राजस्व सचिव, व्यय सचिव, कॉरपोरेट मामलों के सचिव, कानूनी मामलों के सचिव, सार्वजनिक उपक्रम सचिव, निवेश एवं सार्वजनिक संपत्ति प्रबंधन विभाग (दीपम) के सचिव और प्रशासनिक विभाग के सचिव शामिल हैं। कैबिनेट सचिव की अध्यक्षता वाली सचिवों की कोर समिति से मंजूरी मिलने के बाद ये नाम मंजूरी के लिए पहले वैकल्पिक तंत्र (एएम) के पास और अंतिम मंजूरी के लिए प्रधानमंत्री की अध्यक्षता में मंत्रिमंडल के समक्ष रखे जाएंगे।

वर्ल्ड टेस्ट चैंपियनशिप फाइनल को लेकर विराट के कमेंट पर बोले भारत के पूर्व क्रिकेटर

भारतीय कप्तान दिखाना चाहते हैं क्यों है टीम इंडिया नंबर-1 टेस्ट टीम

नई दिल्ली। टीम इंडिया के कप्तान विराट कोहली से इंग्लैंड रवाना होने से पहले जब सवाल किया गया कि क्या वर्ल्ड टेस्ट चैंपियनशिप के फाइनल मैच में न्यूजीलैंड को इंग्लैंड कंडीशन्स का फायदा मिलेगा? इस पर उन्होंने तेजतर्रार अंदाज में जवाब दिया था। विराट के इस जवाब की काफी चर्चा हो रही है। टीम इंडिया के पूर्व क्रिकेटर रीतेंदर सिंह सोढ़ी की माने तो विराट का जवाब दिखाता है कि वह किस माइंडसेट के साथ वर्ल्ड टेस्ट चैंपियनशिप के फाइनल में उतरना चाहते हैं। विराट ने कहा था कि अगर कोई यह सोचता है कि न्यूजीलैंड को वर्ल्ड टेस्ट चैंपियनशिप के फाइनल में कंडीशन्स का फायदा मिलेगा, उसे फ्लाइट पकड़कर वहां खेलने जाने की कोई जरूरत नहीं है। सोढ़ी ने कहा, विराट कोहली दुनिया को बस यह दिखाना चाहते हैं कि क्यों भारतीय टीम टेस्ट क्रिकेट में नंबर-1 टीम है और क्यों उनके बारे में इतनी बातें की गई हैं। हम जिस सकारात्मकता की बात कर रहे हैं, वह रवि शास्त्री ने टीम में भरी है। इस टीम का प्रदर्शन अब बोलता है। टीम के पास अच्छे स्पिनर हैं, कुछ वर्ल्ड क्लास तेज गेंदबाज हैं और बैटिंग भी बहुत मजबूत नजर आती है।

उन्होंने आगे कहा, विराट कोहली ने जिस तरह से प्रेस कॉन्फ्रेंस में जवाब दिया, वह दिखाता है कि वह इसको लेकर कितना फोकस्ड हैं। न्यूजीलैंड को ध्यान से खेलना होगा। यह बड़ा मैच होगा, वर्ल्ड टेस्ट चैंपियनशिप फाइनल। जो भी टीम प्रेशर सिचुएशन का अच्छी तरह सामना करेगी, उसके जीतने के मौके ज्यादा होंगे। टीम इंडिया पूरी तैयारी के साथ खेलने उतरेगी। वर्ल्ड टेस्ट चैंपियनशिप के फाइनल के बाद टीम इंडिया को इंग्लैंड के खिलाफ पांच मैचों की टेस्ट सीरीज भी खेलनी है।

सुनील गावस्कर का प्रिडिक्शन, बताया- इंग्लैंड को टेस्ट सीरीज में कितने अंतर से हराएगा भारत

नई दिल्ली। टीम इंडिया को इंग्लैंड के खिलाफ 4 अगस्त से 14 सितंबर के बीच पांच मैचों की टेस्ट सीरीज खेलनी है। इंग्लैंड दौरे पर टीम इंडिया को 18 जून से न्यूजीलैंड के खिलाफ आईसीसी वर्ल्ड टेस्ट चैंपियनशिप का फाइनल मैच खेलना है और इसके करीब डेढ़ महीने बाद इंग्लैंड के खिलाफ टेस्ट सीरीज खेलनी है। इंग्लैंड के खिलाफ पांच टेस्ट मैचों की सीरीज को लेकर चर्चा शुरू हो चुकी है और तमाम दिग्गज क्रिकेटर्स इसके रिजल्ट को लेकर अपना प्रिडिक्शन भी शेयर कर रहे हैं। सुनील गावस्कर ने भी प्रिडिक्ट किया है कि टीम इंडिया किस अंतर से इस सीरीज में इंग्लैंड को हराएगी। गावस्कर ने टेलिग्राफ से कहा, टेस्ट सीरीज इंग्लैंड के खिलाफ वर्ल्ड टेस्ट चैंपियनशिप फाइनल के करीब छह सप्ताह बाद शुरू होगी। ऐसे में टीम इंडिया पर इसके रिजल्ट का बहुत कम या फिर बिल्कुल भी असर नहीं होगा। सीरीज अगस्त-सितंबर में खेली जाएगी, तो भारत इस सीरीज को 4-0 से जीतेगा। इस साल की शुरुआत में भारत में पिच को लेकर रोने वाला इंग्लैंड हो सकता है भारत को हरी पिचें दे। गावस्कर ने कहा, हरी पिचों पर खेलना अब टीम इंडिया के लिए मुश्किल की बात नहीं रह गई है। भारतीय टीम के पास ऐसा बॉलिंग अटैक है, जो इंग्लिश बल्लेबाजों को परेशानी में डाल सकता है। टीम इंडिया फिलहाल साउथम्पटन पहुंच चुकी है, जहां आईसीसी वर्ल्ड टेस्ट चैंपियनशिप का फाइनल मैच खेला जाना है।

राशिद खान ने अफगानिस्तान टी20 टीम की कमान संभालने से किया इनकार

दिल्ली। अफगानिस्तान क्रिकेट टीम के स्टार स्पिनर राशिद खान ने नेशनल टी20 टीम के कप्तान बनने से इनकार कर दिया है। राशिद ने कहा कि उन्हें लगता है कि अगर वह कप्तानी संभालेंगे, तो इससे उनके खेल पर असर पड़ सकता है। राशिद ने कहा कि टीम के लिए प्रदर्शन उनके लिए ज्यादा मायने रखता है। अफगानिस्तान ने पिछले सप्ताह अपने कप्तानों में बदलाव किए। उसने हमशमातुल्लाह शाहिदी को टेस्ट और वनडे का कप्तान नियुक्त किया। अफगानिस्तान ने हालांकि टी20 टीम के कप्तान के नाम की घोषणा नहीं की है। राशिद ने ईएसपीएनक्रिकइन्फो से कहा, मेरा साफ नजरिया है। मैं एक खिलाड़ी के रूप में बेहतर प्रदर्शन करता हूं। मैं उप-कप्तान की भूमिका में ठीक हूं और जब भी जरूरत पड़ती है कप्तान की मदद करता हूं। यह मेरे लिए बेहतर होगा कि मैं इस पद से दूर रहूं। उन्होंने कहा, मैं एक खिलाड़ी के रूप में टीम के लिए अच्छा प्रदर्शन करना चाहता हूं और कप्तान के बजाय एक खिलाड़ी के रूप में मेरा प्रदर्शन टीम के लिए अधिक मायने रखता है। अब जबकि टी20 वर्ल्ड कप पास में है तब राशिद ने कहा कि बेहतर यही होगा कि वह उस पर ध्यान लगाएं, जिसमें वह अपना बेस्ट दे सकते हैं। उन्होंने कहा, इसके अलावा इसमें समय भी लगता है और अभी वर्ल्ड कप सबसे महत्वपूर्ण है जो कि कुछ महीनों बाद होना है। राशिद ने कहा, मुझे लगता है कि इससे (कप्तानी से) मेरा प्रदर्शन प्रभावित हो सकता है जो कि टीम के लिए अहम है। इसलिए मैं एक खिलाड़ी के रूप में खुश हूं, बोर्ड और चयनसमिति जो भी फैसला करेगी उसका पूरा साथ दूंगा।

बंधुआ मजदूरी के शिकायतों के बाद चीन ने पश्चिमी ब्रांडों के खिलौनों, कपड़ों को असुरक्षित बताया

बीजिंग। चीन की सरकार ने पश्चिमी देशों के एचएंडएम, नाइके और ज़ारा समेत कई अन्य ब्रांड पर असुरक्षित या खराब गुणवत्ता वाले बच्चों के कपड़े और अन्य सामान आयात करने का आरोप लगाया है। विदेशी कंपनियों ने दरअसल इससे पहले मार्च में देश के उत्तर-पश्चिम क्षेत्र में बंधुआ मजदूरी की शिकायत की थी। जिसके बाद सरकार के इस आरोपों से उनकी परेशानियां बढ़ गई हैं। चीन के सीमा शुल्क एजेंसी ने दरअसल इस सप्ताह अंतर्राष्ट्रीय बाल दिवस के अवसर पर गुणवत्ता और सुरक्षा में अयोग्य पायी गई 16 कंपनियों के उत्पादों की सूची जारी की थी। जिसमे टी-शर्ट, खिलोने और टूथब्रश शामिल है। यह घोषणा विदेशी ब्रांडों के लिए एक झटका है। सरकारी मीडिया ने इन आरोपों के बाद एचएंडएम का बहिष्कार करने की घोषणा की है।

अब दाल बिगाड़ सकती है आपके खाने का स्वाद

दलहन का उत्पादन घटने से दाम बढ़ने की उम्मीद

नई दिल्ली। कोरोना और सरसो के तेल की बढ़ी कीमतों की मार झेल रहे आम आदमी को राहत मिलने की उम्मीद नहीं दिखाई दे रही है। देश में दलहल का उत्पादन घटने से दाल की कीमतों में बढ़ोतरी की आशंका है। भारतीय दलहन एवं अनाज संघ (आईपीजीए) के अनुसार, इस साल दाल का उत्पाद घट सकता है। कोरोना के कारण इस फसल वर्ष में दलहल फसलों की बुआई पर किसानों का जोर कम रहा है। इसके चलते देश में इस साल मसूर, चना और अन्य दालों सहित दालों की कमी का सामना करना पड़ सकता है। इस साल अरहर के उत्पादन में करीब 10 लाख टन की कमी हो सकती है।

कृषि मंत्रालय की वेबसाइट से प्राप्त तीसरे अग्रिम अनुमान के अनुसार, फसल वर्ष 2020-21 के लिए अरहर का उत्पादन लगभग 7 लाख टन और उड़द के 5.20 लाख टन कम होने की उम्मीद है। इसके साथ ही खरीफ का कुल उत्पादन 2.12 मिलियन टन कम रहने की उम्मीद है। यानी देश में दाल का उत्पादन घटने वाला है। कमोडिटी विशेषज्ञों का कहना है कि यह दाल की महंगाई को और बढ़ाने का काम करेगा। आने वाले महीनों में दाल की कीमतों में बड़ा उछाल आ सकता है अगर समय रहते कदम नहीं उठाया गया।

सरकार को आपूर्ति बढ़ाने का सुझाव- आईपीजीए के उपाध्यक्ष बिमल कोठारी ने कहा कि हमने सरकार को आपूर्ति बढ़ाने का सुझाव दे दिया है। उन्होंने बताया कि पिछले कुछ साल से दाल को लेकर लंबी अविधि को ध्यान में रखकर कोई पॉलिसी नहीं है। उन्होंने कहा कि एसोशिएसन ने सरकार से दलहन का आयात का फ्री करने का आग्रह किया है लेकिन इस शर्त पर की आयातित दाल की न्यूनतम लैंडिंग कीमत न्यूनतम समर्थन मूल्य (एमएसपी) से अधिक हो।

देश में उत्पाद से अधिक खपत- आईपीजीए के अनुसार, वित्त वर्ष 2015-16 के मध्य से देश में दलहन का उत्पादन बढ़कर 23 मिलियन टन हो गया है। हालांकि, मांग 25-26 मिलियन टन है। इस कमी को पूरा करने के लिए लगभग 2.5 मिलियन टन दलहन का आयात हर साल किया जाता है। साथ ही हमारी मांग हर साल 10 लाख टन बढ़ रही है। इस कमी को पूरा करने के लिए सिर्फ आयात पर निर्भरता करना ठीक नहीं है। देश में दलहन का उत्पादन बढ़ाने की जरूरत है लेकिन ऐसा नहीं हो पा रहा है।

थोक और खुदारा भाव में बड़ा अंतर- आईपीजीए के अनुसार, दाल के खुदरा कीमत और थोक/ पूर्व-मिल दरों से औसतन 50 रुपये प्रति किलोग्राम से अधिक का अंतर है। वर्तमान समय में जब अरहर दाल का औसत थोक मूल्य लगभग 95 रुपये प्रति किलो, उड़द दाल का 110 रुपये प्रति किलो और मूंग दाल का 92 रुपये प्रति किलो है। वहीं, खुदरा मूल्य की बात करें तो अरहर की दाल के लिए 130/- रुपये प्रति किलो, उड़द की दाल के लिए 160 रुपये प्रति किलो और मूंग की दाल के लिए 115 रुपये प्रति किलो उपभोक्ता को चुकाने पड़ रहे हैं।

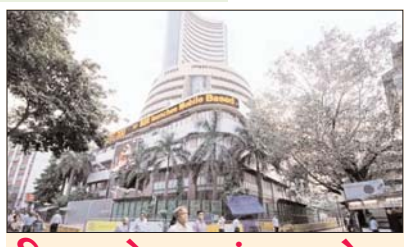

गिरावट के साथ बंद हुआ शेयर बाजार, सेंसेक्स 132 अंक लुढ़का

नई दिल्ली। शुक्रवार को शेयर बाजार गिरावट के साथ बंद हुआ। 30 संवेदी सूचकांक वाले सेंसेक्स में 132.08 अंक या या फिर 0.25त्न गिरावट के साथ 52,100.05 अंक पर बंद हुआ। वहीं, निफ्टी में भी 16.40 अंक या फिर 0.1त्न प्रतिशत लुढ़क गया। आज सुबह शेयर बाजार हरे निशान के ऊपर कारोबार कर रहा था। सेंसेक्स में सबसे अधिक नेस्ले इंडिया के शेयरों में 1.90त्न की गिरावट देखी गई। एसबीआई, एचडीएफसी बैंक, एक्सिस बैंक के शेयरों में भी गिरावट देखी गई। आज सबसे अधिक बजाज फाइनेंस के शेयर में 2.53त्न तेजी के साथ बंद हुए। निफ्टी में भी आज नेस्ले के शेयरों में सबसे अधिक गिरावट देखी गई।

सुबह तेजी के साथ खुला था बाजार-सप्ताह का आखिरी कारोबारी दिन को शेयर बाजार हरे निशान के ऊपर कारोबार कर रहा था। सेंसेक्स जहां 85 अंकों या 0.15 प्रतिशत की तेजी के साथ 52,308.06 पर खुला। वहीं निफ्टी भी शुरुआती कारोबार में 16.30 अंक या 0.1 प्रतिशत की बढ़त के 15,706.65 अंकों की बढ़त के साथ खुला था। 30 संवेदी सूचकांक वाले सेंसेक्स में सुबह ओएनजीसी के शेयर सबसे अधिक 1.75त्न की तेजी देखी गई।

कोरोना का कहर, RBI ने विकास दर का अनुमान एक प्रतिशत घटाया

मुंबई। ग्रामीण इलाकों में कोविड-19 का संक्रमण फैलने से चिंतित रिजर्व बैंक आरबीआई ने चालू वित्त वर्ष के विकास अनुमान में एक प्रतिशत की कटौती की है। केंद्रीय बैंक की मौद्रिक नीति समिति की आज समाप्त तीन दिवसीय बैठक के बाद जारी बयान में वित्त वर्ष 2021-22 में सकल घरेलू उत्पाद (जीडीपी) की विकास दर 9.5 प्रतिशत रहने का अनुमान व्यक्त किया गया है। इससे पहले अप्रैल की बैठक के बाद आरबीआई ने कहा था कि 2021-22 में विकास दर 10.5 प्रतिशत रहेगी। कोविड-19 की दूसरी लहर के मद्देनजर पहली तिमाही के विकास अनुमान में बड़ी कटौती की गई है। इसे 26.2 प्रतिशत से घटाकर 18.5 प्रतिशत कर दिया गया है। जुलाई-सितंबर की दूसरी तिमाही का जीडीपी विकास अनुमान भी 8.3 प्रतिशत से घटाकर 7.9 प्रतिशत किया गया है। बयान में कहा गया है ग्रामीण मांग मजबूत बनी हुई है और सामान्य मानसून के पूर्वानुमान से इसके मजबूत बने रहने के संकेत मिलते हैं। वहीं, ग्रामीण इलाकों में कोविड-19 का संक्रमण फैलने से विकास दर में गिरावट की आशंका है। टीकाकरण तेज होने के साथ आर्थिक गतिविधियों के सामान्य होने की उम्मीद में तीसरी और चौथी तिमाही के अनुमानों में वृद्धि की गई है। तीसरी तिमाही के लिए विकास दर का अनुमान 5.4 प्रतिशत से बढ़ाकर 7.2 प्रतिशत और चौथी तिमाही के लिए 5.2 प्रतिशत से बढ़ाकर 6.6 प्रतिशत किया गया है। केंद्रीय बैंक ने उम्मीद जताई है कि आने वाले महीनों में टीकाकरण तेज होगा जिससे आर्थिक गतिविधियां जल्दी सामान्य होंगी। वैश्विक स्तर पर आर्थिक मजबूती से नियार्त को गति मिलेगी।

तेल की कीमतों में आग, आंध्र प्रदेश तेलंगाना और लेह में पेट्रोल 100 के पार

नई दिल्ली। राजस्थान, मध्य प्रदेश और महाराष्ट्र के बाद लेह, आंध्र प्रदेश के लगभग सभी जिलों तथा तेलंगाना के कुछ हिस्सों में पेट्रोल के दाम 100 रुपये प्रति लीटर के पार पहुंच गए हैं। वाहन ईंधन कीमतों में शुक्रवार को फिर बढ़ोतरी हुई। सार्वजनिक क्षेत्र की पेट्रोलियम कंपनियों की मूल्य अधिसूचना के अनुसार पेट्रोल के दाम 27 पैसे प्रति लीटर और डीजल के 28 पैसे प्रति लीटर बढ़ाए गए हैं। पिछले एक महीने में वाहन ईंधन कीमतों में 18 बार बढ़ोतरी हुई है। दिल्ली में पेट्रोल 94.76 रुपये प्रति लीटर के अपने सर्वकालिक उच्चस्तर पर पहुंच गया है। वहीं डीजल 85.66 रुपये प्रति लीटर हो गया है। स्थानीय करों मसलन मूल्य वर्धित कर (वैट) तथा ढुलाई भाड़े की वजह से विभिन्न राज्यों में ईंधन के दाम भिन्न-भिन्न होते हैं। राजस्थान, मध्य प्रदेश और महाराष्ट्र के सभी जिलों में अब पेट्रोल 100 रुपये प्रति लीटर से अधिक है। इन राज्यों द्वारा ईंधन पर देश में सबसे ऊंचा वैट लगाया जाता है। अंतरराष्ट्रीय बाजार में कच्चे तेल के दाम बढ़ने से पेट्रोलियम पदार्थों के दाम बढ़े हैं। अंतरराष्ट्रीय बाजार में पिछले दो साल में पहली बार ब्रेंट कच्चे तेल का दाम 71 डालर प्रति बैरल से ऊपर पहुंचा है। कीमतों में लगातार बढ़ोतरी के बाद आंध्र प्रदेश, तेलंगाना और लेह में भी पेट्रोल के दाम 100 रुपये प्रति लीटर को पार कर गए हैं।

आंध्र प्रदेश में विशाखापत्तनम को छोड़कर सभी जिलों में पेट्रोल 100 रुपये प्रति लीटर से अधिक है। विशाखापत्तनम में इसका दाम 99.75 रुपये प्रति लीटर है। वहीं विशाखापत्तनम में डीजल 94.08 रुपये प्रति लीटर है। तेलंगाना के अदिलाबाद (100.57 रुपये) और निजामाबाद (100.17 रुपये) में पेट्रोल 100 रुपये प्रति लीटर से अधिक हो गया है। लेह में पेट्रोल 100.43 रुपये प्रति लीटर है। देश में राजस्थान पेट्रोल और डीजल पर सबसे अधिक वैट लगाता है। उसके बाद मध्य प्रदेश, महाराष्ट्र, आंध्र प्रदेश और तेलंगाना का नंबर आता है। मुंबई देश का पहला महानगर है जहां 29 मई को पेट्रोल 100 रुपये प्रति लीटर के ऊपर पहुंचा था। मुंबई में इस समय पेट्रोल 100.98 रुपये और डीजल 92.99 रुपये प्रति लीटर है।

इंग्लैंड, वेस्टइंडीज दौरे के लिए पाकिस्तान टीम का ऐलान

पूर्व क्रिकेटर मोईन खान के बेटे आजम खान को मिली जगह

नई दिल्ली। इंग्लैंड और वेस्टइंडीज दौरे के लिए पाकिस्तान की टीम का ऐलान कर दिया गया है। पूर्व विकेटकीपर बल्लेबाज मोईन खान के बेटे आजम खान को टी-20 टीम में शामिल किया गया है। वहीं, इमाद वसीम की टी-20 और हारिस सोहेल की वनडे टीम में वापसी हुई है। सिलेक्टों ने वेस्टइंडीज के खिलाफ होने वाले दो टेस्ट मैचों के लिए यासिर शाह पर एक बार फिर भरोसा जताया है और उनको टीम में जगह दी है। हालांकि, उनका सिलेक्शन फिटनेस टेस्ट पर निर्भर करेगा।

तेज गेंदबाज मोहम्मद अब्बास और नसीम शाह की भी जमैका में वेस्टइंडीज के खिलाफ दो मैच की टेस्ट सीरीज के लिए टीम में वापसी हुई है। जिम्बाब्वे में खेले गए हालिया दो टेस्ट मैचों में अब्बास और नसीम को नजरअंदाज किया गया था। टी-20 टीम में आजम का नाम चौकाने वाला है क्योंकि उन्होंने अभी तक फर्स्ट क्लास का सिर्फ एक मैच खेला है। उन्होंने हालांकि 36 टी-20 मैच खेले हैं और उनकी छवि बड़े शॉट लगाने वाले बल्लेबाज की है। वह पाकिस्तान सुपर लीग और श्रीलंका प्रीमियर लीग में खेल चुके हैं। चयनकर्ताओं ने अनुभवी लेग स्पिनर यासिर शाह को भी दो टेस्ट मैचों की टीम में रखा है, लेकिन उनका अंतिम चयन फिटनेस टेस्ट पास करने पर होगा। घुटने की चोट के कारण जिम्बाब्वे दौरे के लिए भी उनकी अनदेखी की गई थी। पाकिस्तान की टीम इंग्लैंड दौरे पर आठ से 20 जुलाई के बीच तीन वनडे और इतने ही टी20 मैचों की सीरीज खेलेगी। टेस्ट टीम- बाबर आजम (कप्तान), मोहम्मद रिजवान (उप-कप्तान, विकेटकीपर), अब्दुल्ला शफीक, आबिद अली, अजहर अली, फहीम अशरफ, फवाद आलम, हारिस रऊफ, हसन अली, इमरान बट, मोहम्मद अब्बास, मोहम्मद नवाज, नसीम शाह, नौमान अली, साजिद खान, सरफराज अहमद (विकेटकीपर), सऊद शकील, शाहीन शाह अफरीदी, शाहनवाज दहानी, यासिर शाह (फिटनेस पर निर्भर), जाहिद महमूद। वनडे टीम - बाबर आजम (कप्तान), शादाब खान (उप-कप्तान), अब्दुल्ला शफीक, फहीम अशरफ, फखर जमां, हैदर अली, हारिस रउफ, हारिस सोहेल, हसन अली, इमाम-उल-हक, मोहम्मद हसनैन, मोहम्मद नवाज, मोहम्मद रिजवान (विकेटकीपर), सलमान अली अगा, सरफराज अहमद (विकेटकीपर), सऊद शकील, शाहीन शाह अफरीदी, उस्मान कादिर।

टी-20 इंटरनेशनल टीम- बाबर आजम (कप्तान), शादाब खान (उप-कप्तान), अरशद इकबाल, फहीम अशरफ, फखर जमां, हैदर अली, हारिस रऊफ, हसन अली, इमाद वसीम, मोहम्मद हफीज, मोहम्मद हसनैन, मोहम्मद नवाज, मोहम्मद रिजवान (विकेटकीपर) , मोहम्मद वसीम जूनियर, सरफराज अहमद (विकेटकीपर), शाहीन शाह अफरीदी, शरजील खान, उस्मान कादिर।

अंतर्राज्यीय लूट गिरोह का पर्दाफास दर्जनों लूटों मे हुई बरामदगी

शिवपुरी पुलिस की बड़ी कार्यवाही 14 लूटों का खुलासा कर 06 आरोपियों को किया गिरफ्तार, लूटा हुआ करीबन 8 लाख का मश्रुका किया बरामद

शिवपुरी- फरियादी सुभाष गुर्जर पुत्र मेहताब सिंह गुर्जर उम्र 19 साल निवासी ग्राम दुमदुमा थाना करैरा ने चौकी सुनारी पर रिपोर्ट किया कि दिनांक 05.11.2022 को लगभग 19.00 बजे मैं व मेरी भाभी रुकमणी, बहिन अंजू मो0सा0 से रिश्तेदारी में ग्राम रैपुरा जा रहे थे उसी समय ग्राम रायपहाडी लमकना के बीच आम रोड पर एक काले रंग की हीरो मोटर सायकिल बिना नम्बर पर तीन अज्ञात व्यक्तियों द्वारा कट्टा अडाकर व गोली मारकर सोने की बिजली, सोने की दो अंगूठी, सोने का मंगलसूत्र, पुतली लूट कर ले जाने की रिपोर्ट की थी जिसकी सूचना से वरिष्ठ अधिकारियों को अवगत काकर अप0क्र0 679/22 धारा 394 भादवि, 11/13 एमपीडीपीव्हीके एक्ट कायम कर विवेचना में लिया गया ।पुलिस अधीक्षक शिवपुरी श्री राजेश सिंह चंदेल द्वारा उक्त घटना को गंभीरता से लेते हुये आरोपियों कि जल्द से जल्द गिरफ्तारी के निर्देश दिये एवं विशेष पुलिस टीम का गठन किया । पुलिस अधीक्षक शिवपुरी श्री राजेश सिंह चंदेल के निर्देशन मे पुलिस अधीक्षक दतिया श्री अमन सिंह राठौर के सहयोग से अति0 पुलिस अधीक्षक प्रवीण भूरिया के मार्गदर्शन में एस.डी.ओ.पी. श्री संजय चतुर्वेदी के नेतृत्व में पुलिस टीम ने वारदात की पतारसी कर आरोपियों को गिरफ्तार किया । मुखबिर की सूचना पर से मंगला माता मंदिर के पास पहाडी ग्राम भैसा मजरा दुर्गापुर पर पुलिस टीम द्वारा दबिस दी तो वहां मौजूद तीन व्यक्ति पुलिस को देखकर भागने लगे जिन्हें पुलिस फोर्स की मदद से घेर कर पकडा, नाम व पता पूछा तो पहला आरोपी ग्राम पलोथर थाना जिगना, दूसरा आरोपी ग्राम गेवरा थाना रक्सा जिला झांसी, तीसरा आरोपी ग्राम उदगवां थाना जिगना जिला दतिया का होना बताया एवं हिकमत अमली से पूछताछ करने पर अपने तीन अन्य साथियों के साथ मिलकर करैरा, भौंती, खोड, शिवपुरी, सुभाषपुरा, अमोला, कोलारस, खनियाधाना, पिछोर क्षेत्र में 14 लूट की घटनाओं का खुलासा किया, पुलिस द्वारा अन्य तीन आरोपियों को भी गिरफ्तार कर आरोपियों की निशादेही से लूट का माल करीब 08 लाख रुपये के सोने चांदी के जेवरात व घटना में प्रयुक्त 315 बोर का देशी कट्टा एक जिन्दा राउन्ड व दो मोटर सायकिलें बरामद की गयी है ।पहली लूट- दिनांक 05.11.2022 को तीन आरोपियों द्वारा ग्राम रायपहाडी एवं लमकना के बीच आमरोड पर हमने काली रंग की हीरों मोटरसाईकिल से रास्ते मे जा रहे एक लडका व एक औरत पर कट्टा अडाकर, गोली मारकर सोने की झुमकी, अंगुठी, मंगलसूत्र व पुतैया की लूट की थी ।दूसरी लूट- आज से करीवन डेढ-दो महिने पहले खोड क्षेत्र में तीन आरोपियों द्वारा ग्राम उदयपुरा की रतनगढ टेकरी कच्चे रास्ते पर काले रंग की पैशन प्रो गाडी से एक महिला एवं पुरूष की कट्टा अडा कर एक मोवाईल सैमसंग कंपनी का दो सोने की अंगूठी, एक मंगलसूत्र, दो सोने की झुमकी, एक सोने की पुतैया , एक सोने की चैन, महिला के पेरों की चांदी की तोडियां, पर्श की लूट की थी ।तीसरी लूट- आज से करीव 24-25 दिन पहले रात करीवन 07.30-08.00 के बीच में तीन आरोपियों ने बेरखेडा तिराहे के नीचे काली पहाडियां पुलिया पर काले रंग की पल्सर से एक औरत व आदमी की मोटरसाईकिल को रोककर आदमी की कनपटी पर कट्टा लगाकर औरत जो गहने पहनी थी एवं बैंग मे रखे हुए गहने छीन लिए थे । औरत एवं बैग मे रखे गहने व सोंने की पांच अंगूठी, एक सोने का मंगलसूत्र, सोने की एक जोडीं झुमकी, एक जोडी बृजबाला, एक सोने की पुतैया, एक बैंदा, चांदी की पायल, दो बीबों कंपनी का मोबाईल छीन कर ले गये थे ।चौथी लूट- आज से करीव 5-6 महिने पहले शाम चार बजे करीवन ग्राम कालीपहाडी हाईवे पर अबध होटल के आगे पर दो अपाचे गाडी से एक अपाचे गाडीं पर चार आरोपियों द्वारा एक व्यक्ति की मोटरसाईकिल रोककर कट्टा अड़ाकर 31,000 रूपये बैंग सहित एवं एक मोबाईल छीन कर ले गये थे ।पांचवी लूट- आज से करीवन 1 महीने पहले चार आरोपियों द्वारा धर्मपुरा गांव के पास हीरो होन्डा मोटरसाईकिल से जा रहे एक आदमी एवं औरत को रोककर हमने दो मोटरसाईकिल से कट्टा अडाकर दो अंगूठी, दो मंगलसूत्र, कान की झुमकी , नाक का कांटा , चांदी का कमर पट्टा एवं चांदी की पायल , 4000 रूपये पर्श सहित छीन कर ले गये थे ।छटवीं लूट- आज से करीव पांच माह पहले तीन आरोपियों द्वारा दोपहर करीवन 02.30 बजे मुंगावली स्कूल के पास पैशन प्रो मो.सा. से एक मोटरसाईकिल से बैठे तीन लोगों को रोककर महिला के गहने सोने का हार, मंगलसूत्र छीन कर ले गये थे ।सातवी लूट आज से करीवन 5 माह पूर्व दो आरोपियों ग्राम बमेरा के पहले एक ब्यक्ति से मोटरसाईकिल से जाते समय बैंग छीनकर भाग गये थे एवं कट्टे से धमकाया था ।आठवी लूट- आज से करीब 03 माह पूर्व शाम के वक्त सलैया गांव के आगे मोड़ पर दो आरोपियों द्वारा एक मोटर सायकिल जिस पर एक व्यक्ति बैठा था उस पर कट्टा अडाकर बैग छीनने का प्रयास किया था ।नौवी लूट- आज से करीवन 5 माह पहले चार आरोपियों द्वारा अपाचे एवं पेशन प्रो मोटरसाईकिल से सुभाषपुरा क्षेत्र मे जंगल मे बनी टपरिया मे से आठ बकरियां की चोरी की थी जिसमे बकरियों के मालिक के जागने से उसने हमे रोका था तो हमने उसकी बहीं पडीं लकडी से मारपीट कर दी और जब बह अधमरा होकर गिर पडा तो हम उसे बहीं छोडकर बकलियां लूट कर भाग गये थे ।दसवीं लूट- आज से करीब चार महीने पहले सुभाषपुरा क्षेत्र मे ही तीन आरोपियों द्वारा अपाचे मोटरसाईकिल से मोहना से शिवपुरी जाते हुए एक मोटरसाईकिल चालक को रोककर कट्टा अडाकर उसके बैंग मे रखे हुए रूपये एवं मोबाईल एवं टैवलेट की लूट कर ले गये थे । मोबाईल तथा टैवलेट हमने चलते हुए तोडकर नदी मे फैंक दिये थेग्यारवीं चोरी- आज से करीब 15 दिन पहले तीन आरोपियों द्वारा कडोरा पहाडिया के पास एक हीरो एचएफ डिलेक्स मोटर सायकिल चोरी कर ले गये थे ।बाहरवीं लूट- आज से करीब 15 दिन पूर्व दो आरोपियों द्वारा पल्सर मोटर सायकिल से एक मो0सा0 से जा रहे एक औरत व एक आदमी का खनियाधाना क्षेत्र जैरा घाटी के पास एक मोबाइल एवं एक बैग छीना था, बैग में 17 हजार रुपये नगद लूट कर ले गये थे ।तेहरवीं लूट- आज से करीब 11 माह पूर्व शाम करीब 04 बजे दो आरोपियों द्वारा दिनारा पिछोर रोड कमलेश्वर मंदिर के पास एक व्यक्ति से थैला एक लाख रुपये थे, छीन कर भागे थे ।चौहदवी लूट- आज से करीब एक साल पहले रात करीब 12 बजे चार आरोपियों द्वारा शिवपुरी झांसी हाईवे रोड सुजवाया मोड के आगे एक कार खडी थी उस कार में बैठे व्यक्ति से तीन मोबाइल, 08 हजार रुपये व महिला से कान के सोने के टोप्स लूट कर ले गये थे ।उक्त सभी आरोपियों को गिरफ्तार करने व लूटे गये माल की बरामदगी करने में थाना प्रभारी करैरा निरी0 सतीश सिंह चौहान, अमोला थाना प्रभारी उनि संतोष भार्गव, उनि राघवेन्द्र यादव, उनि कुलदीप सिंह, उनि बी0आर0 पुरोहित, उनि अरविन्द चौहान थाना बैराड, चौकी हिम्मतपुर चौकी प्रभारी नितिन भार्गव, चौकी खोड प्रभारी उनि अंशुल गुप्ता, थाना प्रभारी सुरवाया उनि रामेन्द्र चौहान, चौकी थनरा प्रभारी सउनि सतीश जयंत एवं थाना प्रभारी जिगना जिला दतिया, सउनि विवेक भट्ट, सउनि जितेन्द्र जाट, कावा.प्रआर जगदीश सिंह, कावा. प्रआर. हिमांशु जोशी, आर0 सोनू पाण्डेय, आर0 874 प्रभजोत सिंह, आर0 सोनू श्रीवास्तव, आर0 सतेन्द्र सिंह, आर0 ओमप्रकाश रावत, आर0 अमित यादव, आर0 सुखवीर, आर. अनिल यादव, आर0 संजीव श्रीवास्तव, आर. संदीप सिंह, आर. चा. रामहुजूर यादव की सराहनीय भूमिका रही है ।

25 दिवसीय माली विषयक प्रशिक्षण हेतु करें आवेदन

अनिल कुशवाह प्रभारी
पुष्पांजलि टुडे

शिवपुरी- राज्य शासन द्वारा राष्ट्रीय कृषि विकास योजना वर्ष 2022-23 अंतर्गत युवा बेरोजगारों के लिये माली प्रशिक्षण परियोजना स्वीकृत की गई है। जिसमें प्रदेश के 2500 युवा बेरोजगार युवक/युवतियों को 25 दिवसीय माली विषयक प्रशिक्षण प्रदान किया जाकर सफल प्रशिक्षणार्थियों को प्रमाण पत्र प्रदाय किया जायेगा। यह प्रशिक्षण पूर्णतः आवासीय एवं निःशुल्क होगा। इस प्रशिक्षण कार्यक्रम के अंतर्गत प्रदेश के इच्छुक बेरोजगार युवक/युवतियों द्वारा21नवंबरसे27नवम्बर तक पोर्टल वेबसाईट पर आवेदन किये जा सकते है। आवेदकों हेतु शैक्षणिक योग्यता न्यूनतम 10वीं उत्तीर्ण होना अनिवार्य होगा। बेरोजगार युवक/युवतियां आवेदन कर सकेगे। अनुसूचित जाति एवं अनुसूचित जनजाति के हितग्राहियों को जाति प्रमाण पत्र के आधार पर ही पात्रता होगी। आवेदक किसी निजी अथवा शासकीय संस्था में कार्यरत नहीं होना चाहिये। आवेदक की आयु न्यूनतम 18 एवं अधिकतम आयु 40 वर्ष हो। आवेदन की प्रक्रिया पूर्णतः ऑनलाईन होगी। प्रशिक्षणार्थी निर्धारित 200 घंटे का प्रशिक्षण बिना रुकावट के सफलतापूर्वक पूर्ण करेगा इस बावत विभाग से अनुबंध करना होगा।प्रशिक्षणार्थियों का चयन कम्प्यूटरीकृत लाटरी के माध्यम से किया जाएगा। आवेदकों की संख्या लक्ष्यों से कम होने पर लाटरी की आवश्यकता नहीं होगी एवं प्रशिक्षणार्थियों का चयन वांछनीय शैक्षणिक अर्हता के आधार पर किया जायेगा। लाटरी की प्रक्रिया राज्य स्तर पर गठित समिति द्वारा की जाएगी तथा चयनित प्रशिक्षणार्थियों की सूची वेबसाइट पर प्रदर्शित करते हुए आवेदकों को स्म्स के माध्यम से सूचित किया जायेगा। चयनित प्रशिक्षणार्थियों को विषय वस्तु के अंतर्गत पौधशाला प्रबंधन, बुनियादी उपकरणों की पहचान एवं उनका उपयोग लेण्ड स्केपिंग ओरनामेंटल गार्डनिंग, कीट बीमारियां एवं उनका प्रबंधन, भूमि की जल निकासी और पोषण संबंधी आवश्यकता, उद्यानिकी फसलों का उत्पादन, फसलोत्तर प्रबंधन एवं प्रसंस्करण के संबंध में व्यवहारिक एवं प्रायोगिक प्रशिक्षण दिया जायेगा एवं सफल प्रशिक्षणार्थियों को प्रमाण पत्र प्रदान किये जायेंगे।

हाट बाजार का हुआ शुभारंभ

पुष्पांजली टुडे से संवाददाता विशाल सिंह की रिपोर्ट

पिछोर खोड थाना क्षेत्र के अंतर्गत अवंती बाई चौराहा नयागांव खोड़ पर समस्त किसान भाइयों द्वारा 18 नवंबर शुक्रवार हाट बाजार मेला प्रारंभ किया गया जिसमें जिसमें क्षेत्र के सभी किसानों को बाजार से मिलने वाली महंगी चीजों से राहत मिलेगी और बहुत से किसान भाइयों को रोजगार भी उपलब्ध होगा प्रयास करता भरत लाल लोधी गणेश खेड़ा सहयोगी समस्त मित्रगण

रेजांगला के वीर अहीर शहीदों की याद में मनाया गया यादव शौर्य दिवस

अनिल कुशवाह प्रभारी
पुष्पांजलि टुडे

शिवपुरी-खबर कोतवाली क्षेत्र के पोलो ग्राउंड से है जहां पर यादव युवाओं के द्वारा आज यादव सौर्य दिवस मनाया गया जानकारी देते हुए हेमंत यादव बड़ौदी के द्वारा बताया गया 18 नवंबर 1962 को लद्दाख के रेजांगला में 13 कुमाऊँ रेजीमेंट की चार्ली कंपनी पोस्टेड थी जिसमें 114 शूरवीर अहीर शामिल थे और सामने चाइना की एक 3000 सैनिकों की एक इन्फेंट्री थी हमारी सेना के पास हथियारों की कमी थी लेकिन उन्होंने हार नहीं मानी और पोस्ट को खाली ना करते हुए लड़ने का निश्चय किया और जब हथियार खत्म हो गए तो गुत्म गुथा की लड़ाई लड़ी और एक एक सैनिक ने दस दस चीनी सैनिकों को मौत के घाट उतार दिया ये ल?ाई इतनी भीषण थी करीब 11 सौ चीनी सैनिकों को मौत के घाट उतार दिया ये ल?ाई दुनिया की सबसे खतरनाक ल?ाईयो मैं सामिल है और अधिक जानकारी देते हुए मोहित यादव ने बताया कि कोई भी सैनिक ने अपनी पीठ पर गोली नही खाई थी करीब 6 महीने तक उनके पार्थिव शरीर यूंही रखे रहे जब मौसम साफ हुआ तब उनके पार्थिव शरीर को नीचे लाया गया और उनका अंतिम संस्कार रेजांगला मैं किया गया था उस जगह को भारत सरकार ने अहीर धाम नाम दिया ।

14 साल की बच्ची को किडनेप कर किया था रेप, 5 नवंबर को हुई थी 20 साल की सजा

शिवपुरी की सर्किल जेल में बंद 1 कैदी ने फांसी लगा ली। कैदी रन्नौद थाना क्षेत्र के वेदमऊ गांव का रहने वाला था। कोर्ट ने 5 दिन पहले ही 20 साल कैद की सजा सुनाई थी।

जेल की बाथरूम में लगाई फांसी–जानकारी के अनुसार आज दोपहर पातीराम अपनी बैरक में बैठा हुआ था। इसके बाद वह बाथरूम की ओर चला गया, जहां बाथरूम में तौलिया की मदद से उसने फांसी लगा ली। सूचना के जेल प्रबंधन हरकत में आया। पातीराम की लाश पीएम हाउस में रखवा दी।

नाबालिक से किया था दुष्कर्म–जानकारी के अनुसार सुरवाया थाना की सीमा क्षेत्र के फार्म हाउस पर दिसंबर 2020 को पातीराम आदिवासी पुत्र परमा आदिवासी निवासी वेदमउ थाना रन्नौद ने 14 साल की किशोरी का अपरहण कर उसके साथ दुष्कर्म किया था। पुलिस ने इस मामले में किशोरी को बरामद कर आरोपी पातीराम आदिवासी पर बलात्कार सहित पॉक्सो एक्ट की धाराओं में मामला दर्ज कर जेल भेज दिया था।

2 लाख देने की मांग की पुलिस ने किया मामला दर्ज

शिवपुरी।शिवपुरी जिले के रन्नौद में नगर परिषद अध्यक्ष पति को डराने और 2 लाख रुपए मांगने का मामला सामने आया है। नगरपरिषद अध्यक्ष पति ने इसकी शिकायत शुक्रवार को रन्नौद थाने में दर्ज कराई है।

बंधक बना कर दो लाख रुपए की रखी थी मांग–रन्नौद नगर परिषद अध्यक्ष राजकुमारी कुशवाह के पति जमुना प्रसाद कुशवाह ने रन्नौद थाने में पहुंचकर शिकायत दर्ज कराई है। नगरपरिषद अध्यक्ष पति ने पुलिस को बताया कि 16 नवंबर की दोपहर रन्नौद के बस स्टैंड गांधी चौक पर ख?ा हुआ था इसी दौरान भूरा तिवारी पुत्र राजाराम तिवारी का फोन आया और मुझे काम की कहकर मंडी बुला लिया। इसके बाद भूरा तिवारी उंसे जंगल में स्थित सिध्दकलेश्वर स्थान पर ले गया। जहां भूरा और उसके दो साथियों ने उसके हाथ बांध दिए। भूरा तिवारी ने कट्टा लगाते हुए धमकी देने लगा कि मैंने तेरे को पहले मना किया था कि तू मेरी वार्ड से चुनाव मत लडना। हम काफी समय से वहां से सक्रिय हैं लेकिन तूने नहीं मानी और अब तू नेता बन गया है। तुझे अब दो लाख रुपए देने होंगे।

मंदिर पर खिलाई थी कसम, 23 को पैसे देने का किया था वादा–नगर परिषद अध्यक्ष राजकुमारी कुशवाह के पति जमुना प्रसाद ने पुलिस को बताया मंदिर में मुझसे कसम खिलाई गई मैं किसी से कुछ नहीं कहूंगा और 23 नवंबर को दो लाख रुपए दे दूंगा। तब कहीं जाकर वह छूट के घर आया था। जमुना प्रसाद ने बताया कि भूरा ने उसके मोबाइल मोबाइल से मारपीट करने और धमकाने के वीडियो भी बना लिए थे।

रात में फिर घर पहुंचा धमकाने–जमुना प्रसाद ने बताया कि बीती रात भूरा तिवारी फिर एक बार घर पर आता है और फिर से धमकी देकर चला जाता है। इससे वह बहुत ही डरा हुआ है। इसकी शिकायत अपने परिजन और समाज के लोगों के साथ चर्चा करने के बाद आज रन्नौद थाने में पहुंचकर दर्ज कराई है।रन्नौद थाना पुलिस ने आरोपी भूरा तिवारी एंव अन्य दो लोगो के खिलाफ मामला दर्ज कर विवेचना शुरू कर दी

बी.ए की छात्रा से मोबाइल छीनकर भागा बदमाश, पुलिस ने पकड़ा

शिवपुरी।शिवपुरी के फिजिकल थाने से कुछ ही दूरी पर एक बी.ए द्वितीय वर्ष की छात्रा से मोबाइल को लूटने का मामला सामने आया है। छात्रा ने इसकी शिकायत फिजिकल थाने में दर्ज कराई है। संजय कॉलोनी की रहने वाली छात्रा काजल प्रजापति ने बताया कि वह आज कोचिंग पढ़ कर अन्य छात्राओं के साथ लौट रही थी। इसी दौरान वह साईं बाबा मंदिर और गणेश गली के बीच से गुजरने वाली संकरी गली से होकर गुजर रही थी। इसी दौरान पीछे से एक युवक उसका मोबाइल छीन कर भाग गया। इसकी शिकायत उसने फिजिकल थाने में दर्ज कराई है।जानकारी के अनुसार, जैसे ही छात्रा का मोबाइल अज्ञात बदमाश ने छीनते हुए भागा। वहीं पास में कुछ युवक खड़े थे। जिन्होंने उक्त बदमाश का पीछा किया। इसी दौरान कुछ दूरी पर बदमाश एक घर में घुस गया और मोबाइल को बाहर ही फेंक दिया। फिजिकल थाना पुलिस ने मोबाइल को बरामद कर छात्रा को सौंप दिया है। पुलिस ने वारदात को अंजाम देने वाले बदमाश रामकुमार बाथम उर्फ कल्लू को गिरफ्तार कर लिया है।

पुलिस थाना पिछोर ने पत्नी को आत्महत्या के लिए प्रेरित करने वाले आरोपी आरोपी पति व देवर को गिरफ्तार

पत्रकार राकेश परिहार पिछोर

पिछोर, पुलिस अधीक्षक शिवपुरी राजेश चंदेल ,अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक शिवपुरी प्रवीण कुमार भूरिया , एसडीओपी दीपक तोमर के निर्देशन में व पुलिस थाना पिछोर टी आई गब्बर सिंह गुर्जर के नेतृत्व में पुलिस थाना पिछोर की टीम ने ग्राम लहर्रा में पत्नी सुमन सेन को आत्महत्या को प्रेरित करने के लिए पति व देवर को गिरफ्तार किया। सुमन सेन निवासी पुराना दिनारा का विवाह वर्ष 2019 में लहर्रा के बृजेंद्र सेन के साथ हुआ था। दिनांक 21/9/22 को सुमन सेन ने अपनी ससुराल ग्राम लहर्रा में फांसी लगाकर आत्महत्या कर ली थी। सुमन सेन के कोई बच्चा भी नहीं था उसके ससुराल वाले दहेज में 50,000 व मोटरसाइकिल की मांग करते थे तथा घर के के कामकाज को लेकर भी परेशान करके मारपीट करते थे। पुलिस ने मर्ग जांच से सुमन के पति बृजेंद्र सेन देवर मंगलसेन व सास मीरा सेन के विरुद्ध धारा 306 ,498 34 आईपीसी का प्रकरण पंजीबद्ध किया था पति व देवर को गिरफ्तार कर न्यायालय पेश किया जहां से उन्हें जेल भेज दिया गया । पुलिस थाना पिछोर की टीम में सहायक उपनिरीक्षक शैलेंद्र सिंह चौहान , प्रधान आरक्षक अरविंद यादव,संतोष यादव, हिमांशु चतुर्वेदी , आरक्षक बचान सिंह तोमर व मांगीलाल गुर्जर की सराहनीय भूमिका रही

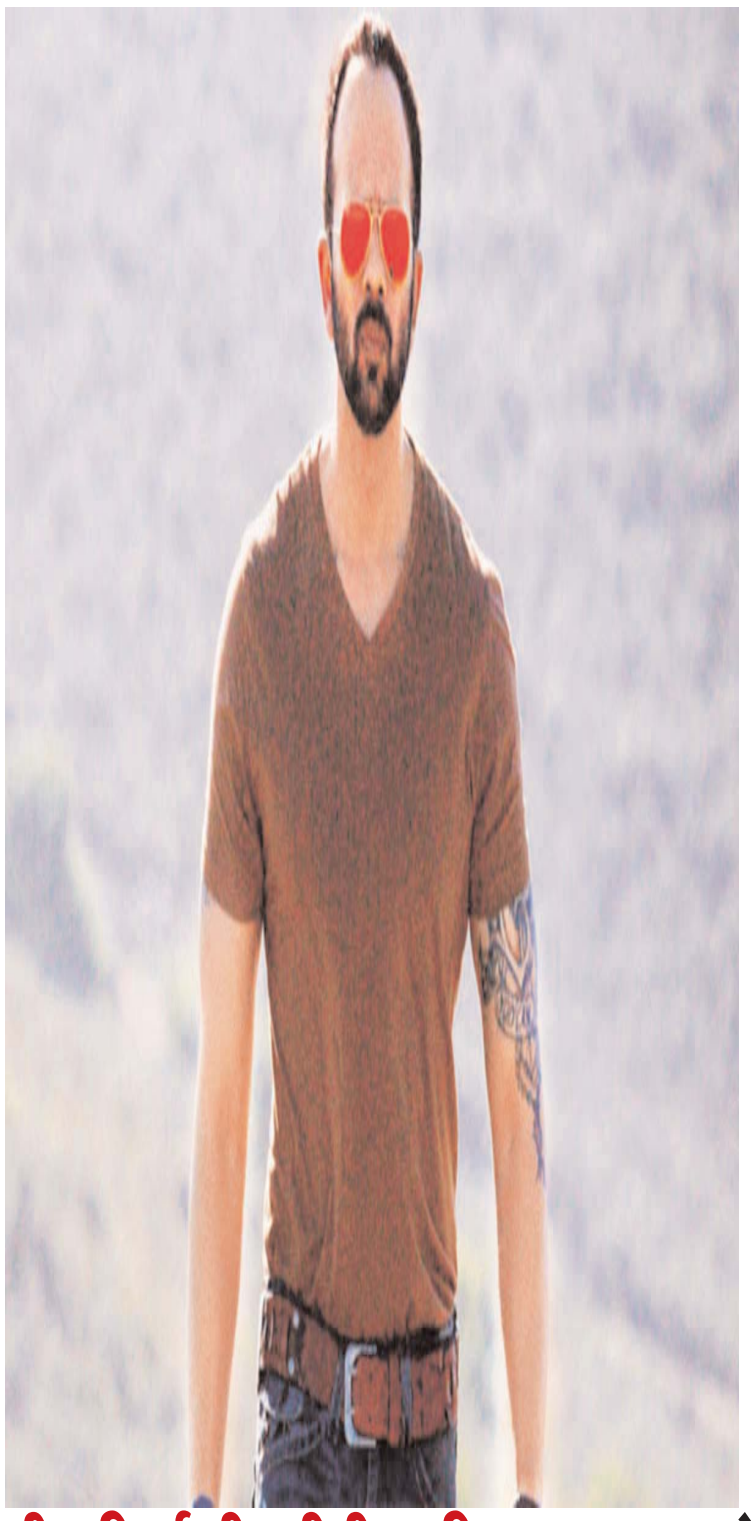

एविक्ट हुए इस कंटेस्टेंट की जल्द होगी वाइल्ड कार्ड एंट्री

मुंबई।खतरों के खिलाड़ी 12 दर्शकों का खूब मनोरंजन कर रहा है। यही वजह है कि शो टीआरपी की टॉप लिस्ट में जगह बनाने में कामयाब रहा है। रोहित शेट्टी की होस्टिंग से लेकर कंटेस्टेंट की परफॉर्मेंस तक ने शो को रोचक बना दिया है। बीते रविवार को एलिमिनेशन स्टंट में तीन कंटेस्टेंट जन्नत जुबैर, कनिका मान और प्रतीक सहजपाल के बीच मुकाबला हुआ। स्टंट शुरू होते ही प्रतीक ने अबॉर्ट कर दिया और इस तरह उन्हें शो को अलविदा कहना पड़ा। इतनी जल्दी प्रतीक के एविक्ट होने से उनके फैन्स को झटका लगा है लेकिन अब एक बड़ी खुशखबरी है।

वाइल्ड कार्ड की एंट्री-खतरों के खिलाड़ी 12 में वाइल्ड कार्ड कंटेस्टेंट की काफी समय से चर्चा थी। अब बताया जा रहा है कि प्रतीक सहजपाल को मेकर्स वाइल्ड कार्ड के जरिए दोबारा लाएंगे। सोशल मीडिया पर खतरों के खिलाड़ी के फैन पेज अकाउंट से शेयर किया गया है कि प्रतीक की एंट्री एक या दो हफ्ते में हो सकती है। हालांकि इस बारे में आधिकारिक जानकारी नहीं है।

फैन्स होंगे खुश-प्रतीक की वापसी से निश्चित रूप से उनके फैन्स बेहद खुश होंगे। शो से वह जल्दी ही बाहर हो गए हैं। मेकर्स उन्हें एक और मौका देना चाहते हैं।

किन शोज में किया काम-बता दें कि प्रतीक सहजपाल ने बिग बॉस 15 में हिस्सा लिया था। वह रनर अप रहे थे। सीजन को तेजस्वी प्रकाश ने जीता था। इसके अलावा वह बिग बॉस ओटीटीऐस ऑफ स्पेस और लव स्कूल में नजर आ चुके हैं। इसके अलावा नच बलिए 10 के लिए प्रतीक सहजपाल के नाम की चर्चा है। वह डांस रियिलटी शो में हिस्सा ले सकते हैं।

कॉफी विद करण 7 में हिस्सा लेंगी कटरीना कैफ, साथ में विकी कौशल नहीं होंगे ये एक्टर्स

मुंबई। 'कॉफी विद करण 7' के शुरू होने से पहले ये कयास लगाए जा रहे थे कि क्या कटरीना कैफ और विकी कौशल शो में हिस्सा लेंगे। शादी के बाद एक कपल के रूप में फैन्स उन्हें लेकर काफी एक्साइटेड दिखे। अब खबर है कि करण जौहर के शो में कटरीना कैफ हिस्सा लेंगी लेकिन उनके साथ विकी कौशल नहीं होंगे। कटरीना शो के पहले के सीजन में हिस्सा ले चुकी हैं। करण जौहर के साथ उनकी गहरी दोस्ती है। ऐसे में वह 'कॉफी विद करण 7' में गपशप करती दिखेंगी।

करेंगी फिल्म का प्रमोशन-कटरीना कैफ अपनी आने वाली फिल्म 'फोन भूत' का प्रमोशन करेंगी। वेबसाइट पिंकविला की रिपोर्ट के मुताबिक, करण जौहर के शो के लिए कटरीना कैफ ने शूटिंग पूरी कर ली है। उनके साथ 'फोन भूत' के एक्टर्स सिद्धांत चतुर्वेदी और ईशान खट्टर भी होंगे।

ऐसे शुरू हुई थी लव स्टोरी-गौरतलब है कि 'कॉफी विद करण' से ही कटरीना और विकी की लव स्टोरी की शुरुआत हुई थी। दोनों अलग-अलग एपिसोड में पहुंचे थे। कटरीना से जब करण ने पूछा था कि वह किसके साथ काम करना चाहती हैं और पर्दे पर किसके साथ उनकी जोड़ी अच्छी लगेगी तो कटरीना ने जवाब में विकी कौशल का नाम लिया था। बाद में जब शो में विकी कौशल आए तो करण जौहर ने उन्हें बताया कि कटरीना ने उनका नाम लिया है। यह सुनकर उन्हें यकीन नहीं आता और बेहोश होने का नाटक करते हैं।

इन फिल्मों में आएंगी नजर-कटरीना कैफ की आने वाली फिल्मों में 'फोन भूत' के अलावा 'टाइगर 3' है। फिल्म में वह सलमान खान के अपोजिट नजर आएंगी। इसके अलावा वह निर्देशक श्रीराम राघवन की फिल्म 'मैरी क्रिसमस' कर रही हैं। इस फिल्म में उनके साथ साउथ स्टार विजय सेतुपति होंगे।

दीया मिर्जा की भतीजी का निधन, भावुक एक्ट्रेस ने इंस्टाग्राम पर दी श्रद्धांजलि, लिखा- मेरी भतीजी, मेरी बच्ची, मेरी जान

मुंबई। बॉलीवुड एक्ट्रेस दीया मिर्जा के परिवार पर दुखों का पहाड़ टूटा है, जिसकी जानकारी उन्होंने सोशल मीडिया पर दी है। दीया मिर्जा की भतीजी का निधन हो गया है, जिसको लेकर एक्ट्रेस ने सोशल मीडिया पर पोस्ट किया है। दीया मिर्जा ने अपने पोस्ट में निधन की वजह का जिक्र तो नहीं किया है, लेकिन उनके इंस्टाग्राम पोस्ट से समझ आ रहा है कि वो अपनी भतीजी के काफी करीब थीं और उसके दुनिया को अलविदा कहने से एक्ट्रेस को झटका लगा है।

दीया मिर्जा की भतीजी का निधन-दीया मिर्जा ने सोशल मीडिया पर अपनी भतीजी की तस्वीर शेयर की है। तस्वीर में दीया की भतीजी मुस्कुराती हुई नजर आ रही हैं, वहीं एक्ट्रेस ने दिल को छू जाने वाली बात कैप्शन में लिखी है। दीया ने अपने कैप्शन में लिखा, मेरी भतीजी.. मेरी बच्ची.. मेरी जान...अब इस दुनिया में नहीं रही। तुम जहां भी रहो, तुम्हें शांति और प्यार मिले। आप हमेशा हमारे दिलों में रहोगी। ओम शांति।

फैन्स और सितारे दे रहे श्रद्धांजलि-दीया मिर्जा के पोस्ट पर उनके फैन्स और सेलेब्स रिएक्ट करते हुए श्रद्धांजलि दे रहे हैं। रिद्धिमा कपूर साहनी और सुनील शेट्टी ने हाथ जोड़ने वाला ईमोजी कमेंट किया, तो गौहर खान ने दिल टूटने वाले ईमोजी के साथ कमेंट किया। वहीं ईशा गुप्ता, भावना पांडे, श्रेया धनवंतरी ने दिल का ईमोजी शेयर किया। इसके अलावा गुल पनाग ने कमेंट में श्रद्धांजलि दी तो सुजैन खान की बहन फराह ने लिखा, ये बहुत दुखद खबर है, वो जहां रहे चमकती रहे।

दीया मिर्जा का करियर-गौरतलब है कि दीया मिर्जा का नाम उन एक्ट्रेसेस में शुमार है, जिनके खाते में भले ही कम फिल्में शुमार रही हैं, लेकिन उन्होंने अपनी अदाकारी से एक अलग मुकाम बना लिया है। दीया मिर्जा की बॉलीवुड डेब्यू फिल्म रहना है तेरे दिल में के आज भी चर्चे होते हैं। दीया मिर्जा फिल्मों के साथ ही वेब सीरीज में भी काम कर चुकी हैं और जल्दी ही रत्ना पाठक, संजना सांघी, फातिमा सना शेख के साथ धक धक में नजर आएंगी।

सिद्धार्थ मल्होत्रा और कियारा आडवाणी हुए कैमरे में कैद

मुंबई।बॉलीवुड अभिनेता सिद्धार्थ मल्होत्रा और एक्ट्रेस कियारा आडवाणी अपनी प्रोफेशनल लाइफ के साथ ही साथ अपनी पर्सनल लाइफ को लेकर भी खूब चर्चा में रहते हैं। सिद्धार्थ और कियारा बीती रात एयरपोर्ट पर स्पॉटिड हुए और दोनों करीब करीब एक जैसे लुक में नजर आ रहे थे। सोशल मीडिया पर कियारा- सिद्धार्थ के फोटोज तेजी से वायरल हो रहे हैं और फैन्स इन्हें काफी पसंद कर रहे हैं। हालांकि सिद्धार्थ इस दौरान थोड़ा गुस्से में नजर आए।

ट्विन करते दिखे सिद्धार्थ- कियारा-बात सिद्धार्थ और कियारा के एयरपोर्ट लुक की करें तो दोनों ट्विन करते नजर आ रहे हैं। फोटोज में सिद्धार्थ ने सफेद टी शर्ट के साथ ब्लैक जैकेट, ब्लैक पैंट और व्हाइट शूज कैरी किए हैं। वहीं एक्ट्रेस ने लॉन्ग ब्लैक टीशर्ट के साथ बैल्क लोअर और शूज पहने हैं। विरल भियानी ने जो वीडियो सोशल मीडिया पर शेयर किया है, उसे देखकर लग रहा है कि सिद्धार्थ पैपराजी को देख भड़क गए हैं और उन्हें बार बार फोटोज क्लिक करने के लिए मना कर रहे हैं। वहीं वीडियो देखकर ऐसा भी लग रहा है कि कियारा, सिद्धार्थ के गुस्से को शांत करती दिख रही हैं।सोशल मीडिया यूजर्स सिद्धार्थ- कियारा के फोटोज को खूब पसंद कर रहे हैं।

कियारा का बर्थडे सेलिब्रेशन-31 जुलाई को कियारा आडवाणी का जन्मदिन था और मीडिया रिपोर्ट्स के मुताबिक एक्ट्रेस ने सिद्धार्थ मल्होत्रा के साथ अपना बर्थडे सेलिब्रेट किया। कहा जा रहा है कि कपल इस खास मौके पर दुबई पर था। एक फैन के सोशल मीडिया पोस्ट के बाद इस खबर को और भी हवा मिली थी, हालांकि उस पोस्ट में सिद्धार्थ कियारा एक साथ नजर नहीं आ रहे थे लेकिन फैन के कपड़े और फोटो के बैकग्राउंड से लग रहा था कि दोनों साथ ही हैं।

ब्रेकअप की उड़ी थी अफवाह-याद दिला दें कि कुछ समय पहले ऐसी खबरें थीं कि सिद्धार्थ और कियारा ने अपने रास्ते अलग कर लिए हैं लेकिन जल्द ही वो साथ में सार्वजनिक रूप से दिखे। पार्टीज से लेकर फिल्म स्क्रीनिंग तक से सिद्धार्थ और कियारा के वीडियोज वायरल हुए।

आमिर खान के बाद करीना कपूर ने लाल सिंह चड्डा के बायकॉट ट्रेंड पर किया रिएक्ट

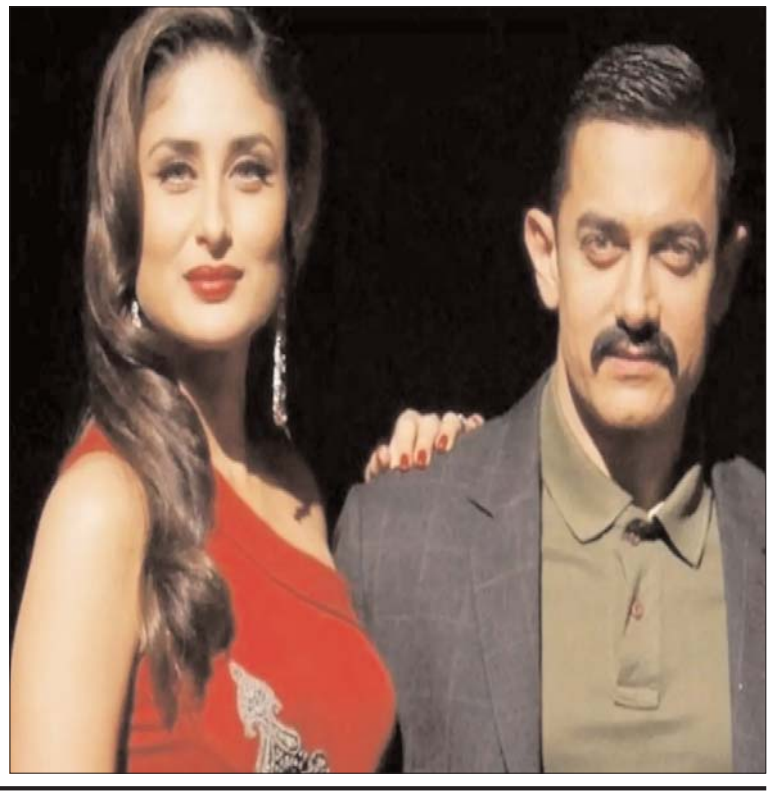

मुंबई।बॉलीवुड अभिनेता आमिर खानकी अपकमिंग फिल्म लाल सिंह चड्ढा की रिलीज में कुछ ही दिन रह गए हैं। फिल्म में आमिर खान के साथ ही करीना कपूर खान चैतन्य अक्किनेनी और मोना सिंह भी अहम किरदारों में नजर आएंगे। फिल्म की रिलीज से पहले सितारे प्रमोशन के लिए मैदान में उतर गए हैं और हर मुद्दे पर बात कर रहे हैं। हाल ही में आमिर खान ने लाल सिंह चड्ढा के बायकॉट पर रिएक्ट किया था, इसके बाद अब करीना ने भी इस पर अपनी राय रखी है।

लाल सिंह चड्ढा के बायकॉट पर क्या बोलीं करीना-आमिर खान के बाद फिल्म लाल सिंह चड्ढा के बायकॉट पर करीना कपूर खान ने भी रिएक्ट किया है। करीना ने इंडिया टुडे से बातचीत में कहा, आज हर कोई बोलने का हक रखता है, आज ढेर सारे प्लेटफॉर्म्स मौजूद हैं, हर किसी के अपने विचार हैं। तो अगर ऐसा होगा तो आपको कुछ चीजें इग्नोर करना सीखना होगा। वरना आपको अपनी जिंदगी जीना मुश्किल हो जाएगा। इसलिए मैं ऐसी चीजों को सीरियसली नहीं लेती हूं। मैं वो पोस्ट करती हूं, जो मैं करना चाहती हूं।

ये एक फिल्म है, जो रिलीज होने वाली है.-करीना कपूर खान ने आगे कहा, %ये एक फिल्म है, जो रिलीज होने वाली है और इस पर सभी की अपनी अलग राय होगी। तो अगर ये फिल्म अच्छी होगी तो ये हर चीज से आगे निकल जाएगी, और रिस्पॉन्स अच्छा होगा। मुझे लगता है कि अच्छी फिल्में हर चीज से पार पा लेती हैं। याद दिला दें कि सिर्फ लाल सिंह चड्ढा ही नहीं करीना के कुछ पुराने बयानों के चलते उनको बायकॉट करने के हैशटैग भी सोशल मीडिया पर वायरल हो चुके हैं।

क्या बोले थे आमिर खान-करीना कपूर खान से पहले आमिर खान ने भी इस बायकॉट पर रिएक्ट किया था। आमिर खान ने कहा, बायकॉट बालीवुड, बायकॉट आमिर खान, बायकॉट लाल सिंह चड्ढा हैशटैग चलाये जाने से मैं दुखी महसूस कर रहा हूं। बहुत से लोग जो अपने दिल से ऐसा कह रहे हैं, उनका मानना है कि मैं ऐसा व्यक्ति हूं जो भारत को पसंद नहीं करता। कुछ लोग ऐसा मानते हैं, लेकिन यह बिल्कुल भी सच नहीं है।

मैं वास्तव में देश से प्यार करता ह-आमिर खान ने आगे कहा, %मैं वास्तव में देश से प्यार करता हूं। यदि कोई व्यक्ति कुछ और सोचता है तो यह दुर्भाग्यपूर्ण है। मैं सभी को आश्वस्त करना चाहता हूं कि यह कोई मुद्दा नहीं है, इसलिए कृपया मेरी फिल्म देखिए।% बता दें कि आमिर खान के इस स्टेंटमेंट की काफी चर्चा हुई। सोशल मीडिया पर इसको लेकर मिक्स रिएक्शन देखने को मिले, किसी ने कहा कि उन्हें टारगेट किया जा रहा है तो किसी ने लिखा कि सिर्फ फिल्म की सक्सेस के लिए ऐसी बातें की जा रही हैं।

फॉरेस्ट गंप की ऑफिशियल रीमेक

गौरतलब है कि लाल सिंह चड्ढा, हॉलीवुड अभिनेता टॉम हैंक्स ी फिल्म फॉरेस्ट गंप का इंडियन अडैप्शन है।%लाल सिंह चड्ढा% में करीना कपूर खान, मोना सिंह और नागा चैतन्य भी हैं। लाल सिंह चड्ढा को देश में 100 स्थानों पर शूट किया गया है। वहीं आमिर खान ने फिल्म से जुड़ी बातचीत के दौरान बताया था कि उन्होंने इस फिल्म को अपने 12 साल दिए हैं।

राठौड़ ने की जनसुनवाई, कृषि मंडी का किया निरीक्षण

खाद वितरण व्यवस्था सुधारने एवं जाम से निबटने की तैयारियां देखीं

दैनिक पुष्पांजली टुडे

भितरवार। वरिष्ठ भाजपा नेता और जनसेवक मोहन सिंह राठौड़ ने भितरवार में काली माता मंदिर परिसर में स्थित अपने कार्यालय पर जनसुनवाई में ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्रों के लोगों की समस्याएं सुनीं और अधिकारियों से चर्चा कर निराकरण कराने का प्रयास किया... इसके उपरांत भाजपा नेता राठौड़ एस डी एम अश्वनी कुमार रावत के साथ कृषि उपज मंडी का निरीक्षण करने पहुंचे, जहाँ किसानों के लिए बनाए गए विश्राम भवन की व्यवस्था का अवलोकन किया और उसमें अधिक सुविधाओं के लिए मंडी अधिकारियों को आवश्यक निर्देश दिए, इसके उपरांत उन्होंने मंडी में बनाये जाने वाले एक नये निकासी द्वार के लिए जगह और व्यवस्थाओं का अवलोकन किया और शीघ्र ही नये द्वार के निर्माण के लिए एस डी एम महोदय से आग्रह किया जिस पर एस डी एम श्री रावत ने शीघ्र ही नये द्वार बनाने के लिए अधिकारियों को निर्देशित किया, तदुपरांत किसानों द्वारा खाद वितरण की व्यवस्था में कमियों की शिकायत प्रमुख रूप से की गई, जिस पर खाद वितरण से संबंधित कर्मचारियों को किसानों के समक्ष ही बुलाकर प्रत्येक किसान को सही एवं समय पर खाद उपलब्ध कराने के लिए सख्त रुप से हिदायत दी गई..

'बागेश्वर धाम' और प्रीतम लोधी का सीक्रेट समझौता टूटा लोधी बोले- बाबा पाखंडी, मुझसे कहा था मूर्ख मसल दूंगा तुझे

ग्वालियर। भाजपा से निष्काषित प्रीतम लोधी और बागेश्वर धाम सरकार के धीरेंद्र कृष्ण शास्त्री के बीच पिछले दिनों हुई जुबानी जंग में समझौता हुआ। फिर टूट भी गया। बताया जाता है कि सीएम शिवराज सिंह चौहान ने दोनों का पैचअप करवाया था, लेकिन प्रीतम लोधी फिर धीरेंद्र कृष्ण शास्त्री पर मुखर हो गए हैं। इस बार उनके शब्द और ज्यादा केड़ हैं। उनका आरोप है कि महाराज ने उनके संबंधी के खिलाफ हत्या की साजिश रचने का आरोप लगाया है।

सीएम शिवराज ने प्रीतम लोधी और बागेश्वर महाराज के बीच फोन पर कॉन्फ्रेंस कराकर समझौता करा दिया था कि अब इस मामले पर कोई कुछ नहीं बोलेगा, लेकिन प्रीतम लोधी फिर हमलावर हो गए हैं। ऐसा क्यों है यह जानने के लिए नीचे पड़ेसीएम शिवराज ने प्रीतम लोधी और बागेश्वर महाराज के बीच फोन पर कॉन्फ्रेंस कराकर समझौता करा दिया था कि अब इस मामले पर कोई कुछ नहीं बोलेगा, लेकिन प्रीतम लोधी फिर हमलावर हो गए हैं। ऐसा क्यों है यह जानने के लिए नीचे पेड़...

प्रीतम फिर हमलावर, लेकिन धीरेंद्र चुप-भाजपा से निकाले गए प्रीतम सिंह लोधी और बागेश्वर धाम के महाराज धीरेंद्र कृष्ण शास्त्री के बीच सीक्रेट समझौता सीएम शिवराज ने कराया था। जब दोनों के बीच मसल दूंगा, पतलून गीली हो जाएगी.. जैसी बयानबाजी हो रही थी। ऐसे में दोनों को शांत करने के लिए शिवराज को दखल देना पड़ा। सीएम ने उन्हें एक-दूसरे के प्रति मन साफ करने के लिए कहा। बकौल प्रीतम लोधी बागेश्वर धाम के महाराज ने भी उनसे माफी मांगी।

लोधी ने महाराज से कहा कि मैं तो पड़ा लिखा नहीं हूं। मुझसे गलती हुई, लेकिन आप तो ज्ञानी हैं, मरे को जिंदा कर देते हैं। लोगों की नौकरियां लगवा देते हैं। मेरे मुंह से कुछ गलत निकल गया, तो आपने ऐसी भाषा का इस्तेमाल क्यों किया? अब एक बार फिर बागेश्वर धाम के महाराज पर हमलावर हो गए हैं। उन्होंने महाराज पर अपने समधी की हत्या के केस में षड्यंत्र रचने का आरोप लगाया है। हालांकि महाराज ने अब तक इस पर प्रतिक्रिया नहीं दी है।

एम पी में ग्वालियर से ठंड की एंट्री, राहुल की यात्रा समेत इंदौर को उड़ाने की धमकी

मध्यप्रदेश।मध्यप्रदेश में दिनभर कौन-कौन सी बड़ी खबरें रहीं, जो आपके लिए जानना जरूरी हैं। इन्हीं

में से हम आपके लिए प्रदेशभर से चुनिंदा 5 ब?ी खबरें लेकर आए हैं।मध्यप्रदेश में ठंड की एंट्री हो गई है। प्रदेश भर में रात का पारा 5 डिग्री सेल्सियस तक लु?क गया। भोपाल, इंदौर, दमोह और रायसेन में रात का पारा सबसे ज्यादा 4 से 5 डिग्री तक नीचे आ गया। यहां दिन का पारा कई इलाकों में 3 डिग्री तक लुक गया। अचानक तेज हवाएं चलने से मौसम में हल्की ठंडक घुल गई है। अब भोपाल और इंदौर में भी अगले 24 घंटों में दिन में भी ठंड का एहसास होने लगेगा। बंसल ग्रुप के 30 ठिकानों पर का छापा

आयकर विभाग ने मध्यप्रदेश में बंसल ग्रुप के 30 से ज्यादा ठिकानों पर छापा मारा है। ग्रुप के ऑनर सुनील बंसल और अनिल बंसल के यहां शुक्रवार सुबह विभाग की टीम पहुंची। सुबह 6 बजे से शुरू हुई यह कार्रवाई भोपाल के साथ ही महू और मंडीदीप में चल रही है। बंसल कॉलेज के फर्स्ट फ्लोर को बंद कर दिया गया है।

राहुल को जान से मारने की धमकी-इंदौर में एक दुकान पर सनसनीखेज लेटर मिला है। इसमें कांग्रेस नेता राहुल गांधी की खालसा कॉलेज में होने वाली सभा पर हमले की धमकी दी गई है। इसी के साथ पूरे इंदौर को बम विस्फोट से दहला देने की धमकी भी दी है। लिफाफे पर लेटर भेजने वाले की जगह रतलाम के भाजपा विधायक चेतन कश्यप का नाम लिखा है। भोपाल के ईंटखे?ी में आज से इज्तिमा शुरू हो गया है, जो 21 नवंबर तक चलेगा। इसमें देशभर से जमातें आई हैं। मुस्लिम धर्मगुरु तकरीरें (प्रवचन) करेंगे। 4 दिन में 10 लाख लोगों के जुटने का अनुमान है। मंदसौर में नाजनीन बनी नैंसी मंदसौर में एक युवती ने धर्म परिवर्तन कर लिया। गुना जिले की नाजनीन बानो ने प्यार के खातिर मजहब बदला है। युवती ने दूसरे धर्म के युवक से प्यार किया। उसने सनातनी बनकर युवक से शादी भी कर ली। बता दें, जिले में 6 माह में यह पांचवां मामला है, जब किसी मुस्लिम ने सनातन धर्म अपनाया है।

छोटी-छोटी पुड़िया बनाकर कमाता था बड़ा मुनाफा, सात लाख की स्मैक हुई बरामद

ग्वालियर।ग्वालियर में स्मैक लेकर आए एक तस्कर को क्राइम ब्रांच व झांसी रोड थाना पुलिस ने मुखबिर की सूचना पर हीरा भूमिया मंदिर के पास से पकड़ा है। पकड़े गए तस्कर से सात लाख रुपए की स्मैक की खेप बरामद कर पूछताछ शुरू कर दी है। पुलिस अफसरों का मानना है कि पकड़े गए तस्कर से पूछताछ के बाद कुछ अन्य तस्करों की जानकारी हाथ आ सकती है। बरामद स्मैक की कीमत करीब सात लाख रुपए बताई गई है।एएसपी क्राइम राजेश डंडोतिया ने बताया कि सूचना मिली थी कि एक तस्कर स्मैक की खेप लेकर आने वाला है। सूचना पर थाना प्रभारी क्राइम दामोदर गुप्ता, झांसी रोड थाना प्रभारी संजीव नयन शर्मा को कार्रवाई कर तस्कर को पकड़ने के निर्देश दिए। जिस पर क्राइम ब्रांच व झांसी रोड थाना पुलिस ने दो टीमें बनाकर वैष्णोंदेवी मंदिर के पास रेल की पटरी किनारे सर्चिंग की तो एक युवक पुलिस टीम को देखकर भागने लगा। जिसका पीछा कर पुलिस ने पकड़ा और उसकी तलाशी ली तो उसके पास से 72 ग्राम स्मैक कीमत करीब 7 लाख 20 हजार रुपए की बरामद हुई। तस्कर ने बताया है कि वह स्मैक की छोटी-छोटी पुड़िया बनाकर ग्राहकों को बेचकर बड़ा मुनाफा कमाता है।

लोकल जानकारी जुटा रही है क्राइम ब्रांच-पूछताछ करने पर पकड़े गए तस्कर ने अपना नाम संजय पुत्र रामनिवास शर्मा निवासी इटोंदा सेवड़ा जिला दतिया हाल निवासी नाकाचंद्रबनी गली नंबर 4 में रहना बताया। अब क्राइम ब्रांच तस्कर से पता लगा रही है कि उसके साथ इस नशे के कारोबार में और कौन-कौन शामिल है, जिससे उनके खिलाफ भी कार्रवाई की जा सके, साथ ही पुलिस पता लगा रही है कि वह नशे की खेप कहां से लेकर आता है।

10 साल की बच्ची से दुष्कर्म:छात्रा बोली-मुन्ना अंकल ने मुंह में कपड़ा ठूंसकर गलत काम किया, मेरी गर्दन में काट लिया

ग्वालियर।मासूम से दुष्कर्म करने वाले की तलाश में पुलिस की दो टीम भिंड रवाना हुईमम्मी, मैं दोपहर में घर पर अकेली थी। तभी अपने मकान में रहने वाले मुन्ना कुशवाह अंकल कमरे में आए। वह मुझे खींचकर अपने कमरे में ले गए। दरवाजा बंद कर उन्होंने मेरे मुंह में कप?ा ठूंस दिया। इसके बाद मेरे साथ गलत काम करने लगे। उन्होंने मेरी गर्दन में दांत से काट लिया। इसके बाद अंकल को हाथ से धक्का देकर कमरे में भाग आई। पीछे से अंकल आए और बोले यह बात अपनी मम्मी को बताई तो जान से खत्म कर दूंगा। 10 साल की दुष्कर्म पी?त छात्रा ने पुलिस के सामने मां को इस तरह पूरी घटना बताई। घटना गोला का मंदिर गोवर्धन कॉलोनी की है। घटना के समय मां काम पर गई थी। शाम को लौटी तो बेटी के गले पर दांत के निशान देखकर घटना का खुलासा हुआ।गोला का मंदिर स्थित गोवर्धन कॉलोनी निवासी 10 वर्षीय रानी (बदला हुआ नाम) छठवीं की छात्रा है। अपनी मां के साथ किराए के घर में रहती है। छात्रा की मां एक स्कूल में प?ाने जाती हैं और पिता गांव में रहते हैं। एक दिन पहले छात्रा अकेली थी। इसी बीच पास ही रूप में किराए से रहने वाला मुन्ना कुशवाह छात्रा के कमरे में आया। पहले उसने चॉकलेट का झांसा देकर बालिका को अपने कमरे के पास बुलाया। इसके बाद खींचकर उसे कमरे में ले गया। यहां उसकी आवाज दबाने के लिए मुंह में कप?ा ठूंस दिया और उसके साथ गलत काम किया।छात्रा रोने लगी तो आरोपी घबरा गया। इसी बीच छात्रा उसे धक्का देकर अपने कमरे की तरफ आई। इसी बीच आरोपी पहुंचा और किसी को कुछ न बताने की धमकी देकर भाग गया। वारदात की शिकार पीड़िता अपने कमरे में पहुंची और शाम को मां के आने पर पूरी बात बता दी। मामले का पता चलते ही मां ने पहले आरोपी की तलाश की, लेकिन वह नहीं मिला। इसके बाद बेटी को लेकर मां गोला का मंदिर थाना पहुंची और शिकायत की। पुलिस ने तत्काल दुष्कर्म, पोक्सो एक्ट के तहत मामला दर्ज कर लिया है।

घटना के बाद से दहशत में है छात्रा-- घटना के बाद से दहशत में है छात्रा। जब शाम को उसकी मां घर पहुंची तो डर के चलते छात्रा ने मां को भी कुछ नहीं बताया था। जब मां ने उसके गर्दन पर दांतों के निशान देखे तो उससे पूछताछ की। इसके बाद छात्रा ने आपबीती सुनाई। जिसे सुनकर मां के पैरों तले जमीन खिसक गई। वह तत्काल आरोपी के रूम पर पहुंची, लेकिन वहां ताला डला हुआ था।

आरोपी की तलाश में भिण्ड रवाना हुई पुलिस-मामला दर्ज होने के बाद पुलिस ने आरोपी की तलाश की तो वह गायब मिला है। आरोपी की जानकारी जुटाई तो पता चला है कि वह भिण्ड का रहने वाला है। उसके रिश्तेदारी भिण्ड में रहते हैं। इसका पता चलते ही पुलिस की एक टीम भिण्ड रवाना की गई है।

पुलिस का कहना

सीएसपी ऋषिकेश मीणा का कहना है कि छात्रा की शिकायत पर मामला दर्ज कर आरोपी की तलाश में दबिश दी है। फिलहाल आरोपी फरार मिला है। आरोपी की तलाश में एक पुलिस पार्टी भिण्ड रवाना की गई है, जल्द ही आरोपी को पकड़ लिया जाएगा।

छात्रा बोली-मुन्ना अंकल ने मुंह में कप?ा ठूंसकर गलत काम किया, मेरी गर्दन में काट लिया

ग्वालियर।मासूम से दुष्कर्म करने वाले की तलाश में पुलिस की दो टीम भिंड रवाना हुईमम्मी, मैं दोपहर में घर पर अकेली थी। तभी अपने मकान में रहने वाले मुन्ना कुशवाह अंकल कमरे में आए। वह मुझे खींचकर अपने कमरे में ले गए। दरवाजा बंद कर उन्होंने मेरे मुंह में कप?ा ठूंस दिया। इसके बाद मेरे साथ गलत काम करने लगे। उन्होंने मेरी गर्दन में दांत से काट लिया। इसके बाद अंकल को हाथ से धक्का देकर कमरे में भाग आई। पीछे से अंकल आए और बोले यह बात अपनी मम्मी को बताई तो जान से खत्म कर दूंगा। 10 साल की दुष्कर्म पी?त छात्रा ने पुलिस के सामने मां को इस तरह पूरी घटना बताई। घटना गोला का मंदिर गोवर्धन कॉलोनी की है। घटना के समय मां काम पर गई थी। शाम को लौटी तो बेटी के गले पर दांत के निशान देखकर घटना का खुलासा हुआ।गोला का मंदिर स्थित गोवर्धन कॉलोनी निवासी 10 वर्षीय रानी (बदला हुआ नाम) छठवीं की छात्रा है। अपनी मां के साथ किराए के घर में रहती है। छात्रा की मां एक स्कूल में प?ाने जाती हैं और पिता गांव में रहते हैं। एक दिन पहले छात्रा अकेली थी। इसी बीच पास ही रूप में किराए से रहने वाला मुन्ना कुशवाह छात्रा के कमरे में आया। पहले उसने चॉकलेट का झांसा देकर बालिका को अपने कमरे के पास बुलाया। इसके बाद खींचकर उसे कमरे में ले गया। यहां उसकी आवाज दबाने के लिए मुंह में कप?ा ठूंस दिया और उसके साथ गलत काम किया।छात्रा रोने लगी तो आरोपी घबरा गया। इसी बीच छात्रा उसे धक्का देकर अपने कमरे की तरफ आई। इसी बीच आरोपी पहुंचा और किसी को कुछ न बताने की धमकी देकर भाग गया। वारदात की शिकार पीड़िता अपने कमरे में पहुंची और शाम को मां के आने पर पूरी बात बता दी। मामले का पता चलते ही मां ने पहले आरोपी की तलाश की, लेकिन वह नहीं मिला। इसके बाद बेटी को लेकर मां गोला का मंदिर थाना पहुंची और शिकायत की। पुलिस ने तत्काल दुष्कर्म, पोक्सो एक्ट के तहत मामला दर्ज कर लिया है।

घटना के बाद से दहशत में है छात्रा-- घटना के बाद से दहशत में है छात्रा। जब शाम को उसकी मां घर पहुंची तो डर के चलते छात्रा ने मां को भी कुछ नहीं बताया था। जब मां ने उसके गर्दन पर दांतों के निशान देखे तो उससे पूछताछ की। इसके बाद छात्रा ने आपबीती सुनाई। जिसे सुनकर मां के पैरों तले जमीन खिसक गई। वह तत्काल आरोपी के रूम पर पहुंची, लेकिन वहां ताला डला हुआ था।

आरोपी की तलाश में भिण्ड रवाना हुई पुलिस-मामला दर्ज होने के बाद पुलिस ने आरोपी की तलाश की तो वह गायब मिला है। आरोपी की जानकारी जुटाई तो पता चला है कि वह भिण्ड का रहने वाला है। उसके रिश्तेदारी भिण्ड में रहते हैं। इसका पता चलते ही पुलिस की एक टीम भिण्ड रवाना की गई है।

पुलिस का कहना

सीएसपी ऋषिकेश मीणा का कहना है कि छात्रा की शिकायत पर मामला दर्ज कर आरोपी की तलाश में दबिश दी है। फिलहाल आरोपी फरार मिला है। आरोपी की तलाश में एक पुलिस पार्टी भिण्ड रवाना की गई है, जल्द ही आरोपी को पकड़ लिया जाएगा।

नाबालिक लड़की के साथ छेड़छाड़ एवं मारपीट करने वाले तीन आरोपी को भेजा गया जेल

संवाददाता हेमचंद नागेश

गरियाबंद मामला गरियाबंद जिले के थाना अमलीपदर में प्राथिया आकर लिखित आवेदन प्रस्तुत किया उक्त लिखित आवेदन में बताया कि प्रार्थिया की नाबालिग पुत्री मोबाइल दुकान में मोबाइल बनवाने के लिए दिया थी। मोबाइल बनवाने के बाद उनकी पुत्री को रात्रि मोबाइल को लेकर घर के पीछे हिस्से गली में एक लड़के को मोबाइल दे रही थी, उसी दौरान गांव के तीनो लोग एक साथ होकर मेरी बेटी के साथ हाथ बांह पकड़कर छेड़छाड़ कर मारपीट किया। और वीडियो बनाकर वायरल करने की धमकी दे रहा था। नाबालिग लड़की को रात्रि में दूसरे लड़के के घर में रहने के लिए मजबूर किया जो सुबह आकर घर में आप बीती बताई जिस पर घर में सलाह मशवरा होकर तीनों आरोपियों के विरुद्ध रिपोर्ट दर्ज कराएं जो प्रथम दृष्टया अपराध धारा सदर धारा 323, 506, 342, 354, 34 भादवि. व 12 पाक्सो एक्ट का पाए जाने से उक्त आरोपियों के विरुद्ध अपराध पंजीबद्ध कर जांच कार्यवाही में लिया गया।उक्त कार्यवाही में थाना प्रभारी उप निरीक्षक चंदन सिंह मरकाम, सहायक उपनिरीक्षक हुमन सिंह ध्रुव, प्रधान आरक्षक कुबेर बंजारे, प्रधान आरक्षक रामचंद्र बघेल, आरक्षक रूपेश जयसवाल, रोहित साहू की भूमिका सराहनीय रहा।

जल संसाधन अनुविभाग-देवभोग का कारनामा

संवाददाता हेमचंद नागेश

जिला गरियाबंद के अंतर्गत जल संसाधन अनुविभाग देवभोग के अंतर्गत कराए गए कार्यों वर्ष 2015-16 से आज तब जो निर्माण कार्य है अनेक कार्य आज को स्थिति में खंडहर हो चुके हैं वहीं भाजपा के वरिष्ठ नेता भागीरथी मांझी प्रदेश उपाध्यक्ष (अज्जज्जाज्मोर्चा छत्तीसगढ़)जीने प्रेस वार्ता में कहा जिनकी लागत करोडो की है इसका श्रेय इस अनुविभाग के अधिकारी को जाता है।जो15- 20 सालों एक ही जगह गिद्ध की तरह दृष्टि डाला बैठा हुआ है. - इस क्षेत्र के लोगों को बेवकुफ बनाकर शासन की करो?ी की राशि डकार डाले है। क्षेत्र के सीधे साधे भोले भाले जनता को अपनी चापलूसी के जाल में फंसाकर मनमानी कर रहे हैइस तरह से काम बरबाहली केनाल अधिग्रहण का 30 से 40 भोले भाले किसान आज तक उनके जाल के फंसे हुए हैं जिनका मुवाअजा भी उन्हें प्राप्त नहीं हुआ है जैसे कि देखा जाए तो आज हमारे आदिवासी क्षेत्र डुमाघाट केनाल,काण्डसर स्टापडेम,अमलीपदर तट बंध, गोलामाल, पुलिया, बुरजाबहाल,पीपलखुटां,सरनाबहाल,धनोरा , जैसे आदिवासी क्षेत्रों में क्षेत्र की बेहतरीन सुविधाओं के लिए शासन द्वारा कार्य अनुमोदन किया गया था जिसको अधिकारियों की मिलीभगत से ठेकेदारों की मनमानी पर ज्यादातर इन आदिवासी बहुल क्षेत्रों में भ्रष्टाचार करके कार्य किया गया है इस कार्यों में गुणवत्ता ही निर्माण हुआ है तथा यहां लगे मटेरियल केवल दिखाने मात्र के लिए थुक पालीस कर काम किया गया है इस पर बहुत बड़ा भ्रष्टाचार किया गया है ऐसे भ्रष्ट अधिकारी के खिलाफ ठेकेदारों के खिलाफ जो कार्य में लापरवाही करते हैं तत्काल उनको कड़ी नजर में रख कर के बड़ी कार्यवाही किया जाए एवं इन क्षेत्रों में हुए कार्यों पर जांच किया जाए एवं गुणवत्ता ही निर्माण एवं शासन के करोड़ों की राशि को चाटने वाले दीमक की तरह भ्रष्ट अधिकारियों पर उचित कार्रवाई हो ।

स्वामी, प्रकाशन, मुद्रक एवं संपादक भरत सिंह चौहान द्वारा वॉइस ऑफ मध्यांचल मीडिया नेटवर्क प्राइवेट लिमिटेड 101 वैष्णोपुरम एबी रोड बिरलानगर ग्वालियर म.प्र. 474004 से मुद्रीत करा कर दीपू इलेक्ट्रॉनिक हनुमान मंदिर के पास भिण्ड रोड गोले का मंदिर जिला ग्वालियर मध्यप्रदेश 474005 से प्रकाशित। भरत सिंह चौहान पी. आर. बी. एक्ट के तहत समाचार चयन के लिए जिम्मेदार। E-mail : Pushpanjalitoday@gmail.com 0751-4050784, Mob.:8269307478